।। जय श्री राम ।।

दिव्य प्रवचन

संकलन
राकेश अग्रवाल
आस्ट्रेलिया

स्वामी पथिक जी महाराज

— सावधान —

ऐसा संयोग बार–बार नहीं आयेगा।
इसे जो खोयेगा वह अन्त में पछतायेगा।।

देखते–देखते जायेगी जवानी सबकी।
बुढ़ापा आयेगा वह सभी को सतायेगा।।

बुराई छोड़ के हरदम भलाई करना है।
यहाँ जैसा करेगा वैसा वहाँ पायेगा।।

उन भरे हाथों का क्या मूल्य है इस दुनिया में।
या तो छिन जायेगा या छोड़ के ही जायेगा।।

जो कि तुम लेते हो वह दूसरों को देते रहो।
लेके जो देगा नहीं बोझ ही बढ़ायेगा।।

सारा धन लेगा, कोई राजी या बेराजी से।
लोभ की बेड़ी से, कोई नहीं छुड़ायेगा।।

छूट जायेंगे सभी, अपने सगे सम्बन्धी।
मोह रह जायेगा, वह बाद में रुलायेगा।।

किसी भोगी को कहीं, शान्ति नहीं मिल सकती।
जो कि शीतल है, वही तपन को मिटायेगा।।

त्याग पायेगा जो सुख कामना, आशा, ममता।
पथिक आनन्द से नित प्रेम गीत गायेगा।।

*****

श्री सद्‌गुरुवै नमः

अज्ञान तिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जन शलाकया।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरुवे नमः।।

अज्ञान रूपी तिमिर (काले) को अंधी आंखों में ज्ञान रूपी अञ्जन लगाकर जो अंधत्व को दूर करते हैं ऐसे गुरुदेव को नमस्कार है।

प्रभु! ज्ञान प्राप्त करने की इच्छा से आपकी शरण आयी हूँ। भगवन! परमार्थ को प्रकाशित करने वाली अपनी वाणी द्वारा मेरे हृदय की ग्रंथि काट डालिये और अपने स्वरूप को प्रकाशित कीजिये।

आनंदमानंदकरं प्रसन्नं ज्ञानस्वरूपं निजबोध रूपम्।
योगीन्द्रमीड्यं भवरोगवैद्यं श्रीमद्‌गुरुं नित्यमहं भजामि।।

विषय सूची

क्र.सं.	विषय	पृ.सं.
1.	प्रहलाद चरित्र	3–22
2.	ईश्वर अंश जीव अविनाशी	23–28
3.	हरे मुरारे जन्म जन्मोत्सव, मनवारा	29–41
4.	जब तक तू चाहे देख ले	42–53
5.	परमात्मा और हमारी साधना	54–55
6.	व्याख्यान बाजपेयी जी के यहाँ	56–61
7.	मैं क्या मागूँ	62–68
8.	तुम्हीं में यह जीवन जिये जा रहा हूँ	69–82
9.	ज्ञान में जब देखा	83–102
10.	मुश्किलें होती हैं	103–121
11.	जहाँ ज्ञान में देख न पाते	122–128

श्री संतसद्गुरु भगवान के चरण कमलों में नतमस्तक कोटिशः प्रणाम

प्रहलाद चरित्र

प्रसीद विश्वेश्वरि पाहि विश्वं
त्वमीश्वरी देवि चराचरस्य।
सर्व रूपमयी देवी सर्व देवीमयं जगत्।
अतो हं विश्वरूपां तां नमामि परमेश्वरीम्।।

अभी-अभी हम और आप प्रहलाद चरित्र सुन रहे थे। कान पशुओं के भी हुआ करते हैं। आवाज और अपनी सांकेतिक भाषा पशु भी समझ लेते हैं, लेकिन मानव तो उसे कहते हैं जो बुद्धियुक्त हो करके सुनता है, कानयुक्त हो करके नहीं। कर्णयुक्त हो करके तो पशु भी सुनते हैं। मनयुक्त हो करके भोगी भी सुनते हैं। बुद्धियुक्त हो करके मानव सुनता और विवेकयुक्त हो करके साधक सुनता है। आप लोगों में जो साधक हैं उनसे आशा की जाती है कि वे विवेकयुक्त हो करके कथा श्रवण करेंगे, कभी नहीं अभी-अभी मोह भ्रम की निवृत्ति हो जायेगी।

'होय विवेक मोह भ्रम भागा'। दो लाभ हैं- धन नहीं, मान नहीं, भोग नहीं, ऐश्वर्य नहीं मोह भ्रम की निवृत्ति हो जाये- ये विवेक का लाभ है ओर विवेक की प्राप्ति।

'बिनु सत्संग विवेक न होई। राम कृपा बिनु सुलभ न सोई।।' कृपा तो हो ही रही है। ये संतों के वाक्य आप सुन रहे हैं, भगवत् वाक्य सुन रहे हैं। कृपा और श्रवण दोनों हो रहे हैं- अब आवश्यकता है उस विवेक के प्यास की। अगर आपका मन केवल सुनने में अटक गया और सुनने में मन उनका अटक जाता है जिनके मन में यह भर गया है- कथा सुनने का बड़ा फल है। और बड़ा फल तो सीताफल, कटहल होता है और तो कोई बड़ा फल हमने तो और नहीं सुना कि और कोई बड़ा फल होता है। बड़े फल के लालचवश जो सुनते हैं वे भी बड़े अच्छे हैं। क्यों? फल का लालच न हो तो न आप भगवान मानेंगे, न देवी मानेंगे, न देवता मानेंगे। लालच बड़ा शुभ है। वही लालच जिसमें लोभ-पाश कौन है ऐसा जिसने अपने को न बांधा हो- 'लोभ पाश केहि गर न बंधावा'- अगर ऐसा कोई है जो लोभ पाश में जो नहीं बंधा तो- 'सो प्रभु तुम्ह समान'- वह तो तुम्हारे समान ही है। ये लोभ पाश की, लोभ रूपी बंधन की, लोभ रूपी फांसी की

निवृत्ति लोभ से ही होती है- बड़ी विचित्र बात। यानि परमात्मा की सृष्टि में ऐसा कुछ है ही नहीं कि जो न होना चाहिये।

हम लोग कभी घबराते हैं- काम बड़ा बुरा, लोभ बड़ा खराब, मोह बड़ा खराब, अगर दिशा बदल जाये तो अगर मोह न होता तो आप भगवान की भक्ति की ओर चल ही न सकते। ये लोभ न होता तो दैवी संपदा के आप धनी हो ही न सकते, मोह न होता तो यहां आप आ ही न सकते। संत महात्मा को आप मान ही न सकते। वही मोह जब परिवार से, पुत्र, पति, पत्नी आदि से होता है, वही आसक्ति, वही मोह जब किसी संत से हो जाता है तो आप संत के पास आत्मीयता के भाव से अपना मान करके दौड़ते हैं। अपना मान करके आप कुछ देते हैं, वरना आपसे कोई दिला सकता है मुफ्त? कोई भी नहीं दिला सकता। भगवान भी आयेंगे तो दरवाजे से लौटा दोगे लेकिन ममता जहां होगी वहां अपने आप देने को तैयार हो जाओगे। तो भागवत में एक श्लोक आता है। बताया गया है तुम ममता का त्याग करो अगर बंधन से मुक्त होना चाहते हो लेकिन तुरंत सावधान होके कहा गया है- कि तुम नहीं त्याग कर सकते। इसलिये एक काम करो- अभी-अभी तुम विनाशी देहों में जो ये ममता कर रहे हो, अपना मान करके किसी को सुखदाता मान करके उनको अपना मान रहे हो। अब तुम एक काम करो कि वही ममता किसी भक्त में जोड़ दो।

भगवान के जो जन हैं उनको तुम अपना मानने लग जाओ तो बस फिर इसके आगे तुम्हें कुछ न करना पड़ेगा, वे सब कुछ कर लेंगें यह है संत की महिमा, भक्त की महिमा कि भक्त को अपना मानने के बाद बड़ी छोटी-छोटी बातें हैं आपके व्यवहारिक जीवन से संबंधित।

जैसे आपने माता को, पिता को पहले अपना माना फिर पत्नी और पति को अपना माना, फिर पुत्र को अपना माना। आपने जिसे अपना माना उसके लिये किसी गीता और रामायण में उपदेश नहीं पढ़ना पड़ा। जिसने अपना माना उसके प्रति आप जरा देखिये- आशा हुई तो उसी से, संबंध जुड़ा तो उसी से, प्रीति हुई तो उसी से। लेकिन एक फल परिणाम आरंभ में होता है ओर एक अंत में होता है। पहले अपना माना जाता है लेने के लिये। एक बालक अपना इसलिये मानता है कि माँ हमें कुछ देगी, पिता हमें कुछ देंगे, बहिन-भाई हमें कुछ देंगे। पति-पत्नी मानते हैं कि इनसे हमें सुख मिलेगा। ये ममता जितनी अच्छी पहले तो लेने के लिये हुई लेकिन आगे जैसे-जैसे तुम्हारे जीवन में दैवी

संपदा की वृद्धि होगी तब वही ममता जहां लेने के लिये थी, वही देने के लिये हो जायेगी।

आप जैसे साधकों की उन्नति का, उन्नति शब्द कह रहे हैं प्रगति नहीं। प्रगति होती है भोगी की और उन्नति होती है साधक की। उन्नति का संबंध सद्‌गुणों के विकास और दोषों के नाश से है। प्रगति का संबंध धन से, मान से, भोग से, संसार के सामान से। आप धोखें से कह दिया करते हो, उन्होंने बड़ी उन्नति की। कुछ न था देखो कोठी हो गयी, बंगला हो गया। यह उन्नति नहीं, यह तो प्रगति है। और ये प्रगति प्रयत्न से नहीं होती, ये तो भाग्य से होती है। पूर्व जन्म के पुण्य के अनुसार होती है। ये तो आप लोगों में जाने कितने पुण्यवान बैठे हुये हैं। जो हजारों लाखों लोगों को जो नहीं मिला, तुम्हें मिला है। वह तुम्हारे पुण्य को मिला है। पुण्य कैसे बने? यह जब आप पूछेंगे तब बताया जाएगा।

अब भी तुमको जो कुछ मिलेगा, मांगने से न मिलेगा। भिखारी ही बने रहोगे चाहे भगवान से मांगोगे तो, चाहे संत से मांगोगे, चाहे देवता से मांगोगे तो। संत की बात जब सुनोगे तो संत तो कहते हैं- मांगना भिखारी का काम है और भिखारी के लिये खुले द्वार भी बंद हो जाते हैं। प्रहलाद से कहा गया- मांगो! प्रहलाद ने कहा- नहीं। कहा मांगो- प्रहलाद हैरान। ध्रुव ने तो मांग लिया ध्रुव-पद लेकिन प्रहलाद बहुत आगे हैं। प्रहलाद शब्द का अर्थ ही होता है आह्लाद यानि बड़ा सरल अर्थ है हिन्दी में- स्वाधीन प्रसन्नता। प्रहलाद के- स्वाधीन प्रसन्नता शब्द याद रखना।

आज जितने लोग यहां उपस्थित हो, आप जरा सोच करके देखो- आपकी प्रसन्नता कौन यहां व्यक्ति ऐसा है जिसकी प्रसन्नता अन्य पर निर्भर न हो। पराधीन प्रसन्नता- जब तक हम अपनी प्रसन्नता किसी वस्तु पर, व्यक्ति पर अवस्था पर, परिस्थिति पर, अन्य पर निर्भर करते हैं, इसको कहते हैं 'पराधीन प्रसन्नता'। दो ही शब्द फैसला कर देते हैं। कभी जरूरत पड़े तो याद रखना- स्वतंत्रता है तुम्हें स्वतंत्र हो करके अपने जीवन का निर्माण करने की। ये स्वाधीन प्रसन्नता बहुत गंभीरतापूर्वक ध्यान देने योग्य है। और कभी-कभी आपको स्वाधीन प्रसन्नता सुलभ होती है लेकिन आप बुद्धियुक्त न होने के कारण उसको देख नहीं पाते। आज से देखना शुरू करो तो कर सकते हो- स्वाधीन प्रसन्नता, पराधीन प्रसन्नता। प्रसन्नता प्रहलाद ही के जीवन में

एक ऐसी झांकी मिलती है स्वाधीन प्रसन्नता की।

भगवान प्रहलाद से कहते हैं- मांगो! प्रहलाद को आश्चर्य होता है- क्या मांगें। आप सामने हो, पूर्ण सामने है, आनन्द सामने है। हिरण्यकश्यप के लिये भयंकर रूप था लेकिन प्रहलाद के लिये भयंकर रूप न था वह तो आनन्द स्वरूप था। आनन्द स्वरूप हिरण्यकश्यप का पाप दिखाई दे रहा था उस भयंकर रूप में, हिरण्यकश्यप का पाप, और प्रहलाद का परमपुण्य दिखाई दे रहा है परमानन्द रूप में। दोनों के दर्शन की दृष्टि अलग-अलग थी। एक अपने पाप का दर्शन कर रहा है और एक अपने परमपुण्य का दर्शन कर रहा है। परमपुण्य दर्शन करने वाला किंचित भी, रंच-मात्र भी भयभीत नहीं है **और पाप का दर्शन करने वाला तो यहां तक कि जिसको जैसे कि हिरण्यकश्यप का पाप प्रगट था सामने लेकिन उस पाप के सामने लक्ष्मी जी भी सामने न जा पायीं। बड़ा रहस्य है।**

इसके बाद आध्यात्मिक अर्थ इतने गहरे हैं कि इसके लिये तो बुद्धियोग चाहिये। आंख का योग नहीं, कान का नहीं, बुद्धियोग।

भगवान अर्जुन को समझाते हैं- तत्व की बात कह देते हैं, 2-3 शब्दों में फैसला हो जाना चाहिये था लेकिन नहीं हुआ। भगवान ने तुरंत ताड़ लिया कि हम किससे कह रहे हैं- अर्जुन से। अर्जुन को तो हम समझते थे कि ये शिष्य है लेकिन अभी ये शिष्य नहीं है। अभी ये मन का शिष्य है, अभी जो मन कह रहा है वह कर रहा है। भगवान ने सावधान किया और जो मन का शिष्य होगा, मन का शिष्य वही होता है जिसकी बुद्धि मन के पीछे चलती है। जरा ये बात याद रखना- आप लोग इतने लोग बैठे हो, आपकी बुद्धि मन के पीछे चलती है कि मन को छोड़ करके बुद्धि कभी काम करती है। बहुत मुश्किल है ये निरीक्षण करना।

साधक की सिद्धि का द्वार तो तब खुलेगा, हजारों को कल मैंने इशारा किया था- तुम किसी अयोध्या जी में चले जाओ, वृन्दावन में चले जाओ, ऋषिकेश में चले जाओ, जगद्गुरु के पास चले जाओ, तुम शिष्य बन जाओ, नहीं हो सकोगे। धोखा है। हमें गुरु मानने वाले यहां अनेकों बैठे हैं लेकिन उनको हम बार-बार कहते हैं- अभी तुम शिष्य नहीं हो पाये हो, अभी तो तुम्हारा गुरु मन है। जब तक मन गुरु होगा तब तक शिष्य हो ही नहीं सकता है।

भगवान ने सावधान किया है अर्जुन को, अर्जुन को सावधान। अर्जुन ने यही प्रश्न किया, एक कथा सुनाई भगवान ने बड़ी सुन्दर और जिसमें तमाम प्रश्नों का समाधान तो अर्जुन ने पूछा कि ऐसा ज्ञानी गुरू कौन था और ऐसा शिष्य कौन था जिसने इतने प्रश्न किये? तब सरल भाव से भगवान ने कहा- 'अहं गुरो महाबाहो' मैं ही वह गुरू हूँ'। लेकिन इतने में भी अर्जुन नहीं समझ पाये, आप भी नहीं समझ पाते 'मैं ही वह गुरू हूँ'। तो आपको लगता है कृष्ण जो वंशी विभूषित खड़े थे वो गुरू। ये नहीं जो 'कृष्ण' तत्वतः कृष्ण को जान लेगा। भगवान ने गीता में सावधान किया है, तत्वतः जो मुझे जानता है वही जानता है जो तत्वतः 'य पश्यति स पश्यति'। जो सबमें मुझे देखता है और इसका इशारा बड़ी जल्दी में मैं किये देता हूँ, विद्वान लोग केवल पकड़ पायेंगे।

भगवान के रूप को अगर तुम्हें पता चलता है, भगवान के दर्शन करना है तो जाओ तुम मंदिरों में, तीर्थों में खूब जाओ। प्रयाग में भी नहा आओ। याद रखना, तुम्हारे मंदिरों में जाने से दुख न मिटेंगे, तीर्थों में जाने से तुम्हारे दुख न मिटेंगे। मिटेंगे शब्द कह रहा हूँ, दबेंगे नहीं कह रहा हूँ। एक-एक शब्द का अपना-अपना अलग-अलग अर्थ है। दबना और बात है, मिटना और बात है। मिटा हुआ फिर प्रगट नहीं होता और दबा हुआ बार-बार। भूख का दुख तो आप लोग भी दबा लेते हो जैसे ऐसा लगा बस हो गये तृप्त। पेट में हाथ फेरे, वाह! कैसे बढ़िया लड्डू, कचौड़ी, पेड़ा खाये तृप्त हो गये लेकिन तुम झांक करके देखो तुम्हारी भूख मिटी कि दबी? (दबी है) जीवन बीत गया यही करते-करते, वियोग का दुख संयोग से दबा लिया और तुम बड़े खुश- पत्नी मिल गई, पति मिल गये, पुत्र मिल गया। वह आंखें ही बंद हैं जहां से दर्शन होता है।

खूब याद रखना, आज से ये विश्वास मत करना कि मैं दर्शन कर रहा हूँ। इन आंखों से तो महात्मा के दर्शन हो ही नहीं सकते फिर परमात्मा के? कल मैंने इशारा कर दिया था 'पश्यन्ति ज्ञान चक्षुषा'। जब तक ज्ञान दृष्टि नहीं खुलेगी, महात्मा के दर्शन नहीं हो सकते। महात्मा किसी आकृति को नहीं कहते। परमात्मा किसी शक्ल को नहीं कहते। परमात्मा शक्लमय है लेकिन शकल ही नहीं शक्लमय है। सोना अंगूठीमय है लेकिन अंगूठी के न रहने पर भी सोना तो रहेगा। क्या ख्याल है? हजारों सैकड़ों जेवर बनाओ, सैकड़ों पात्र देखो सोने के। पात्र टूट जायेंगे लेकिन सोना टूटेगा? जो पात्रों को और सोने को एक साथ देखता है, वही तत्वदर्शी है।

कल मैंने इशारा किया था लेकिन बुद्धियोगी ही पकड़ पायेंगे। जो विनाशी को और अविनाशी को एक साथ देखता है वही तत्वदर्शी है। विनाशी से नफरत नहीं करना, देह से घृणा नहीं करना, संसार से भागना नहीं है। संसार को और संसार के स्वामी को एक दृष्टि से जो देखता है उसका नाम ज्ञान दृष्टि है। जो सोने को और सोने की अंगूठी को एक दृष्टि से देखता है, आंखों से तो अंगूठी दीखेगी लेकिन सोना, सोना तो कोई बुद्धियुक्त हो करके ही कोई देख पायेगा।

मोटर एक बालक को भी दी जाती है, 5 रूपये की जापानी मोटर, बड़ा खुश हो जाता है मोटर मिल गई। घड़ी बांधे घूमते हैं बालक, पिताजी ने घड़ी दी। आंखों से घड़ी दीखती है लेकिन बुद्धि दृष्टि अभी तो है नहीं। पहले 5 रूपये की मोटर से तुमको फुसलाया जाता था, दिन भर लिये घूमते थे बड़े खुश। एक बड़े से बड़े रईस के यहां 60 हजार की मोटर है पर उसको नहीं देखता और 10 रूपये की जापानी मोटर को छाती से लगाये घूमता है, मुझे मोटर मिली लेकिन उसी को विवाह में कोई 10 रूपये की, 5 रूपये की जापानी मोटर दे तो मानेगा? आपको जब कोई फुसलाये, 5 रूपये की मोटर देकर क्यों? पहले आंख से मोटर देखते थे और अब बुद्धि लगाते हो हमें बेवकूफ बनाते हों हम बच्चे हैं जो हमें खिलौने, बालक हैं जो हमें फुसलाने आये हो। इंद्रिय दृष्टि और बुद्धि दृष्टि। तीसरी दृष्टि भी जल्दी में कह दूँ कहीं फिर मौका न मिले। इंद्रिय दृष्टि, बुद्धि दृष्टि और फिर इसके बाद प्रज्ञा दृष्टि। प्रज्ञा दृष्टि जब खुलती है तब तक सत्य के दर्शन का द्वार खुलता है यानि बुद्धि से भी तुम परमात्मा को नहीं जान सकते। बुद्धि से तुम बुद्धि को सामने जो संसार है उसे पहचान सकते हो। बड़ी सुन्दर बात। बुद्धि इसलिये मिली है परमात्मा को देखने के लिये बुद्धि नहीं मिली। बुद्धि तो जहां बंधे हो मन से, उस मन से बंधे हुये जीवन को तुम बुद्धि दृष्टि से देखो तो तुम्हें 'ब्रह्म सत्यं जगत मिथ्या' बुद्धि से इतना ही पता चलेगा, इसके आगे पता न चलेगा। ब्रह्म सत्य है जो कि कभी दिखाई नहीं पड़ता लेकिन जो किसी को दिखाई पड़ता है वह जगत मिथ्या है। बुद्धि केवल जगत को देखने के लिये है, परमात्मा को देखने के लिये नहीं और परमात्मा को देखने की कोशिश भी मत करना। तुम एक बार जगत को पहचान लेना बस तुम्हारा बेड़ा पार हो जायेगा लेकिन परमात्मा को देखने के लिये तुम हजार-हजार मंदिरों में जाओ, परमात्मा न मिलेगा, तीर्थों में जाओ परमात्मा न मिलेगा, हमारे पास आओ परमात्मा न मिलेगा।

भगवान राम और कृष्ण के दर्शन करने वालों को परमात्मा तब तक नहीं मिला जब तक भगवान के इन वाक्यों को बुद्धि दृष्टि से देखते हुये संसार के बंधनों से मुक्त नहीं हो पाये तब तक भगवान राम और भगवान कृष्ण के दर्शन करने वाले भी आकार में ही फंसे रह गये निकट से निकट रहने वाले। बड़ी विचित्र बात है। बात हमारी बढ़ती चली जा रही है लेकिन हम तो आपसे यही कहना चाहते हैं मुख्य-मुख्य बातें हैं ये आपके जीवन से संबंधित और ये सभी बातें आवश्यक हैं अगर आपको याद रह जाये।

हमने पहले तो गुरू शिष्य की बात कही। इन आंखों से न महात्मा का दर्शन होगा न गुरू का दर्शन होगा, न परमात्मा का दर्शन होगा। इन आंखों से जो दिखेगा वह मायामय दिखेगा चाहे वह गुरू हो चाहे भगवान हो चाहे कोई हो, माया से लिपटा हुआ ही। माया से लिपटा हुआ और मायिक रूप तो बदल जायेगा लेकिन तत्व न बदलेगा। भगवान कृष्ण ने सावधान किया जो तत्वतः मुझे जानता है वही सही जानता है तत्वतः। तो एक बात से बात यहां बढ़ी थी। मैंने कहना चाहा था कि तुम परमात्मा को आज से अगर समझना चाहो तो कैसे समझो? भागो नहीं, छोड़ो नहीं, पकड़ो नहीं कुछ, न भागो और न पकड़ो और न छोड़ने की कोशिश करो और न पकड़ने की कोशिश करो। परमात्मा को पकड़ने की कोशिश तुम्हें बिल्कुल नहीं करनी है। आनन्द को पकड़ने की कोशिश तुम्हें तुम्हें बिल्कुल नहीं करनी है। आनन्द को भी पकड़ना मत। आनन्द पकड़ने की चीज नहीं है और संसार को छोड़ना मत, क्यों? बेकार परिश्रम करोगे, व्यर्थ तुम्हारा श्रम जायगा अगर संसार को छोड़ा। अहंकार तृप्त होगा मैंने संसार छोड़ दिया और इस संसार को जब पहचान लोगे तब छोड़ने को कुछ है ही नहीं, छोड़ोगे क्या? हो भी तो कुछ। जब मिथ्या है तो मिथ्या को तुम क्या छोड़ोगे? आज हम हजारों सन्यासी साधु अकड़ते हैं कि हमने घर छोड़ा, परिवार छोड़ा।

एक महात्मा बात कर रहे थे किसी प्रोफेसर से, पढ़ा-लिखा प्रोफेसर बड़ा दार्शनिक था तो प्रोफेसर ने कहा- अरे आजकल के तमाम साधु महात्मा जरा सी घर में पैसे की परेशानी हुई छोड़-छाड़ करके तब निराश होते हैं जब कुछ भोगने का सामान नहीं रहता, धन नहीं रहता, भोग नहीं रहता, जब प्रतिकूलता आती है तब साधु बन जाते हैं। महात्मा ने कहा- देखो तुम हर एक को ऐसा नहीं कह सकते। मैंने लाखों की संपत्ति पर लात मारी है तब मैं साधु सन्यासी

हुआ हूँ। वह मुस्कुराये और कहा- अच्छा लाखों की संपत्ति पर तुमने लात तो मारी है लेकिन लगी नहीं।

कहा- इसका क्या मतलब? प्रोफेसर ने कहा- लगी नहीं, लात तुमने मारी है। तुम्हारी समझ में लगता है मैंने लात मारी लेकिन वह लगी नहीं। लाखों की संपत्ति के होने का अहंकार था, अब छोड़ने का अहंकार है। अहंकार तो वैसे ही पकड़े हुये हैं, लात लगी नहीं।

तो हमें भी लगता है- हमने घर छोड़ा, धन छोड़ा, जमीन छोड़ी, तुम क्या छोड़ोगे? तुम्हारा है भी कुछ जो तुम छोड़ोगे? तुम पकड़ ही नहीं सके तो छोड़ोगे कैसे? तुम्हारे खयाल में भरा है मेरी-मेरी।

अभी आचार्य प्रवर ये अहंकार की व्याख्या कर रहे थे। अहंकार है क्या? अहंकार की व्याख्या सुन करके परेशान हो जाते हो फिर हमसे कभी आ करके पूछोगे कि महाराज अहंकार का कैसे त्याग करें? तो हम तुमसे कहेंगे- एक बार अहंकार की जरा हमें व्याख्या बता दो, पकड़ करके दिखा दो तो फिर हम ही कह देंगे, हम ही छेड़ लेंगे तुम एक बार पकड़ करके तो दिखाओ। जब अहंकार को तुम खोजने चलोगे तो मिलेगा हीनहीं। अहंकार है क्या? कई परिभाषायें हैं, उनमें कुछ परिभाषायें आपने अभी सुनी थीं। बड़ी सरल से सरल परिभाषा हमें गुरूज्ञान में मालूम हुई- अहंकार की सरल परिभाषा है आकार ओर आकार कहां से बनता है जहां मेरा कह देते हो। वहीं आकार बन गया। ये बड़ी सूक्ष्म परिभाषा है- मेरा। इससे बढ़ करके अभी तक हमें कोई और परिभाषा नहीं मिली अहंकार की।

तो अच्छा इतने लोग बैठे हो तुम मेरा तुम्हें मेरा कुछ न मालूम हो जरा परिचय दो। तुम कौन हो? इतने लोग बैठे हो, कोई बता दो। मेरा दिखाई पड़े कुछ तुम्हें, हम तुमसे पूछते हैं बताओ तुम कौन हो? बताओ कुछ गरीब, अमीर, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, पति-पत्नी, पुत्र-माता-पिता, पापी-पुण्यवान, धर्मी-अधर्मी- मेरा कुछ न मालूम हो बताओ तुम कौन हो? बताओ भाई जल्दी बताओ, शुक्ला जी तुम तो कवि हो? मेरा हटा दो फिर बताओ तुम कौन हो? अरे कोई तो बता दो। इतने लोग हो, हम तो अकेले हैं। हैं जी- (आत्मा) हूँ।

मेरा हटाने के बाद ये परिचय तो न हुआ। आप, कोई पूछता है- आप कौन हो? तो पहले तो कह देते हो 'हम हैं' और जब वह नहीं सुन समझ पाता तुम

कौन हो? तुरन्त बताते हो फिर परिचय बताते हो, हम पिता हैं, पुत्र हैं, फिर या हमारा ये नाम है, हमारा ये गाँव है।

पहले हूँ करते हो 'हम हैं' शायद आवाज से पहचान जाये, हमारे आकार को लेकिन जब तुम्हारे आकार को 'हम हैं' कहने से नहीं पहचान पाता तब तुम अपना आकार बताते हो। आकार बिना आप अपना परिचय दे ही नहीं सकते हो? नहीं दे सकते।

अहं का आकार क्या हुआ, अहं का आकार कहां से बना? मेरा, जहां मेरा कहा आकार बन गये। मेरा हटा (आकार खत्म) हां आकार खतम नहीं होता महाराज**!** मेरा मेरी स्त्री तो नहीं रह गयी लेकिन अभी तक, मेरा पुत्र तो नहीं रह गया लेकिन अभी तक पिता बना है। आकार कभी खत्म नहीं होता, सूक्ष्म रूप से बना रहता है। हैं, बना रहता है कि नहीं?

इसका मतलब हुआ आपने आकार खत्म नहीं किया। आकार तो खत्म हो गया लेकिन संबंध तो तुम्हारा भीतर से जुड़ा ही हुआ है। जमीन छिन गई, जमींदारी चली गई यानि रिटायर हो गये, डिप्टी कलक्टर, डिप्टी कमिश्नर परिचय देते हैं- रि.डि. कलक्टर अभी तक। कभी-कभी तो वहां लिखा होता बोर्डों में- भूतपूर्व प्रधानमंत्री। भूत अभी लगा है पीछे, वह नहीं छूटा। आकार बना ही रहता है, मन से। यानि मन से संबंध जुड़ा है ना।

एक बात कभी जरूरत पड़े आप जैसे विद्वानों के लिये तो याद रखना- तुम्हारी मुक्ति के लिये किसी की भी जरूरत नहीं है। तुम्हारा बंधन तुम्हारा ही बनाया हुआ है। और तुम्हारा बंधन केवल तुम्हारी स्वीकृतियों से बना है। तुमने मान लिया है बस इसी का नाम बंधन है। मान लिया है इसलिये तुमने मान लिया और सुन करके माना है- यह भी याद रखना। मैं हिन्दू, मैं कहता हूँ जब पैदा हुये थे तो आपके माथे में लिखा था- मैं हिन्दू**!** एक कहता मैं मुसलमान हूँ, माता-पिता ने बता दिया- ये हिन्दू है, तुम मुसलमान हो। ये ब्राह्मण है, वो चमार है। जैसे-जैसे सुनते गये वैसा-वैसा आप स्वीकार करते चले गये।

आपकी स्वीकृति ही बंधन है। एक वाक्य में आपकी स्वीकृति आपका बंधन है। आपकी मान्यता आपका बंधन है- कौन मिटा पायेगा जब तक आप अस्वीकार न करोगे। भगवान से गीता के वाक्य सुन लोगे। पढ़ते-पढ़ते हम बुढ़ाय गये गीता लेकिन अभी हमारी स्वीकृतियां समाप्त नहीं हुईं। इसलिये

कोई तीर्थ तुम्हें मुक्त न कर पायेगा। नहाते-नहाते तुम्हारे तन का मैल तो धुलेगा लेकिन गंगा नहाने से तुम्हारे मन की मान्यता समाप्त न होगी।

याद रखना हम बड़े शब्द कह रहे हैं लेकिन तुम किसी से न कह देना कि पथिक जी कह रहे थे तीरथ जाना बेकार है क्योंकि लोग ऐसा कह दिया करते हैं, बड़े धोखे में रहते हैं और दूसरों को धोखे में डालते हैं। तुमसे कह रहे हैं कि तुम कितना गंगा नहाओ, तुम्हारा तन धुलेगा पर मन तो वैसा ही मोही, लोभी, अभिमानी बना रहेगा।

इसे भागवत में जो संत संग की महिमा गुरोपासना केवल गुरोपासना की बड़ी महिमा, गुरोपासना का मतलब भी आप बड़ी चालाकी से गढ़ लेते हो। गुरू की लंगोटी छांटना, उनके पास रहना, उनकी आरती करना, माला पहनाना गुरोपासना? अरे ये गुरू की उपासना नहीं है, देह की उपासना है। देह की उपासना में गुरू की उपासना! देह से देह की सेवा करो। ये नहीं कि आज यह सुन करके कहीं जाओ तो फिर अच्छी छुट्टी मिल गई अब ये भी न करेंगे। बड़ी जल्दी आपकी बुद्धि गलत अर्थ पकड़ लेती है।

देह से देह की सेवा करो। समर्पण में देह को सौंप दो सेवा के लिये। मन को सौंप दो। अभी अपने मन की पूर्ति करते हो फिर अपने पूज्यास्पद के मन की मानो। लेकिन इतना ही करके न रूक जाना। बुद्धि को बुद्धि में सौंप दो नहीं तो भोगी बन जाओगे। अगर मन ही सौंपा तो भोगी बनाओगे और भोगी बन जाओगे।

परिवार में यही हुआ। एक पत्नी पति को समर्पित करती है, देह को समर्पित करती है, मन को समर्पित करती है, बुद्धियोगी है नहीं, मोही बनकर पत्नी मर जाती है, मोही बनकर पति मर जाता है, दोनों का ही कल्याण नहीं होता।

यहां भागवत सुन रहे हो इसलिये ऐसी बात कह रहे हैं। इतने लोग बैठे हो तुम्हारी पत्नियां होंगी, अहंकार अकड़ रहा हैं मैं अपने पति का पति और याद रखना- जो किसी का मालिक बनेगा बस ज्ञान की दृष्टि से पकड़ न जाएगा तो वो दास बन जाएगा। जिसके मालिक हो उसी के तुम दास हो लेकिन पत्नी से न कह देना, हम तुम्हारे दास हैं बस समझ लेना है। तुम मालिक बने नहीं क्योंकि और तुम मालिक क्यों बनते हो? मेरा और मेरा क्यों कहते हो? क्योंकि

उससे हमारे काम निकलते हैं। जहां तुमने अपना काम किसी से लिया वहां उसकी दासता में आबद्ध हो गये, बंध गये। किसी का मालिक जो बनेगा वह उसकी दासता से मुक्त नहीं हो सकता। मालिक बनता है, हो नहीं पाता।

अब एक बड़ा कड़ा वाक्य कह रहे हैं। अगर तुम ईश्वर को मानते हो, परमात्मा को मानते हो। कोई सृष्टि का रचयिता है और ये सब परमात्मा का है। ये भूमि, सूर्य, चन्द्र, प्रकाश सब भगवान के हैं। अरे जब भगवान सबका मालिक है तो तुम बीच में कहां से मालिक बनने लग गये। बेईमानी है कि ईमानदारी!

या तो भाई तुम अपने को मानो हिरण्याकश्यप की तरह मैं ही हूँ। सब पृथ्वी का स्वामी हिरण्याकश्यप पूर्ण था लेकिन अब तुम पूरे हिरण्याकश्यप तो हो नहीं सकते। लेकिन याद रखना तुम्हारे भीतर अपूर्ण हिरण्याकश्यप अभी चल रहा है। अपूर्ण रावण अभी चल रहा है, अपूर्ण कंस अभी चल रहा है। जो कभी पूर्ण था सृष्टि के त्रेता द्वापर में, वह आज कलियुग में अपूर्ण रूप से सबके साथ चल रहा है। बोलो किसी के पास न हो रावण? हिस्सा है- कम होते-होते बहुत कम हो गया है लेकिन थोड़ा तो रह ही गया है। अब आपको पूरे हिरण्याकश्यप की मुक्ति नहीं लेनी है लेकिन जो थोड़ा सा रह गया है वह कैसे मुक्त होगा?

थोड़ा रावण रह गया है, थोड़ा सिकन्दर रह गया है, सिकन्दर के लिये लोग गालियां देते हैं। कहते हैं- तुम्हारे भीतर सिकन्दर है अंश रूप में है। अगर कभी वह पूर्ण था तो तुम्हारे भीतर अंश है। है कि नहीं! क्रोध है कि नहीं, लोभ है कि नहीं, अभिमान है कि नहीं, अहंकार है कि नहीं।

अगर हिरण्याकश्यप पूर्ण था पृथ्वी का, सारी पृथ्वी का मालिक था तो तुम भी अपनी 10 बीघा के मालिक हो कि नहीं! बोलो हो कि नहीं? बता दो 10 बीघा, 50 बीघा, 100 बीघा के मालिक हो कि नहीं? ओहो हिरण्याकश्यप की कथा सुनते हो, कहते हो, हिरण्याकश्यप भले मारा गया और यहां तुम्हारे भीतर हिरण्याकश्यप मौजूद ही है उसकी फिर नहीं करते। कथा का रहस्य अगर पकड़ लो तो तुम्हें मुक्ति कोई न देगा, तुम स्वयं मुक्त हो सकते हो। नमो नारायण। इसलिये बड़ी रहस्य की बातें ये बुद्धियुक्त हो करके ही समझने लायक हैं और ये कब समझोगे? आंखों से नहीं, कानों से नहीं, बुद्धि साथ देगी तभी समझ पाओगे।

और जब प्रहलाद असुर बालकों को समझाते हैं, असुर बालक तर्क करते हैं

कि अभी हमारी कोई अवस्था है, तुम क्या बात कर रहे हो तो प्रहलाद कहते हैं- अरे! धोखा मत खाओ, अभी पकड़ो तो पकड़ो, अभी जानो तो जानो वरना ये संसार इतना घुल जायेगा कि निकाले न निकलेगा।

तुम्हारे बाबा जा रहे हैं निकाल दें संसार को। जो भरा है वहीं से तो जा रहे हैं। उनकी ओर न देखो, अपनी ओर देखो तुम भी जाओगे जहां से आये हो वहीं जाओगे। कहां जाओगे? जो तुम्हारे भीतर जो भरा है वहीं तो जाओगे जो भरा है।

बाल्यावस्था से अगर कोई कोशिश करे, कोशिश करे पहले तो निकलने की कोशिश न करे, अब भरने न पावै। भरै तो भगवान भरें, भरै तो भगवान की कृपा भरे। यहां सिनेमा भर रहा है, नुमाइश भर रही है, जाने क्या-क्या कहते हैं, सर्कस भर रहा है और घर में तमाम सामान चप्पल, जूता, छड़ी, फैशन, घड़ी। हे भगवान! एक चीज नहीं घर में, कबाड़खाना भरा हुआ है। हम तो कहते हैं हे भगवान दया करो। भगवान दूर से झांक कर देखते हैं, वह भी कहते हैं- गोदाम, कबाड़खाना तो हृदय बना हुआ है, कहीं जगह भी है हमारे लिये? खाली ही नहीं, सब भरा पड़ा है। इतना भरा है कूड़ाखाना कि बिल्कुल जगह नहीं है। और तुम भगवान को थोड़े ही चाहते हो, ये बात भी जरा समझ लो। आप लोगों में भगवान को चाहने वाला यहां शायद ही कोई महात्मा होगा। तुम भगवान से चाहते हो कि भगवान को चाहते हो? जरा हम देखें, हम उसका दर्शन करेंगे जो भगवान को चाहता है, हाथ उठा दों भगवान को चाहते हो कि भगवान से चाहते हो? अरे बूढ़े लोग तो हाथ उठा देंगे, कम से कम लोग भी न उठायेंगे, जानते हैं पकड़े जाओगे अभी जहां हाथ उठाया।

भगवान को चाहने वाला संसार में कहीं बिरला ही कोई देवता है। यहां तक कि ध्रुव भी भगवान को न चाहते थे, भगवान से चाहते थे। एक प्रहलाद ऐसे भक्त की कथा अभी जो आज सुनी, ये भगवान से कुछ न चाहते थे केवल प्रभु को चाहते थे और प्रभु को चाहते न थे प्रभु से नित्य निरंतर अभिन्नता का अनुभव करते थे। चाह भी समाप्त हो गई थी। ये है जागरण, पूर्ण जागरण। यह शब्द हम गलत बोल गये, प्रहलाद भगवान को चाहते थे। चाह उसकी होती है जो अपने से भिन्न होता है। जिसकी अपने से दूरी है ही नहीं, उसको हम क्या चाहेंगे? दूरी होती है तब तक चाह होती है। प्रहलाद की दूरी न रह गई थी। इसमें बड़ा रहस्य है।

अभी-अभी कथा में हम दूर से सुन रहे थे, बड़ा विस्फोट हुआ सारे विश्व में कंपन उसके फैल गये तो मुझे तुरंत याद आया- बात बिल्कुल ठीक। आपने सुना होगा- कौन से देश में एक बम गिरा, लाखों आदमी मर गये?

भौतिक अणु, भौतिक विज्ञान, भौतिक अणु को पकड़ते हैं और अणु कहते हैं जिससे सूक्ष्म कुछ न हो तो भौतिक विज्ञानी भौतिक अणु को पकड़ करके उसका जब विस्फोट होता है तो धरा कांप जाती है। वहां की धरती, वहां के मकान, सारी चीजें एकदम**!** ऐसा-ऐसा अणु का विस्फोट हुआ कि उसके धमाके से नहीं उसके कंपन से लाखों जीव जहां के तहां चिपट करके खंभे से बैठे हुये कुर्सी सब वैसे की वैसे ही रह गये। इतना बड़ा विस्फोट।

ये भौतिक अणु का विस्फोट होता है भौतिक क्रियाओं से, भौतिक पदार्थों से ही भौतिक तत्वों से ही भौतिक अणुओं का विस्फोट होता है। लेकिन यहां हम अभी-अभी समझे, हमें जैसे किसी ने समझा दिया- प्रहलाद के जब खंभ से ध्वनि हुई तो सारा ब्रह्माण्ड कंप गया। वह विस्फोट, वह विस्फोट अग्नि का था? वह विस्फोट चिद् अणु का था। चिद् अणु और जड़ अणु। जड़ अणु का विस्फोट होगा तो जड़ अणु को नष्ट करेगा, जड़ अणु के बने हुये तत्वों को नष्ट, शरीरों को नष्ट करेगा। लेकिन यहां चिद् अणु का विस्फोट हुआ तो 'क्षण-क्षण अणोरणीयान महतोमहीयान'। प्रहलाद के इस आत्मविज्ञान से एक चैतन्य अणु जो था वह प्रहलाद से एक अणु टूटा, भड़ाक-भड़ाक पूरा ब्रह्माण्ड कांप गया। बड़ा रहस्य है। इस ध्वनि में, उस ध्वनि में बहुत अंतर है। इस ध्वनि से लाखों आदमी मर गये। उस ध्वनि से अहंकार चौंका लेकिन मरा कोई नहीं। मरा तो वही अहंकार जो अहंकार प्रस्फुटित हो रहा था, उसी का विनाश हुआ।

तो ये जरा ये विज्ञान हे, इसकी पूरी व्याख्या हम न कर पायेंगे। चिद् अणु का विस्फोट होगा।

भौतिक अणु का विस्फोट होता है, भौतिक पदार्थ के अणु तत्व की गरमी से लेकिन चिद् अणु का विस्फोट होता है प्रेम से, प्रेम से। प्रहलाद का पूर्ण प्रेम उस चिद् अणु को विस्फोट कर सका। ये विज्ञान है, साधना है, बड़ा ऊंचा विज्ञान। ऐसे विज्ञान का दर्शन हमें शास्त्रों में हर जगह नहीं मिलता जो प्रहलाद के जीवन में मिलता है। है ऐसा कि नहीं? चिद् अणु का विस्फोट प्रेम के द्वारा, यह प्रेम तुम सबके साथ है।

अंतिम बात सुन लो- कहीं आपको प्रहलाद बनने की जरूरत नहीं है और याद रखना अगर आप नकल करोगे कि हम प्रहलाद कैसे बनें, ध्रुव के समान कैसे तपस्या करें, मीरा के समान हम कैसे नाचें, कैसे घुंघरू पहनें। ये सब कुछ न चलेगा। न तुम भरत हो सकते हो, न तुम लक्ष्मण हो सकते हो, न तुम जानकी जी हो सकते हो और न तुम अनुसुइया हो सकते हो। याद रखना ये बड़े तत्व की बात, तुम किसी की नकल करने की कोशिश न करना, न प्रहलाद, न ध्रुव। तुम हो तो परमात्मा के हो। यह बस याद रखना तुम्हें किसी के जैसे होने की जरूरत नहीं है। तुम परमात्मा के हो, किसी की नकल मत करो। तुम अभी पूर्ण में से पूर्ण थे लेकिन तुम अभी पूर्ण में तो हो जिसमें हो उसको जानते नहीं इसलिये बने हुये हो। अपूर्ण के संग से तुम अपूर्ण बने हुये हो, इसी कारण अज्ञान है। यह अज्ञान किसी तरह ज्ञान के प्रकाश से मिट जाये, ज्ञान, देखो शब्द न बदल देना। ज्ञान तुम्हें होना नहीं है, ज्ञान में अभी देखना नहीं आया। देखना नहीं आया।

इसलिये एक पुस्तक अभी लिखी है ''दृष्टि और दर्शन''। हम जो अभी कह गये इन आंखों से तुम्हें महात्मा के दर्शन न होंगे फिर परमात्मा के? तो इसमें थोड़े इशारे किये गये हैं, बहुत थोड़े इशारे। दृष्टि क्या है और दर्शन की दृष्टि। यह पथिक की बात नहीं है, ये हमारे गुरूजनों की बात है, ये गीता की बात है। 'पश्यन्ति ज्ञान चक्षुषाः' वह ज्ञान चक्षु और अगर रामायण मानते हो तो रामायण के एक वाक्य का जब तुम मनन करो गहराई से बुद्धिपूर्वक 'उघरहिं विमल विलोचन हिय के' क्या गंभीर बात है। तुम्हारे जीवन की समस्या सुलझ जायेगी और तुम्हारे जीवन की समस्या है दुख से कैसे छूटें? है कि नहीं! आज की बात ये बड़े महत्व की बड़ी महत्वपूर्ण है अगर कोई विद्वान मानव यहां बैठे हुए हैं तो-

'मूरख हृदय न चेत जो गुरू मिलहिं बिरंचि सम' अगर मूर्ख हैं। आपको मैं मूर्ख नहीं कह रहा हूँ लेकिन जिनकी समझ में नहीं आता वे मूर्ख हैं ही। और मूर्ख क्यों हैं? जिनकी बुद्धि धन के मद में, तन के मद में, रूप के मद में, कुल के मद में, अधिकार के मद में, किसी नशे में मूर्छित होने का नाम मूर्खता है। मन का कहीं अटक जाना मूढ़ता है। पुस्तक में मैंने परिभाषा लिख दी है याद रखना।

कह देते हो- बड़े मूढ़ आदमी हैं और जानते नहीं मूढ़ किसे कहते हैं? खुद हम ही मूढ़ हैं और अपनी मूढ़ता को हम पहचान नहीं पाते और दूसरों से कहते

हैं महामूढ़ आदमी है। मूढ़ कहते हैं जिनका मन अटका हुआ है। तो तुम्हारा मन ही अटका तन में, धन में, परिवार में, भूमि में, भवन में? ये सब मूढ़ता है। संतों को पता चला तो उद्‌गार उनके निकल रहे थे। 'ऐसी मूढ़ता या मन की'। संत कहते हैं- राम भगति को छोड़ करके, सुरसरिता- ये देव सरिता को छोड़ करके आस करत ओसकन की। यह है हमारी मूढ़ता।

आज हम तन को सुखदाता मानते हैं, धन को सुखदाता मानते हैं, पति और पत्नी की देहों के संयोग को सुखदाता मानते हैं। हो चुका ज्ञान। ज्ञान में देखना तो गया। मानते रहो इसी के पीछे सबको रोना पड़ेगा, पति को रोना पड़ेगा पत्नी के पीछे, पत्नी को रोना पड़ेगा पति के पीछे, धनी को रोना पड़ेगा धन के पीछे। संसार का सहारा लेने वाला दुख से बच जाये, तुम किया करो प्रार्थनायें, किया करो पूजायें, किया करो यज्ञ। संसार से जब तक तुम कुछ चाहते हो, दुख से न बचे तो चाहे हजारों तीर्थों में जाओ।

यहां पर यह बात कही जा रही है और जगह तुम्हें सुनने को न मिलेगी। यहां सुन रहे हो, तुम्हें मौका दिया गया है। सत्य कहो और सत्य यही है तुम्हारे दुख धन के सहारे, तन के सहारे, किसी संसार के सहारे तुम्हारे दुख दबे तो हैं लेकिन मिटे नहीं। सुनना, दबे हैं लेकिन मिटे नहीं। दबा हुआ दुख बार-बार आयेगा, मिट जायेगा तो कभी न आयेगा। दुख मिटाना है तो संत के वाक्य तो सोचो रामायण पढ़ने वालों! जब ये माइक लगा लगा करके रात को लोग पड़ोसियों को सोने नहीं देते हैं ये शहर वाले। गांव में तो अभी साधन नहीं हैं, यहां साधन हो जायें तो यहां भी माइक लगायेंगे, बारातों में लगाते हैं। लेकिन भक्त बन जायेंगे जो रामायण का पाठ माइक लगाकर करेंगे, अहंकार तृप्त हो रहा है। अहंकार कहेगा जान तो लें हम कितने भक्त हैं! यह पाठ माइक लगा करके करने की चीज नहीं है। पाठ आपके जीवन-दर्शन की एक व्यवस्था है। केवल अहंकार को जो चिल्लाते हैं भगवान सुन लें और पड़ोसी सुन लें, सबका कल्याण हो जाये। उस रामायण में एक चौपाई आज आपके सामने रखी जा रही है, अगर तुम दुख मिटाना चाहते हो तो संत से पूछ लो। संत तुम्हें तुलसीदास जी मिल जायें तो तुम्हारा कल्याण न होगा लेकिन रामायण का 2-4 मंत्र समझ में आ जाये तो तुम भक्ति, मुक्ति, शांति प्राप्त कर सकते हो, तुलसीदास जी के दर्शन से नहीं। तुलसीदास जी ने जो लिख दिया है उसके मनन दर्शन से तुम्हारे दुख मिट सकते हैं और एक चौपाई अभी

हम कह रहे हैं- 'उघरहिं विमल विलोचन हिय के'।

हिय नेत्र तो सबके हैं। तुमसे ज्यादा पशु के हैं, पक्षी के हैं। उल्लू तो रात को भी देख लेता है तुम तो दिन में भी अच्छी तरह नहीं देख पाते। पशुओं के पास सारी समटी हुई शक्ति इंद्रियों के द्वारा देय हो रही है लेकिन पशुओं में जितना इंद्रिय बल है उतना मनुष्य में नहीं है। मनुष्य की शक्ति कुछ मन में बिखरी है, कुछ बुद्धि में बिखरी हुई है इसलिये इंद्रियों में उतनी ताकत नहीं रह गई है जितनी बुद्धि में आ गई है और अभी चाहिये लेकिन आज हम उसका महत्व नहीं जान पा रहे हैं। आज हम इंद्रियों में तृप्त होना चाहते हैं, बुद्धि की शक्ति का दुरूपयोग कर रहे हैं? जबकि बुद्धि में आयी हुई शक्ति के द्वारा हमें दर्शन का द्वार खुल सकता है। बड़ी भारी भूल आज के मानव से हो रही है। और आज का वैज्ञानिक, भौतिक विज्ञानी बुद्धि की शक्ति का प्रयोग भौतिक पदार्थों के पीछे कर रहा है। जबकि शांति का कहीं पता भी नहीं चलेगा, अशांति मिटा नहीं पायेगा। सुख और सुविधायें तो मिलेंगी उसी के पीछे उसको भी दुखी होना पड़ेगा। लेकिन उनको पता नहीं हमारे अध्यात्म ज्ञान के प्रकाश में जो दिखाया जाता है-

'उघरहिं विमल विलोचन हिय के' क्या होगा? मिटहिं कि दबहिं, लेकिन एक बड़ी विचित्र बात है जो सूक्ष्म रूप से चौपाई में छिपी हुई है जिसे लोग पकड़ नहीं पाते। मिटहिं, यह नहीं कहा दुख मिटें। मिटहिं और तुरंत कह दिया दोहा, दुख आगे कहा। ये बात आपको याद रह जाय अगर दोष मिट जायेंगे तो दुख भी अवश्य मिट जायेंगे। हमारे तुम्हारे दुख भगवान के दर्शन से न मिटेंगे लेकिन भगवान के दर्शन से अगर दोष मिट जायेंगे तो दुख भी अवश्य मिट जायेंगे। ये बात खूब याद रखना, बहुत याद रखने की बात है। यही हम लोग भूल जाते हैं। ऐसा आप लोगों में कोई व्यक्ति नहीं जो कभी न दुखी होता हो और ऐसा भी आप लोगों में कोई नहीं जो दुखी हो करके दूसरों को दुख का कारण न ठहराता हो।

पति-पत्नी लड़ते हैं, क्यों? भाई-बहिन लड़ते हैं क्यों? माता-पिता लड़ते हैं क्यों? सरकार और प्रजा लड़ती है क्यों और गुरू-चेला लड़ते हैं क्यों? जब दुख होता है तब सब यही करते हैं। इनके ही कारण से हमें दुख हुआ। जहां तक आप ये कहोगे इनके कारण दुख हुआ रामायण तो आपने समझ ही नहीं, अनादर कर दिया संत के ज्ञान का।

रामायण की एक चौपाई आ जाये- 'काहू न कोउ सुख दुख कर दाता'। दो शब्द हम आज आपसे कह रहे हैं- एक तो याद आ जाये दुखी होने पर 'काहू न कोउ सुख दुख कर दाता, निज कृत कर्म भोग' प्रतिपल याद आ जाये तो तुरंत ठहर जाओगे, तुम्हारा गुस्सा आयेगा क्या कह डालें? क्या कर डालें? लेकिन तुरंत याद आ जायेगा कि लो भाई संत तो ये कहते हैं 'काहु न कोउ सुख दुख कर दाता'। और हम दुखदाता मानते हैं। तुरंत रूक जाओगे, पाप से बच जाओगे, पुण्य तो न बनेगा लेकिन पाप से बच जाओगे और दुखदाता मानने वाला आज तक पाप से नहीं बच पाया। याद रखना न तुम बच पाओगे, न हम बच पायेंगे। बात कुछ पकड़ में आ रही है? अब तो दुखदाता किसी को न मानोगे।

अगर तुम्हारा कोई 50 रूपये का जूता चुरा ले जाये तो? (हमारा दोष है) दोष है। क्या दोष है? उसकी हिफाजत नहीं की। हिफाजत करेंगे। हिफाजत कहां तक करोगे? यह दोष तो तुमने गलत पकड़ा। हिफाजत तो तुम कर ही नहीं सकते। हिफाजत तो अपने तन की भी नहीं कर सकते। तन की भी नहीं कर सकते। किसी की हिफाजत नहीं कर सकते। विनाशी की सुरक्षा भला कौन कर पायेगा? बंदूक रख लो, गनें रख लो। अरे इतनी बड़ी सेनायें, ये हमारे विश्व में देशों के पीछे लगी हुई हैं। ये भी देशों की सुरक्षा न कर पायेंगी, कल्पना है। जरा करो तुम रक्षा, अभी एक भूकंप आ जाये तो तुम्हारी सारी सुरक्षा धरी रह जायेगी। क्या कर पाओगे? इसमें हिफाजत की बात नहीं अभी बात और आगे बढ़ेगी।

यदि तुम जुता चुराने वाले को, घड़ी चुराने वाले को, अपने घर में डाका डालने वाले को दुखदाता न मानोगे तो दुखदाता कौन होगा। क्योंकि तुमने तो किसी की चप्पल नहीं चुरायी, तुमने किसी की एक पैसे की चोरी नहीं की, इतने ईमानदार और तुम्हारी कोई चोरी कर ले जाये तो?

हमारा कमण्डल कोई उठा ले जाये, हम तो परेशान हो जायेंगे। हमारा कमण्डल वहां धरा है और कोई उठा ले जाये तो हम क्या करेंगे, बताओ? लोटा हमारे पास है नहीं, कमण्डल था वह भी गया तो कैसे पानी पीयेंगे? हमें तो भाई बड़ी परेशानी। हमें समझाओ अब हमारी परेशानी कैसे दूर हो? तुम्हें हम बाद में समझायेंगे, तुम हमें समझाओ। हमारा कमण्डल कोई ले जाये और आजकल कमण्डल मिलते नहीं पहले मिलते थे बड़े सस्ते अब मिलते नहीं। हमें समझाओ

हमारा कमण्डल उठ जाये तो हम क्या करेंगे? हमारा काम कैसे चलेगा? (हम हजारों कमण्डल दान कर देंगे।)

अरे बाबा, ऐसी बात मत कहो। ये गलत बात कह रहे हो। हजारों कमण्डल, यहां हजारों क्या एक भी मिलना मुश्किल है। 15-20 साल पहले कमण्डल मिलते थे, अब मिलने वाला नहीं। गलत बात कहते हो।

कोई हमें यह समझाओ, हमारा कमण्डल कोई उठा ले जाये और अब मिलने वाला है नहीं। बहुत से महात्मा बेचारे घूम रहे हैं, कमण्डल मिल जाये, बाल्टी लिये घूमते हैं स्टील की और काहे-काहे की, कमण्डल नहीं मिलता। हमें तो मिल गया। 30 साल पहले मिल गया था। 30 साल पहले मिला है। इतना मजबूत है अभी 30 साल टूटेगा नहीं लेकिन कोई चुरा न ले जाना मजबूत समझ करके। बड़ा मुश्किल है उसकी तारीफ कर रहे हैं।

कमण्डल हमारा खो जाये तो हम कैसे न दुखी होंगे, ये बताओ? हमें तो दुख होगा? हमें बताओ हम कैसे क्या करेंगे? (यदि उस पर आपकी आसक्ति नहीं हे तो आप दुखी न होंगे।)

हां, ये उत्तर आपने ठीक दिया और आसक्ति हमारी कैसे दूर होगी?

(आसक्ति तो हमीं को दूर करना पड़ेगी क्योंकि हमीं ने उसको बनाया है।)

कैसे दूर होगी, आसक्ति मन में है। गंगा जी में फेंक आवें कि नदी में फेंक आवें, कहीं टांग आवें। कैसे दूर करें? आसक्ति तो है ही।

(जब तक उसको मिथ्या न मानेंगे तो दूर न होगी।) हां ये है ज्ञान की बात- मिथ्या मानें। तो तुम तो बहुत आगे बढ़ गये। देह ही मिथ्या है, देह का सब सामान ही मिथ्या है। हैं तो बात कमण्डल की है। (आपके प्रश्नों का उत्तर भला कौन दे सकता है।) सब लोगों के मतलब की बात। बात यही समझनी है वरना अगर ये न समझा तो सुना करो भागवत सप्ताह, मुक्ति न मिलेगी। पढ़ा करो रामायण तुम्हारे दुख न मिटेंगे। यहां तक कि हमारे परमानंद स्वरूप कृष्ण और राम के दर्शन किया करो तब भी दर्शन करने वाले भी दुखी होते रहे। पांडव भी दुखी हुये, दुर्योधन भी। सब दुखी हुये। दर्शन करने वाले भी दुखी हुये कि नहीं? क्यों दुखी हुये? इसलिये कि दर्शन तो करते थे लेकिन एक ही कमी थी कि जो जैसा ज्ञान में दर्शन होना चाहिये देखना वैसा न देख पाते थे। भगवान को तत्वतः न देख पाये।

एक ही उपाय दुख दुख मिटाने का है- 'कोऊ न काहू सुख दुख कर दाता' कब? दुखदाता कब बनेगा? जब सुखदाता बनेगा। असली जड़ तो ये है कि पहले कमण्डल को हम सुखदाता मानते हैं, यह है हमारी भूल। जड़ यहां से पकड़ो। एक सीढ़ी हम आगे बढ़े अभी एक सीढ़ी पीछे रह गई। जब तक तुम किसी को सुखदाता मानोगे तब तक तुम दुख से बच ही नहीं सकते। है कोई उपाय? किसी को सुखदाता मानोगे तब तक हम दुख से बच ही नहीं सकते। अच्छा अब सुखदाता कैसे न मानें, यह है ज्ञान में दर्शन। अहा! क्या बढ़िया बात है। रामायण की 2 चौपाइयां हम बार-बार दोहरा देते हैं। पहले तो- 'कोऊ न काहू सुख दुख कर दाता'। और इसको याद रखना- दोनों शब्द एक साथ कहे 'काहू न कोऊ सुख दुख कर दाता' केवल दुखदाता नहीं कहा। और इसमें छोटी यानि एक जो बात रह जाती है बड़े-बड़े विद्वानों के द्वारा। वह क्या रह जाती है? कि वो दुखदाता तो कहते हैं न मानो ओर सुखदाता को कहना भूल जाते हैं। तो सुख देने वाला जब तुम्हें दिखाई दे गया तो दुखदाता से तुम बच ही नहीं सकते।

जड़ काटनी है सुख तो अभी मिला है दुख तो कभी। बड़ी गहन बात है। सुख के समय कोई सावधान नहीं होता। दुख के समय सब यही प्रश्न करते हैं- ये कहां से आ गया? और ये कोई नहीं कहता- सुख कहां से आ गया? आज तक आपने यह प्रश्न उठाया?

हाय! ये दुख कैसे आ गया, वियोग का दुख कैसे हो गया? हानि का दुख कैसे हो गया? हमारा अपमान कैसे हो गया? यह कभी न कहा कि हमारा सम्मान कैसे हो गया? लाभ कैसे हो गया? कभी उठाया! हे भगवान! तुमहारी गीता रामायण, याद रहेगा क्या कह रहे हैं। आज तक इतनी उम्र बीत गई ये किसी की समझ में आया ही नहीं।

अगर इस प्रश्न को छोड़ा तो चाहे कितने महात्माओं के दर्शन करो, चाहे जितने व्याख्यान सुनो, समस्या हल न होगी। 'कोऊ न काहू सुख दुख कर दाता' सुख दुख छोड़ो कुछ नहीं। सुख न छोड़ो लेकिन सुखदाता किसी को न मानो तो दुखदाता न दिखाई पड़ेगा। यह है ज्ञान की बात। सुखदाता किसी को न मानो, पति सुखदाता नहीं, पत्नी सुखदाता नहीं है, याद रखो।

याज्ञवल्क्य ने बड़ी सुन्दर बात कही। याज्ञवल्क्य के दो पत्नियां थीं जो

संसार के सारे संबंध छोड़ करके नित्य आनंद का अनुभव करने का उद्यत हुईं। दोनों पत्नियों को बुला करके कहा- कात्यायनी और मैत्रेयी तुम लोग आधा-आधा राज्य। मैत्रेयी बड़ी चतुर थी, शुद्ध हृदया थी, कामना से रहित। ऐसी देवियाँ बहुत कम होती हैं। साड़ी जेवर कपड़े मांगने वाली तमाम। यहाँ तो शायद कोई नहीं है कामना।

एक प्रेमिका अगर कामना रखते हुये कहती है, मैं पतिव्रता हूँ तो वह गलती में है। पतिव्रता नहीं है, पतिव्रता नहीं है सुखदाता है सुख मिले।

•

ईश्वर अंश जीव अविनाशी।
चेतन अमल सहज सुखराशी।।

सहज सुख तो हमारा स्वरूप है। इसको भूल करके हम अन्य को सुखदाता मानते हैं। ये है सबसे पहली भूल और जब सुखदाता किसी को मान लेते हैं तो और कोई उपाय नहीं आप दुखदाता से बच जायें। सुखदाता मानोगे तो यहीं से सारे दोष, आसक्ति, ममता, धन सुखदाता तो लोभ, परिवार सुखदाता तो मोह, अधिकार सुखदाता तो अभिमान। सारे दोष सुखदाता देने वाला ऐसा मानने से हुये हैं।

ये जड़ें आपको बता रही हैं बड़ी समस्या सुलझ रही है ऐसे गांव में और यह भगवत कृपा है आप लोगों पर नहीं तो यहां न हम आते और न आप आते। भगवान का नाम किसी तरह लेते हो, मंदिरों में जाते हो। परमात्मा बड़ा करुणामय है, वह कहता है कि ऐसा न हो बड़े-बड़े नगरों में तो बड़े-बड़े सम्मेलन हो रहे हैं, लाखों के खर्च करके यज्ञ हो रहे हैं। यहां छोटा सा यज्ञ अगर ये बड़ा यज्ञ होता और इसका प्रचार होता तो आज यहां सैकड़ों महात्मा बैठे होते और जाने कितनी बड़ी भारी भीड़ होती। अभी एक भीड़ हुई थी, हमें बुलाया गया था तो कहां हम दुर्गा स्टेशन के आगे जयदपुरा वो (गौरी) गौरी बड़ी भीड़। हमारे लिये कानपुर दौड़े गये हम तो जाने कहां से कहां? हम ऐसे कहां मिलने वाले? और हम वहां नहीं गये, हम यहां आ गये। क्यों? वहां तो बहुत लोग हैं, यहां तो हमीं हैं। तो भगवान बड़े दयालु हैं, कहते हैं यहां तो बहुत आ गये हैं इतने आ गये हैं कि पचा न पायेंगे सुनने वाले। यहां कोई नहीं है यहां जाओ।

आज हमारे देश में यही है। बड़े-बड़े विद्वान बड़े-बड़े नगरों में जाते हैं। ब्राह्मण बड़े पवित्र, बड़े विद्वान, काशी के पंडित। आदिवासियों के नगरों में जहां जिनको खाना-पहनने की तमीज नहीं है, जिनकी झोपड़ियां जिनके कपड़े। मैंने एक बार कहां से? अहमदाबाद से इंदौर तक दिन भर कार से यात्रा की। वहां रास्ते में जंगली बस्तियां मिलीं, देखा कि ये आदमी हैं। उनको कुछ होश ही नहीं है, वहां कोई पहुंचता ही नहीं और ये पंडित लोग तो कहेंगे- हम छू लेंगे अपवित्र हो जायेंगे। ये अछूत हैं इनको छुओ नहीं। वहां ईसाई जा करके उनको उनके सुख की सुविधायें देते हैं और सुख की सुविधा दे करके अपनी तरफ आकर्षित करते हैं, उनके मन को पहले वश में करते हैं और उनका मन

जब वश में होता है फिर उनकी शिक्षा का प्रबंध करते हैं। जिनको कहते हैं इनको छुओ नहीं, महाभ्रष्ट हैं। ये बड़े निरे पशु हैं वह फिर आप ही के बीच मेमसाहब, साहब बन कर आते हैं तब आप गद्दियों में बिठाते हैं।

ये है एक दया ईश्वरीय विधान उनके बीच में जा-जा करके तो हमें भी लगता है कि हम तो उनके बीच में नहीं जा पाते फिर भी गांव में जाते हैं। हमें जितना भगवान के 'दीनबंधु बिन दीन की को रहीम सुधि लेत'। आज हम गरीबों के लिये तमाम यहां पूरा महीना 2-3 महीने बीत गये हमें दौड़ते-दौड़ते। गांव में जा-जा करके पता लगा-लगा करके ऐसे-ऐसे बेचारे 1-1 धोती में डेढ़-डेढ़ साल हो गये। नहाते नहीं, धोती गीली हो जायेगी। ऐसी औरतें बेचारी कितना फटी धोती पहने उनकी दशा देखो तो लोग तो यहां गांव में शहरों में देखो तो तुम्हें गरीबी का पता नहीं, गांव में देखो तो अमीरी का पता नहीं। यह है एक अवसर तो मेरा कहने का मतलब ये है कि ऐसे चित्त शुद्धि के लिये हमने सोचा मंदिरों में जा करके चित्त शुद्ध न होगा जितने इन टूटी-फूटी देहों में नंगे-भूखे दीनों की सेवा में पुण्य संचित होगा और पाप कटेंगे उतना मंदिरों में हमारे पाप नहीं कटेंगे। वहां तो भगवान को भी ठगना चाहते हैं भगवान को कुछ प्रसाद दिखा करके, कुछ प्रलोभन देकर भगवान इतना हमने किया है इतना बड़ा मंदिर बनवाया है, अब भी हमारी न सुनोगे?

यह क्या? भगवान को अपनी मुट्ठी में बांधने का एक तरीका हुआ। तो कहने का मतलब इतना समझ लेना कि यहां सुख स्वरूप आप ही हैं लेकिन आपने अपना सुख दूसरे पर निर्भर कर दिया है, यहीं से गुलामी शुरू हुई। यह बात बहुत महत्व की बात है। आप जहां सुखदाता मानते रहोगे तो दुखदाता से बच ही नहीं पाओगे। सुखदाता मानने का क्या परिणाम हुआ? आसक्ति, ममता, अभिमान, लोभ आदि ये जितने दोष बढ़े सुख देने वाले समझ करके बढ़े हैं। इनसे हमें बड़ा सुख। कोट-पैंट से बड़ा सुख, इस वस्तु से बड़ा सुख। जहां सुखदाता मान लिया, वहीं आपको आसक्ति हो जायेगी कि नहीं, ममता हो जायेगी कि नहीं।

सुख की आसक्ति, फिर वस्तु से आसक्ति, व्यक्ति से आसक्ति, भूमि भवन से जाने कितनी आसक्तियां बढ़ गयीं। और अगर भगवान से पूछोगे, संत से पूछोगे तो कहेंगे तुम हमारी भक्ति करना चाहते हो तो 10 स्थानों में तुम्हारी प्रीति बिखर गई है आसक्तियों के रूप में- 'जननी जनक बंधु सुत दारा। तन,

धन, भवन, सुहृद परिवारा।।' सबकै ममता- ये ममता आपकी कहां हुई? कहां से हुई? जहां सुखदाता दिखाई पड़ा। जरा बताओ- कहीं दुखदाता से ममता हुई है? सुखदाता दिखाई पड़ा, ममता हो गई। व्यक्ति से ममता हो गई, धन से ममता हो गई, अधिकार से ममता हो गई।

ये 'ममेति परमं दुखं निर्ममेति परमं सुखं।' ये संत कहते हैं लेकिन हम सुनते ही नहीं और आप कहते हो- महाराज मुक्ति भक्ति नहीं मिलती। इतनी सरल है मुक्ति, इतनी सरल है भक्ति, इतनी सरल है शांति, ये तीन बातें बड़ी सरल। बाकी सब इसके बाद सब बहुत कठिन है, बहुत कठिन। लेकिन ये आपको चाहिये ही नहीं। आपको न मुक्ति चाहिये, न भक्ति चाहिये, न शांति चाहिये। आपको धन चाहिये, न भक्ति चाहिये, न शांति चाहिये। आपको धन चाहिये, मान चाहिये, सम्मान चाहिये।

क्यों भाई क्या बजा है? (पौने तीन में पांच मिनट कम हैं।) तो आज की चर्चा में आपको केवल सावधान किया जा रहा है कि अपने जीवन में अगर तुम मुक्ति के मंत्र चाहते हो तो जंगलों में जाने की जरूरत नहीं है, तीर्थों में नहाने की जरूरत नहीं है लेकिन यह न कहना तीरथ बेकार हैं। तीर्थों में नहाने का फल यही है कि आज यहां आये हो। मंदिरों में जाने का फल यही है कि यहां आज आये हो। नाम जपने का फल यही है कि यहां आज आये हो।

'बड़े भाग पाइब सतसंगा।' ये सत्संग की जो रुचि है श्रद्धा से होती है। थोड़े पुण्य वालों को नहीं होती। 'पापवंत कर सहज सुभाऊ', बड़े पुण्यवान हो। पुण्य हैं आपके कि जो यहां आ गये हो। यहां आने के बाद फिर जरा अपनी ओर लौटो थोड़ा। परमात्मा से मिली बुद्धि को जो तुमने लोभ में, मोह में, अभिमान में सान दिया है, कीचड़ की तरह लपेट दिया है। ये काम बड़ा भारी तुम्हें करना है। क्या करना है? भगवान को नहीं पुकारना है। भगवान से जो बुद्धि मिली है उसको तुमने भगवान के पदार्थों को अपना मान करके लोभी बन गये, मोही बन गये, अभिमानी बन गये, कामी बन गये। यह महारोग तुम्हारे द्वारा ही बढ़ा है। ये तुम्हीं को दूर करना पड़ेगा, तुम्हीं को दूर करना पड़ेगा। इसके लिये जंगलों में जाने की जरूरत नहीं, कपड़े रंगने की जरूरत नहीं। कुछ छोड़ने की भी जरूरत नहीं है। न धन छोड़ो, न भूमि छोड़ो, न भवन छोड़ो, न परिवार छोड़ो। ईमानदार हो जाओ पहले। ईमानदार क्या है? कि मेरा मानना छोड़ दो। ऊपर-ऊपर न कह देना, सब भगवान का है। आप लोग बड़े चालाक सब

भगवान का और भीतर हाय मेरा छिन गया। जब छिनता है तब मेरा छिन गया। ये नहीं कहते- भगवान का गया.... क्या गया? पत्नी गई तो मेरी गांठ की क्या गई? तो हाय मेरी पत्नी, हाय मेरे पति, हाय मेरा धन। तब पता चलता है कि तुम कितने झूठे हो? भगवान से भी झूठा-झूठा कहके उनको फुसलाना चाहते हो। भगवान सब तुम्हारा। ये सब चालाकियां हैं। भीतर देखो धर्मशाला के कमरे में रहते हुये और 9 नम्बर का ऊपर से मेरा कहते हो और भीतर से धर्मशाला का।

ऐसे ही समझो सब मिला है थोड़े-थोड़े दिन में छोड़ना है। क्या इरादा है आपका? परमात्मा छूटेगा नहीं और परमात्मा तुम्हें छोड़ेगा नहीं। ऐसी आस्था यदि हो जोय तो आपका कल्याण आप ही के द्वारा निश्चित है। तो हमारे भगवान कहते हैं 'आत्मेव ह्यत्मनो बंधु'। तुम्हीं अपने मित्र हो, तुम्हीं अपने मित्र हो यदि अपने सत्य को स्वीकार करते हो ये आपका सत्य है। यदि अपने सत्य को तुम स्वीकार करो तो तुम्हीं तुम अपने मित्र हो। यदि अपने सत्य को तुम अस्वीकार करते हो तो तुम्हीं अपने शत्रु हो ओर जब अपने शत्रु हो तो किसके मित्र हो पाओगे? न पत्नी के, न पति के। बड़े कड़े वाक्य कह रहे हैं तुम पत्नी के मित्र नहीं हो सकते, पत्नी तुम्हारी मित्र नहीं हो सकती। यह शब्द तुमने शायद न सुने होंगे कि पत्नी मेरी- और तुम कहते हो- पत्नी मेरी है, तन मन से सेवा करती है। और हम कहते हैं पत्नी तुम्हारी मित्र नहीं हो सकती क्योंकि वह अपनी शत्रु है। ये वाक्य जरा तुम्हारे ग्रंथों में आये हो तो आप जानो लेकिन हमें तो ऐसा लगता है कोई-कोई जो अपना मित्र नहीं, वह तुम्हारा मित्र नहीं हो सकता चाहे पिता हो, चाहे पुत्र हो, चाहे माता हो ओर चाहे गुरू हो, चाहे शिष्य हो। अपना जो मित्र होगा वही सबका मित्र हो सकता है लेकिन अपना शत्रु वह है जो परमात्मा से मिले हुये को अहंकारपूर्वक अपना मान करके भोगी बन रहा है- वह अपना मित्र नहीं हो सकता।

और इतना ईमानदार बन जाये कि जो मुझे मिला है- जो मुझे मिला है ये संसार का है, यह परमात्मा की प्रकृति है। मैं परमात्मा का हूँ और ये सब परमात्मा की प्रकृति का है। परमात्मा जानें इसके हिसाब-किताब को। हमें जो मिला है उसका सदुपयोग करना है और जो नहीं मिला है उसकी कामना का त्याग करना है। ये साधना हो गयी, बड़ी सरल साधना।

अगर हमारी बात में कुछ गड़बड़ हो तो पूछ लेना, समझने के लिए पूछना और स्पष्ट हो जायगा। इतना ही करना है। न छोड़ना है न पकड़ना है। छोड़ना

इसलिये नहीं कि तुम तैयार रहना, तुम जिसे मेरा-मेरा कहते हो सब छूट जायगा। तुम छोड़ने की मेहनत न करना। जमीन, जायदाद, जवानी तक चली जाये। अच्छा काले बाद सफेद न होने देना- है ताकत? मेरे बाल इनको सफेद न होने देना, मेरी जवानी इसको कभी जाने न देना, भूमि-भवन चली जाये तो चली जाये जवानी तो तुम्हारी है, बाल तो तुम्हारे हैं इनको न जाने देना। अरे बाबा! कुछ तुम्हारा नहीं है। छोड़ना भी कुछ नहीं है। परमात्मा को पकड़ना भी नहीं है।

परमात्मा उसे कहते हैं जिससे संबंध तुम्हारा कभी टूट ही नहीं सकता और संसार उसे कहते हैं जिससे तुम्हारा संबंध कभी जुड़ ही नहीं सकता। खाली तुम माने बैठे हो। अब आगे की चर्चा फिर आप सुनेंगे।

यह प्रभु का दरबार है, सबको मिलता प्यार है।
राजा रंक सुखी दुखियों के लिये खुला यह द्वार है।।
यह प्रभु का दरबार है।

यह प्रभु का संसार है, प्रभु ही सर्वाधार है।
हम प्रभुमय हैं प्रभु हममय हैं प्रभु ही सर्वाकार है।।
(थोड़ा शब्द पर ध्यान देना कुछ लोगों की बुद्धि साथ देगी।)

हम प्रभुमय हैं प्रभु हममय हैं प्रभु ही सर्वाकार हैं।
यह प्रभु का संसार है।
(किससे नफरत करें? क्या छोड़ें? क्या पकड़ें? खाली दर्शन की दृष्टि खुल जाये।)

परमात्मा का ज्ञानतत्व हम जहां प्रकाशित पाते हैं।
जहां प्रकाशित पाते हैं।
वहीं हमें प्रभु कृपा दीखती, भवबंधन कट जाते हैं।।
मिटता अहंकार है रहता सत्य विचार है।।
(ब्रह्म सत्य है जगत मिथ्या है ज्ञान मुक्ति का द्वार है)
यह प्रभु का दरबार है।।

गुरूमुख मानव (गुरूमुख और मनमुख- जो मन की माने वह मनमुख, ओर जो गुरू आज्ञा के अनुसार अपने जीवन का दर्शन करे, वह गुरूमुख।)

गुरूमुख मानव दोषमुक्त हो लघु से गुरू हो जाते हैं। (यह है संत का प्रभाव- तुम सब मास्टर के संग से मास्टर, डाक्टर के संग से डाक्टर, शराबी के संग से शराबी और ज्ञानी के संग से अज्ञानी? कैसा? चोर के संग से साधु और साधु के संग से चोर, ये नहीं हो सकता।)

गुरूमुख मानव दोषमुक्त हो लघु से गुरू हो जाता है।
सत्य विमुख तो सुख के पथ में ही अगणित दुख पाता है।
मनमुख ही मंझधार है (जरा शब्द पर ध्यान देना)
मनमुख ही मंझधार है, गुरूमुख ही भवपार है।
वही जान पाता जैसा कुछ यह विचित्र संसार है।।

यह सद्गुरू दरबार है सबको मिलता प्यार है।
प्रभु के संगी (जरा दोनों की व्याख्या है)
प्रभु के प्रेमी निर्मोही निर्लोभी तत्व ज्ञानी हैं।
(ये है प्रभु के प्रेम की महिमा)
प्रभु के प्रेमी निर्मोही, निर्लोभी तत्वज्ञानी हैं।
जग के संगी तन धन के लोभी मोही अभिमानी हैं।
(गुरू के संग विचार है)2 लघु के संग विकार है।
एक सभी को प्रिय होता है, एक भूमि का भार है।
यह सद्गुरू दरबार है।

(फिर गुरू की उपासना क्या है?)
(ज्ञान रूप गुरू की उपासना)2 सारो दोष मिटाती है।
प्रभु के निकट स्वयं का अनुभव,
गुरू के निकट स्वयं का अनुभव उपासना कहलाती है।।
(उपासना ही सार है)2 (जबकि वासना पार है।)
पथिक परमप्रभु से प्रभुता का देख रहा विस्तार है।
यह प्रभु का दरबार है सबको मिलता प्यार है।
राजा रंक सुखी दुखियों के लिये खुला यह द्वार है।।
(प्रभु के प्यारे नाम आटा सानो दाल)

•

ॐ

हरे मुरारे जन्म जन्मोत्सव, मनवारा

चैतन्य शाश्वतं शान्तम् व्योमातीतं निरंजनं।
नाद बिन्दु कलातीतं तस्मै श्रीगुरवे नमः।।

नमो विज्ञान रूपाय परमानंद रूपिणे।
कृष्णाय गोपीनाथाय गोविन्दाय नमो नमः।।

श्रीकृष्ण गोविन्द हरे मुरारे (श्रीकृष्ण गोविन्द हरे मुरारे)
हे नाथ नारायण वासुदेव (हे नाथ नारायण वासुदेव)
हे नाथ नारायण वासुदेव (हे नाथ नारायण वासुदेव)
हे नाथ नारायण वासुदेव (हे नाथ नारायण वासुदेव)

अभी-अभी हम और आप जो चर्चा सुन रहे थे और भगवान के जन्म की बात थी, जन्मोत्सव की जगह प्रगट हुये। आप लोग सुनेंगे और भी कई बार सुन चुके हैं। कानों से कोई भी सुन सकता है- बालक, वृद्ध, लोभी, मोही, अभिमानी, कामी।

भगवान का भी, भगवान के नाम का भी पहले तो संत के मत में भगवान से भी भगवान के नाम की बड़ी महिमा है। भगवान ने जो नहीं किया, वह भगवान के नाम ने किया। इतनी महिमा नाम की! भगवान जो नहीं कर सके साक्षात् उनके दर्शन करने वाले जो लाभ नहीं उठा सके, भक्त मुक्त नहीं हो सके वो नाम के सहारे मुक्त हो गये लेकिन फिर आप सावधान हो जायें, नाम की भी कोई महिमा नहीं है महिमा है प्रेम। हमारा तुम्हारा प्रेम जो कि संसार से नहीं मिला, माता-पिता से भी नहीं मिला, किसी से भी नहीं मिला। प्रेमसिन्धु परमात्मा से हम नित्य मिले हुये हैं और जो परमात्मा का है वह हममें है, अभी है लेकिन इतना ढका है कि प्रगट नहीं हो रहा है।

साधना, साधना का मतलब ये है लोग कहते हैं हमें साधना बताओ? कभी-कभी लोग प्रश्न पूछते हैं- महाराज! भक्ति का साधन बताओ? मुक्ति का साधन बताओ? आप लोग विद्वान हैं, बुद्धि साथ दे रही हो तो शब्द बदल दो वरना जीवन ऐसे ही बीत जायेगा कथा सुनते तुम्हें मुक्ति नहीं मिलेगी, तुम्हें भक्ति नहीं मिलेगी।

तीर्थों में नहाते तुम्हारे पाप नहीं कटेंगे, न गंगा नहाने से। तो हम कड़े शब्द कह रहे हैं- आप कहेंगे कैसा विरोधी आदमी है? ग्रंथों में लिखा है- गंगा नहाने से पाप कटते हैं। हम कहते हैं- किसी पापी को दिखा दो गंगा नहाने के बाद पाप कटे हों? वैसे ही लोभी बना है, वैस ही मोही बना है। जीवन भर गंगापुत्र प्रयागराज में बैठे जीवन बीत गया, अभी तक उसका मोह नहीं छूटा? कहां पाप कटे? प्रमाण दो कि पाप कटते हैं? लेकिन बात हमारे संतों की गलत नहीं है लेकिन आप ऐसी बुद्धि से पकड़ते हो क्योंकि बुद्धि पर सारा दारोमदार है।

भगवान व्यास ने बड़ा सुन्दर एक वाक्य रचा- दुष्टमेधां, दुर्मेधा कहा है दुमेधा। जहां दुर्मेधा बुद्धि परिणामदर्शी जहां नहीं है दुर्मेधा परिणाम भी देखती है तो एक डाकू भी परिणाम देखता है। डाकू क्या परिणाम देखता है? ऐसे-ऐसे डाका डालेंगे। चोर देखता है ऐसे-ऐसे चोरी करेंगे तो हमें धन मिल जायगा। परिणाम- अभी कर्म नहीं किया किन्तु कर्म का परिणाम डाकू देख रहा है। कर्म का परिणाम चोर देख रहा है। कर्म का परिणाम हिंसक देख रहा है। कर्म का परिणाम कामी, लोभी, मोही सब देखते हैं। परिणामदर्शी बुद्धि को मेधा कहते हैं। बड़ा सुन्दर वाक्य है व्याकरण में।

बुद्धि और मेधा में फर्क होता है। वासना से सनी बुद्धि, व्यवसायिक बुद्धि, मेधावी बुद्धि और प्रज्ञा बुद्धि और फिर ऋतम्भरा प्रज्ञा।

थोड़ा इन वाक्यों के शब्दों को तुम्हारे पशु तो न समझ पायेंगे लेकिन जो अभी पशु शरीर छोड़कर मनुष्य बने हैं वो भी न समझ पायेंगे। हम अपने और तुम्हारे लिये कह रहे हैं। मनुष्य का शरीर तो मिल गया लेकिन पहले तो हम पशु रहे।

आप यहां मनवारा से कलकत्ता पहुंच जायें तो कलकत्ता में पहुंचने का प्रभाव जब बहुत दिन रहोगे तब पड़ेगा। शरीर तो कलकत्ता चला जायगा लेकिन वहां की भाषा, वहां की वेशभूषा, वहां की आदतें आपकी बदल जायेंगी, कलकत्ता जाने से एकदम? तो पशु के शरीर को छोड़ करके मनुष्य तो हो गये लेकिन मनुष्य की आकृति में आ करके हमारी पशु प्रकृति, पशु स्वभाव वैसे ही चल रहा है। यहां तक कि विद्वान हो जाने के बाद भी अभी-अभी तुमको हम बाहर दिखावैं यहां कितनी कितनी दूर से चल करके लोग यहां आते हैं, बड़े परिश्रम से आते हैं लेकिन जब पेशाब टट्टी लगती है तो नियत होती है, दूर न

जायें यहीं बगल ही में दीवाल के बगल में टट्टी पेशाब पड़ा है। ये कौन है? पशु? बुद्धि अलग है लेकिन पशु क्या चाहता है? पशु स्थान खोजता है? जहां टट्टी लगे वहीं कर दो, पेशाब लगे वहीं कर दो। गधा स्थान पूछेगा? उसे कोई पकड़ेगा नहीं तो पशु की प्रकृति में भोग, भोजन और नींद। जहां मिल जाये वहां सो जाओ, जो पावे सो खा लेओ। जहां मिले वहीं भोगों इसका नाम पशु प्रकृति है। मनुष्य के बुद्धि होती है तो मनुष्य धर्म का पक्ष लेता है- धर्म का पक्ष लेता है।

आप लोग उन्हीं लोगों में से हो जिनमें अभी पशु प्रकृति कहीं गई नहीं है। जितने-जितने अंशों में आप धर्म का पक्ष ले लेते हैं उतने अंशों में आप पशुता को जीतते चले जा रहे हैं, ये पशु प्रकृति पर शासन करना है। जरा व्यवहारिक, वैज्ञानिक ढंग से समझ लेना। पशु पर शासन किया जाता है। पशुको शासित रखो। पशु को अपने वश में रखो। हल जोतो, गाड़ी जोतो और जंगल के जानवरों को पकड़ के लाओ तो कुछ काम कर सकोगे? क्योंकि उसको काबू में नहीं रख सकते। घोड़ा बैल हाथी भैंसा ये सब तुम्हारा काम कर रहे हैं कब? जब तुम उनको अपने काबू में रखे हो तब।

पशु शक्ति मनुष्य के काम आती है, कब जब पशु को वश में कर लिया जाता है। इंद्रियों में पशु शक्ति है, इंद्रिय मात्र में पशु शक्ति है लेकिन इंद्रियों की पशु शक्ति और मन जब उसका भोगी होता है तो इंद्रिय और मन को वश में कर ली जाती है जब बुद्धिपूर्वक वह पशु शक्ति मनुष्य के काम आती है। मनुष्य कह रहा हूँ। पशु का काम ही है भोग, भोजन, नींद, इतना पशु का काम है। लेकिन जो भोजन में, भोग में, नींद में जो मर्यादाबद्ध है मर्यादित करता चला जाये यह पशु को जीतना है।

आपकी चटोरी जबान अभी काबू में नहीं आ रही है। मिठाई खाये चले जा रहे हैं, खटाई खाये चले जा रहे हैं, मिर्चा चबाये चले जा रहे हैं। ये क्या है? पशु। (यह क्या कर रहे हो) जीभ अभी काबू में नहीं आ रही है। धीरे-धीरे आयेगी और जितना तुम्हारी इंद्रियां काबू में आयेंगी मानो पशु को जीत रहे हो।

वही आंखें वही कान अगर काबू में यहां न रखे होते तो ये कथा सुनते होते? यहां पशु को काबू में करके बैठे हो तब सुन रहे हो। ज्यादा अभी तलब पैदा हो जाये अभी बीड़ी पीने की, पिये बिना रहा न जाय तो उठ के जाना पड़ेगा। पशु उठा ले जायेगा मानवता कहती है बैठो और कथा सुनो और पशु

कहता है पहले हमारी खुराक देओ। यह है पशु प्रकृति। खूब याद रखना। तुम्हारे जीवन की कथा तुम एक बार नहीं दस बार भागवत सुनो। मुक्ति भक्ति नहीं मिलने वाली क्योंकि तुम मुक्ति चाहते ही नहीं हो। बड़े चालाक, भोग छूटे नहीं, धन छूटे नहीं, परिवार छूटे नहीं, मोह ऐसा ही बना रहे, भगवान दया कर दें दुख से बच जायें। जो भगवान अवतार लेके बताते हैं हमीं दुख से नहीं बच पाये तो तुम्हें क्या बचा पायेंगे। भगवान यानि संकटकाल में दुख की भूमिका में ही भगवान का अवतरण होता है, प्रगट होते हैं। राम, तुम भगवान से प्रार्थना करते हो महाराज! हमें दुख से बचाओ। भगवान कहते हम क्या? 14 वर्ष का हमें वनवास हुआ। अरे गरीब आदमी वन में रहता होता तो कोई दुख न होता। इतना महान, इतना महान ऐश्वर्य, वैभव फिर 14 बरस वन में रहना पड़े ओर तापस वेष में मामूली दुख की बात नहीं है।

कृष्ण के जीवन में मामूली दुख संकट नहीं आये लेकिन वो ये सिद्ध करते हैं यानि उनके जीवन में उनकी, उनकी मंद स्मति में ऋषि लोग तो ध्यान करते हैं। एक श्लोक है जिसमें ये गाया गया है कि हम उन भगवान का जो कि 14 वर्ष जो कि राजतिलक का संवाद सुन करके एकदम हर्ष से प्रफुल्लित नहीं हो पाये, सुनते हैं जैसे कुछ असर ही नहीं। उनकी मंदस्मति मंद मुस्कान जैसे पहले थी, राजतिलक का संवाद सुनते हैं, कोई असर नहीं और थोड़ी देर बाद चौदह बरस का वनवास सुनते हैं तब भी कोई असर नहीं।

ऋषि गाते हैं- ''ऐसे ही मुखाकृति मंदस्मित भगवान के सुन्दर मुखारबिन्द को हम निरंतर ध्यान में रखें।'' ये प्रार्थना की गई है। क्यों? ये महान ज्ञान स्वरूप की महिमा है कि वह कभी विचलित नहीं होता चाहे जितने संकट आयें।

अभी आप सुन रहे थे लीला मात्र से तो वियोग का पार्ट भगवान अदा करेंगे, युद्ध करेंगे। अर्जुन को समझायेंगे 'मामनुस्मर युद्ध च' युद्ध तो करो लेकिन मेरा स्मरण न भूलना। मेरा स्मरण मतलब? कृष्ण नामरूप का नहीं मैं 'अहमात्मा गुडाकेश'- 'मैं शुद्ध चेतन स्वरूप आत्मा के रूप में प्रत्येक हृदय में विद्यमान हूँ।' अगर तुमको होश रहे तो अहंकार के पीछे जा करके उस शक्तिमान को पकड़ना जिस शक्ति से तुम्हारा अहंकार देख रहा है, सुनरहा है, चल रहा है, खा रहा है, पी रहा है और तुम अकड़ रहे हो- मैं कर रहा हूँ। मैंने ये मकान बनाया। कुछ न था मैंने इतना कुछ प्राप्त किया। घर में मैंने इतना वैभव, इतनी जमीन, इतना मुकदमा।

'अहंकार विमूढ़ता कर्त्ता अहमिति.... ।' रामायण पढ़ने वाले जब अकड़ते हैं और गीता पढ़ने वाले जब कहते हैं मैंने ये किया, मैं ये करूँगा। गीता में वर्णन कर दिया है तामसी पुरूषों के लक्षण- जो ये चिन्ता, जो इस तरह का चिन्तन करता है मैंने इस शत्रु को मारा है, अभी इसे मारना है, मैंने इसे हराया और हराना है। मैंने इसे छकाया है और छकाना है। भगवान कहते हैं तामसी प्रकृति वाले और आसुरी प्रकृति के लोग हैं। आप इन आसुरी प्रकृति के लक्षणों को जहां कहीं देखों उनका विरोध करो, उनसे पीछे रहो।

मैंने एक शब्द से ये व्याख्या बढ़ायी थी। मैंने कहा था- साधन पूछते हैं लोग, साधन बताओ? साधन मत पूछो- साधन तो तुम्हें मिले ही हैं। आज से ये याद रखना- ये तुम्हारे बनाये हुये ये आँख, कान, नाक ये 5 ज्ञानेन्द्रियां, 5 कर्मेन्द्रियां तुमने रोटी दाल खा करके नहीं बनाये। अगर रामायण पढ़ते हो तो होश में आ जाना चाहिये- 'साधन धाम मोक्ष कर द्वारा'।

साधनों का देह घर है जिसमें साधन ही भरे हुये हैं। यह हमारा तुम्हारा ये मानव शरीर जो है ये साधनों का घर है और ये घर ही नहीं ये भोगी के लिये, पशु के लिये ये आंख, कान, नाक 5 ज्ञानेन्द्रियों, 5 कर्मेन्द्रियां पशु के लिये, राक्षस के लिये, दानव के लिये तो भोग का साधन हैं लेकिन मानव के लिये मोक्ष का साधन हैं।

वही आपको यहां संदेश बताया जा रहा है- मुक्ति आपको कोई व्यास न दे पायेगा, मुक्ति आपको भारत का कोई संत न दे पायेगा, कोई महात्मा न दे पायेगा। मत आशा करना- मुक्ति, भक्ति, शांति तुम्हें कोई न दे पायेगा क्योंकि ये तो तुम स्वतंत्रतापूर्वक इसका अनुभव कर सकते हो बिना धन के, बिना बल के, बिना अधिकार के, बिना परिवार कें पति मुक्ति न दे पायेगा। पत्नी तुम्हें न तार पायेगी लेकिन तुम तर सकते हो पत्नी के संग से, तुम तर सकती हो पति के संग से। तुम मुक्त हो सकते हो गुरू के संग से लेकिन गुरू भी तुम्हें मुक्ति न दे पायेगा। याद रखना मत आशा करना। चरण धोके पी लेंगे तो मुक्ति हो जायेगी और फोटो पूजेंगे तो मुक्त हो जायेंगे।

मुक्ति देने की वस्तु है ही नहीं। ये तो देखने की वस्तु है। जरा शब्द ये गंभीर है बुद्धि अच्छी हो तभी समझ पाओगे। मुक्ति भक्ति लेने देने का सामान नहीं है ये तो देखने की वस्तु है। आप जाग्रत हो जाये तो देखेंगे, देखते-देखते

यहां तक देखेंगे कि मैं परमात्मा से कहीं भिन्न अलग हूँ ही नहीं- इसका नाम भक्ति है। अभिन्नता का बोध, भिन्नता का पता तक नहीं , अभिन्नता का बोध भक्ति। और जब देखेंगे इतना देखेंगे ज्ञान में इतना देखेंगे कि आपको पता चल जाये कि संसार का जो सामान है, उसमें तो अभी तक- अभी तक मेरा कुछ है ही नहीं, है ही नहीं। इसका नाम मुक्ति, इस बोध का नाम क्या है? मुक्ति। परमात्मा से भिन्नता समाप्त हो गयी, अभिन्नता की अनुभूति होने लग गई, इसी का नाम भक्ति है। भक्ति का नाम मंदिर में बैठना नहीं है, फूल चढ़ाना नहीं, मंदिर बनाना है ये तो अहंकार की कृतियां हैं और याद रखना- सभी कृतियों से जो भी आप करते हो, करने को कृति कहते हैं, जो कुछ तुम करते हो इसको अहंकृति कहते हैं। सभी कृतियों से और जितना आप सजावट-बनावट करते हो इस सजावट-बनावट से अहंकार तृप्त होता है, परमात्मा तृप्त नहीं होता।

खूब याद रखना- अहंकार। तुम मंदिर बनाओ, सजाओ क्योंकि भोगी सजाये ये तो बड़ा सुन्दर है। भगवान के नाम पर कुछ सजावट करै तो सजावट में सम्मोहित हो करके इंद्रियों के द्वारा मन लगेगा और मन लगने पर जब भगवान की सजावट बनावट में मन लगेगा तो भगवान प्यारे लगने लग जायेंगे, मंदिर-मूर्ति प्यारे लगने लग जायेंगे तो जो भोग का सामान तुम सिनेमा में खोजते थे वह तुम्हारे भगवान का मंदिर, तुम्हारे भगवान का श्रृंगार, तुम्हारे भगवान।

इसलिये ये मंडप सजाये जाते हैं, शहरों में ये मंच सजाये जाते हैं, तमाम रोशनी लगायी जाती है। तुम्हारी इंद्रियां किसी तरह से सम्मोहित हों। तुम जरा ठहरो और देखो, पता लगाओ यहां क्या हो रहा है? तो बाहर की सजावट बनावट देख करके जब भीतर जाते हैं तब लगता है यहां तो कथा हो रही है और सजावट बनावट आंखों की तो गई और मंच की सजावट बनावट तो बालक भी देखते हैं। फिर वे कानों से सुनने लग गय तो क्या सुना? सत् कथा सुनी, जीवन की कथा सुनी, अपने पाप-पुण्य की कथा सुनी। तो बाहर की सजावट न होती तो यहां आप आते कैसे? कैसे आते?

तो अब हमारे कथन में यह न समझना, मैं किसी चीज का विरोध करता हूँ। यथास्थान सब कुछ की जरूरत है लेकिन ये बुद्धिमान ही समझ पाते हैं, कहां पर किसकी जरूरत है?

'साधन धाम मोक्ष कर द्वारा', यह साधनों का धाम है। एक संत कहते हैं- संत कहते हैं- यह देह जो है जिस देह का हम इतना गर्व करते हो, जिस देह का अभिमान करते हो 'यहै देह अति निन्द है'। अगर इसकी खोज करो, ज्ञान से इसको देखो तो इसमें कितनी घृणित चीजें हैं- थूक चाटने लायक नहीं है, पीव पीने लायक नहीं है, मूत्र और मल सूँघने लायक नहीं है, हड्डी चमड़ा ये चबाने लायक नहीं है, कि है? देह में यही तो सामान है। इतने घृणित सामान होते हुये भी 'यहै देह अति निन्द है, यहै रतन की खानि'। इसमें रत्न भरे हुये हैं। इस देह के पीछे जाओ, सूक्ष्म शरीर में जाओ और सूक्ष्म शरीर का संबंध अगर परमात्मा की शक्ति से जोड़ लो तो कितनी दिव्य शक्ति है मन के पीछे। कितनी दिव्य शक्ति है नेत्रों के पीछे कानों में। अगर इन्हीं कानों से जो बाहर की आवाज सुनते हो अगर बाहर की आवाज सुनना बन्द कर दो तो दिव्य ध्वनियां सुनाई पड़ने लग जायेंगी। जिन आंखों से बाहरी रूप में तुम अटक जाते हो अगर बाहर रूप में आसक्ति मिटा करके भीतर आंख बंद करके बैठे तो अन्तर्दिव्य रूपों की अनुभूति होने लगे, दिव्य रूपों का दर्शन होने लग जायेगा। कितना महान् चमत्कार है शरीर के भीतर दिव्य गंध का।

यहां से बैठे-बैठे अगर तुम्हारा ज्ञान चक्षु, तीसरा नेत्र, आज्ञा-चक्र खुल जाये तो ध्यान द्वारा देख सकते हैं तुम हजारों पृथ्वी के भीतर घुस करके देख सकते हो- कहां सोना है? कहां चांदी है? कहां कोयला है?

आज के वैज्ञानिक बड़ी मेहनत करके देखते हैं। हमारे पूर्व के ऋषि अपने ध्यान योग से देख लेते थे कि कहां कौन सी चीज छिपी हुई है। इतनी महान शक्ति है।

"यहै देह अति निन्द है यहै रतन की खानि।" तो संत कहते हैं कि "सुन्दर सांची कहत हौ मान सकै तो मान।।" मान सकै अगर तुम मान सकते हो तो मान लो।

"यहै देह अति निन्द है और यहै रतन की खानि।" "सुन्दर सांची कहत हौं, मति माने तू रोय। मत बुस्सा होना जो तै खोयो रतन यह, तौ तू ही को दोष।।"

तुम अपने शत्रु हो अगर इसको खोओ। तुम्हें पता नहीं है इसके पीछे क्या है? तुम आगे देखते हो- क्षण-क्षण बदलने वाले सामान को, क्षण-क्षण सरकने वाले सौन्दर्य को, कुरूपता में बदलने वाले शरीर को, जवानी-बुढ़ापा में बदलने

वाली जवानी को और वियोग जिसके पीछे लगा है उस संयोग को तुम देखते हो लेकिन उस योग का तुम अनुभव नहीं करते हो जिसके द्वारा ये सारे परिवर्तन हो रहे हैं। जिसका कभी विनाश नहीं वह यहीं पर है, जो विनाश है वह भी यहीं पर है। जो बदल रहा है वह भी सामने है और जो कभी नहीं बदलता है वह उसके पीछे है। आप उसको नहीं देखते।

''जो है खोयो रतन यह तौ तू ही को दोष।'' यह प्रेरणा आपको दी जाती है। अच्छा न मानो प्रेरणा। कह दो बाबा ठीक है हम गृहस्थ आदमी हैं तुम तो बाबा हो। अच्छा तो तुम बनो गृहस्थ। गृहस्थ का मतलब बाल-बच्चे बाबा नहीं। तुम समझते हो हम गृहस्थ इसलिये हैं कि बाल-बच्चे हैं, नाती-पोता हैं, पढ़ाना लिखाना है, हमें परिवार में रहना है, समाज में रहना है। तुम्हें क्या? तुम्हें इन बातों की क्या फिकर है? तो ऐसा जो आप समझते हो, अब समझ लो गृहस्थ माने क्या होते हैं? गृहस्थ माने बाल-बच्चे वाला नहीं, अगर तुम बाल-बच्चे वाले हो तो शूकर के तो तुमसे ज्यादा बाल-बच्चे हैं कि कम हैं और न कर्णछेदन, न मुंडन, न जनेऊ, न विवाह, न दहेज, कोई चिन्ता नहीं है, कोई हाय-हाय नहीं, कोई परेशानी नहीं।

चिड़ियों के कितने बाल-बच्चे हैं, घोसला बनाती है, सरकार से पैसा मांगती हैं? पक्षी पैसा मांगते हैं? तुम्हारा एक नाता बिरवा लगाते हो, बया का घोसला चिड़ियां तुम चलो जमीन में वो चलेंगे आसमान में, छत में, रहो तुम जमीन में। तुम कब्जा किये बैठे हो मेरा मकान और छिपकली तुम्हारे मकान में रहे, मक्खियां तुम्हारे मकान में रहें। तुम्हारी छत पे कीड़े-मकोड़े जाला लगा लेते हैं तुम माना करो अपना, बल का प्रयोग किया करो। ईश्वरीय विधान में जहां तुम्हारा अधिकार है वहां उनका भी अधिकार है। तुम्हें होश नहीं मेरा मकान मेरा मकान चिल्लाये चले जा रहे हो। इतना ईमानदार हैं- तुम्हारी जमीन में बाधा न डालेंगे। तुम चलते हो जहां, वहां न रहेंगे वे छत पर रहेंगे। चूहा जमीन में, तुम अपने फर्श में रहोगे और उनको मौका मिलेगा जमीन में भीतर अपना घर बना लेंगे। रहेंगे कि नहीं? तुम्हारा सम्मान। तुम कहोगे मेरा अन्न। वे कहेंगे तुम माना करो अपना। हमारे भगवान का अन्न है हम भी खायेंगे तुम्हारा बोरा काट करके, कोई परवाह नहीं तुम्हारे भगवान की और न तुम्हारी। क्या विचित्र विधान है? बेकार में ही ये अहंकार कहता है मेरी जमीन मेरी जायदाद मेरा।

बड़ी छोटी-छोटी बातें हैं ये मेरा-मेरा। एक-एक गुरूमंत्र हम आपको बता रहे हैं बिना दीक्षा दिये बिना दक्षिणा लिये। 'मंत्र मूलं गुरुर्वाक्यं'- ये पथिक की बात नहीं है। ये हमारे शास्त्र के जो शास्त्रवेत्ता जो कि गुरूजन हैं उन्होंने अनुभूति के द्वारा ये संदेश हम सबको दिया है। वे कहते हैं- देखो, मृत्यु तुमसे सब कुछ छीन लेगी। जितने लोग बैठे हो कितना अकड़ोगे मैं मैं मैं। मैं बलवान, मैं धनवान, मैं रूपवान, मैं कुलवान। अरे भगवान की कथा सुनने वालों! भगवान का नाम जपने वालों, भगवान कहते हैं- तुम धनवान, तुम बलवान, तुम रूपवान, तुम कुलवान, तुम ऐश्वर्यवान, तुम कोचवान, जो कुछ भी बने हो, भगवान कहते हैं आत्मवान क्या सुन्दर वाक्य, आत्मवान, होश आया आपको? तुम जाने कितने तुम्हारे जितने वान लगे हैं, जड़ पदार्थों के पीछे लगे हैं। धन तुम्हारे अधिकार में नहीं, तुम धनवान बन गये? रूप तुम्हारे अधिकार में नहीं, तुम रूपवान बन गये? कुल तुम्हारे माता-पिता ने बता दिया। परमेश्वर से तुम्हें कुछ नहीं मिला। मैं ब्राह्मण 24 बीसा, 26 बीसा, 20 बीसा, मजाल इन्सान के व्यवहारिक जीवन के लिये सब बातें हैं। यहां तुम्हारा कुछ है ही नहीं।

तो भगवान कहते हैं- तमाम ये बनावट में कसे हुये हो अपने को। आत्मा तुम कहा करो 'आत्मवान', क्या सुन्दर शब्द! आत्मवान हो जाओ। 'आत्मवान' क्या सुन्दर वाक्य! देहवान हो कि नहीं। देह को देखते हो जो देह को देखते हो देहवान बन गये और जिसके द्वारा देखते हो, वह कौन हो? उसका क्या नाम दोगे? उसी का नाम आत्मा है। जिसके द्वारा तुम देह को देखते हो, सुनते हो, खाते हो, पीते हो। जिसकी शक्ति से, जिसकी सत्ता से तुम्हारी धड़कन चलती है, नाड़ी चलती है। जिसकी सत्ता से ये जवानी, बुढ़ापा, सब परिवर्तन हो रहा है, वह शुद्ध चेतन आत्मा है। तुम आत्मवान हो जाओ। अगर कुछ वान बनना है तो आत्मवान होके रहो और सब वान बनोगे तो तुमसे छूट जायेंगे और तुम्हें रुलायेंगे। हाय-हाय करोगे। हाय! छुट गया। छुट गया। छुट गया। गुरूजन कहते हैं एक मंत्र- तुम छोड़ने के पहले तुम उससे अपना संबंध तोड़ लो। सुन रहे हो ना और जोर से कहें- जो कुछ मृत्यु तुम्हारा सब कुछ छीन लेगी। मृत्यु में तुम्हारा सब कुछ छिन जायेगा। कोई तुम्हारे बैल, तुम्हारी भैंसे, तुम्हारे भैंसा न समझ पायेंगे, तुम समझ सकते हो कि मृत्यु तुम्हारे सब कुछ को व्यर्थ कर देगी।

चाहे जितना धन कमाओ, चाहे जितना जमीन पर कब्जा करो, चाहे जितना मुकदमा लड़ो, तुम्हें सिवाय कुछ रोटी के और कपड़ा के तुम्हारे हिस्से में कुछ नहीं है। अहंकार कभी तृप्त होने वाला नहीं है। घबड़ा न जाना, मैं छोड़ने को नहीं कह रहा हूँ। अच्छा चलो छोड़ दो, जमीन छोड़ दो, मकान छोड़ दो। छोड़ोगे क्या? ये सब छिना-छिनाया है, छूट ही जायेगा। कब्जा लेने वाले पैदा हो गये हैं, राजी-राजी देओ तो देओ नहीं तो छाती पर चढ़ करके ले लेंगे। कोई तुम्हारे पास बचने वाला नहीं तो छोड़ो कुछ नहीं। छुटने के पहले प्रारब्धानुसार रहने दो। प्रारब्ध से तुम्हारा संबंध है उसको देखो और संबंध कोई जबरदस्ती छीने तो उसकी रक्षा करो और जब चला ही जाये तो सोच लो छूटने ही वाला था चलो प्रारब्ध में इतना ही संयोग था। बस इतना कहकर संतोष करो। छोड़ो-वोड़ो कुछ नहीं लेकिन तुम संबंध तोड़ लो छोड़ लो।

प्रारब्ध से जो कुछ मिला है वह संसार का है। परमात्मा प्रारब्ध से नहीं मिलता, शांति प्रारब्ध से नहीं मिलती, आनन्द प्रारब्ध से नहीं मिलता, भक्ति मुक्ति ये प्रारब्ध से नहीं मिलती। तब कैसे? प्रारब्ध से जो मिला है, उसको अपना न मानते हुए उससे असंग होने पर भक्ति, मुक्ति, शांति सुलभ हो जाती है। क्या छोटा सा वाक्य, सबसे बढ़िया। परमात्मा के लिये तुम प्रयत्न करोगे? कभी जरूरत पड़े तो याद रखना- परमात्मा तुम्हारे प्रयत्न से न मिलेगा। कुछ करने से परमात्मा न मिलेगा। करने से जो मिलेगा वह संसार का मिलेगा ओर जो संसार का मिलेगा वह रहेगा नहीं। खूब याद रखना, तैयार रहना- जो भी मिला है वह न रहेगा और जो आगे मिलेगा वह भी न रहेगा। तुम रहोगे यह देखने के लिये कि ये मिला था और ये जा रहा है और अंत में मैं भी यहां से जा रहा हूँ। देखोगे कि नहीं? तो जब मरते-मरते देखोगे तो उसे पहले ही देखो कि ये जाने वाला है।

तो क्या करो? छोड़ो नहीं इतना कह दो जो जाने वाला है अगर मेरा होता तो मुझसे कभी न छूटता। यदि मेरा होता तो कभी न छोड़ता। अगर मेरा पति होता और मेरी पत्नी होती, मेरा पुत्र होता तो मुझे छोड़ देता? छूट गया तो इसका मतलब है मेरा नहीं। लेकिन जो मेरा, मेरा वही है जो कभी न छोड़े। बस इस बात की खोज करो ऐसा क्या है जीवन में जो मुझे कभी नहीं छोड़ता? हम तो बतायेंगे नहीं क्योंकि तुम अधिकारी नहीं हो लेकिन यह पता तुम्हें लगाना चाहिये- ऐसा क्या है जो हम कभी याद भी न करें तब भी हमें

कभी नहीं छोड़ता, कभी नहीं छोड़ता, वह क्या है? सोने में, जागने में, बेहोशी में, जन्म में, मृत्यु में जिसके बिना हम हो ही नहीं सकते कुछ वह क्या है?

जो कभी नहीं छोड़े तुम्हें वही तुम्हारा अपना है। इसका जो पता लगा लेता है वही विद्वान है और जो पता नहीं लगा पाता उसकी मूर्छित बुद्धि मूर्ख। जो पता नहीं लगा पाता उसका अटका हुआ मन मूढ़। मन अटक जाये इसका नाम मूढ़ता और बुद्धि मूर्छित हो जाये, तन के नशे में, धन के नशे में, बल के नशे में, कुल के नशे में, रूप के नशे में, जिसकी बुद्धि नशे में हो जाती है वह मूर्ख है मूर्ख। मूर्छित बुद्धि, नशे में हुई बुद्धि समझ नहीं पाती, देख नहीं पाती जो देखना चाहिये।

सारी चर्चा में एक शब्द कहा था, फिर हम उसी शब्द में लौटते हैं- मेधावी। एक मेधावी बुद्धि हर एक व्यक्ति की परिणाम देखती है- ऐसे करेंगे तो ऐसा होगा, ऐसे डाका डालेंगे तो धन मिलेगा, ऐसे मुकदमा लड़ेंगे तो जीत जायेंगे, ऐसे-ऐसे करें तो जमीन में कब्जा हो जायेगा, ये मेधावी बुद्धि- मेधावी बुद्धि। मेधा शब्द का प्रयोग तो किया हमारे व्यास भगवान ने, इसको क्या सुन्दर वाक्य दिया है- क्या कहा था? कौन सा वाक्य कहा था उस मेधा के लिये दुर्मेधा-दुर्मेधा श्लोक में है दुर्मेधा, सुमेधा नहीं दुर्मेधा। दुर्मेधा जो होती है आप हजार प्रयत्न करने पर भी तुम समझा न पाओगे। ये इशारा किया- जिनकी बुद्धि सूक्ष्म है।

भगवान भी अर्जुन को नहीं समझा पा रहे, कोशिश की। दुर्योधन को तो समझाने में निराश ही होके लौटे। रावण को महापंडित, वेद का ज्ञाता और रावण को भी न समझा पाये। दुर्योधन को भी नहीं समझा पाये। अर्जुन को भी समझा पाये कब जब अर्जुन इतना अहंकार को समर्पित करता है, मैं आपका शिष्य हूँ तब समझाने की कोशिश की। कोशिश करते बीच में याद आया- ये हम जो कह रहे हैं वो तो पकड़ ही नहीं पा रहा है। पता चला, तुरंत भगवान सावधान करते हैं- 'यदा ते मोह कलिलं बुद्धिर्व्यतित रिष्यति'। अरे अर्जुन, जब तक तुम्हारी बुद्धि मोहरूपी महाकीचड़ से सनी है जैसे तुम्हारा कांच है। कांच में अपना दर्पण में देख सकते हो। कांच में अगर कीचड़ लगा हो तो? कांच के ऊपर कीचड़ हो, कांच के ऊपर धूल जमी हो और कांच के ऊपर तेल लगा हो- तीन प्रकार के मैल होते हैं। एक तो धोने से साफ हो जायेगा और एक खाली झाड़ने से साफ हो जायेगा और एक पोछना पड़ेगा तब साफ होगा।

हमारे तुम्हारे अन्तःकरण में, मन चित्त बुद्धि में इस तरह से तीन प्रकार के मैल जमे हैं।

दर्पण में या किसी वस्त्र में धूल जमी है, आजकल चिकने वस्त्र चले हैं झाड़ दो साफ हो जायेगा। चिकने वस्त्र में झाड़ दो साफ हो जायेगा। चिकने वस्त्र को झाड़ने से साफ हो जाता है, ऐसे ही अच्छी बुद्धि वालों को जरा सा इशारा किया बस झाड़ दिया छूट गया। यह हैं चिकने वस्त्र में तो झाड़ दिया लेकिन इतनी धूल जमी है कि ज्यादा जम गई है तो फिर उसे ज्यादा रगड़ना पड़ेगा, पोंछना पड़ेगा। झाड़ने मात्र से नहीं पोंछना पड़ेगा। पोंछ दो साफ हो गया।

लेकिन तीसरी स्थिति में, गीले वस्त्र में धूल जम जाये तो? पोंछने झाड़ने से साफ नहीं होगा तब धोना पड़ेगा। हम लोग इसी भांति हैं। गीले वस्त्र की भांति हम लोगों की बुद्धि में मैल चिपक गया है। बहुत धोना पड़ेगा तब कहीं साफ होगा। नहीं तो नहीं होगा।

इतना काम तुम्हें करना है, तुम्हें जो करना है तुमने ये तुम्हारी करतूत है कितना गीला कीचड़ सान दिया है। भगवान कहते हैं– 'यदा ते मोह कलिलं'– तुम अपनी बुद्धि को जब तक मोहरूपी दलदल से साफ न कर लोगे तब तक जो ये सुन रहे हो, राग मिटने वाला नहीं है। विरागी नहीं हो सकते– इशारा किया।

समझाते-समझाते अर्जुन एक बीच में दो बार स्वीकार करते हैं– नष्टो मोहा, अब मेरा मोह नष्ट हुआ। सुनना कहां से शुरू किया? मोह की भूमिका से। हम लोग जो सुन रहे हैं लोभी बन करके, मोही बन करके, अभिमानी बन करके, कामना से कसे हुये यहां आये हो ना। किसलिये आये हो, क्यों सुन रहे हो? भगवान की कृपा से निष्काम पुण्य श्रद्धा थोड़ी जाग्रत हो गयी है वह श्रद्धा आपको यहां लाई है। श्रद्धा न होती तो आप यहां आ न सकते थे। बड़ा मुश्किल है।

श्रद्धा एक ईश्वरीय गुण है। आप लोग याद रखें– जैसे-जैसे ईश्वरीय गुणों का विकास होगा तब ऐसा कर पाओगे वरना ऐसा न कर पाओगे। भगवान के दर्शन करने वाले, भगवान के साथ रहने वाले भी ज्ञान में जाग्रत नहीं हो सके। सवाल था उनके भीतर के मोह का, लोभ का, अभिमान का।

जिसके भीतर प्यास जागी हो कि बंधन कैसे छूटे? यहां पर कितने लोग बैठे हो आप लोग, इतने लोग आये हो किसी के भीतर यह प्यास नहीं है। बंधन से कैसे छूटें? बस यही घात लगाते हैं कोई सिद्ध महात्मा मिल जाये, दुआ दे दे जो कमी हो वह पूरी हो जाये और जो जाने वाला है वह बच जाये। ऐसा महात्मा आपको बड़ा पसंद आयेगा। बड़ी पूजा करोगे, बड़े भक्त बनोगे।

दक्षिण में एक महात्मा हैं साईं भगवान। बड़ी भीड़ें, अब तो कम हो गई हैं। देहली में आये। बड़े प्रसिद्ध थे किसी को हीरा दे देते थे तो किसी को घड़ी देते थे, किसी को जंजीर देते थे। जरा सा इशारा किया, रोग दूर हो जाते हैं।

•

श्री परम गुरवै नमः

जब तक तू चाहे देख ले

परमात्मा की शक्ति के द्वारा जितना कुछ थोड़ी देर संयम और साधना कर लेता है, शक्ति बढ़ जाती है। मन में बड़ी शक्ति है। मन के पीछे तो परमात्मा की अनन्त शक्ति है। जितना मन विकसित होगा, जितना मन शांत होगा, जितना मन ठहरेगा उतना परमात्मा की शक्ति से संबंधित हो जायेगा और फिर वह शक्ति का प्रयोग करेगा ज्ञान में या वरदान में। अभी-अभी देखा ना दुर्वासा भी शक्ति का प्रयोग करते थे और उससे बढ़कर वह मिला जिसको जो अपनी शक्ति मानता ही न थे अम्बरीष।

दुर्वासा कहते थे, मैं इतना शक्तिशाली, मैं अभी शाप देता हूँ और अम्बरीष कहते थे, हमारा कुछ है ही नहीं। तुम चाहे कुछ देओ, चाहे कुछ ले जाओ हम कुछ जानते ही नहीं। इतना समर्पित अहंकार। शक्तिशाली की भी नहीं चली समर्पित जीवन में। समर्पित जीवन का पथ प्रदर्शन अदृश्य परमात्मा की शक्ति किया करती है। कोई समर्पित हो करके देखे तो। यह कहने से काम न चलेगा- 'त्वमेव माता च पिता त्वमेव'। मंदिर में रोज प्रार्थना करते हैं तुम्हीं मेरे माता-पिता हो। 'त्वमेव बंधुश्च सखा त्वमेव' और अंत में कहते हैं- 'त्वमेव सर्वं मम देवदेव'। अभी तो भगवान तुम्हीं मेरे सर्वस्व हो और जहां मंदिर की तरफ पीठ फेरी और बाहर निकले कि मैं ही फिर सर्वस्व। रोज देना रोज लौटा देना- ये चालाकियां भगवान को भी ठगने में कोई कसर नहीं रखते ये लोग।

बड़ा धोखा देते हैं इन्सान की तरह हाथ जोड़ करके, कुछ रिश्वत दे करके, कुछ थोड़ी मिठाई दे करके, कभी नगद नहीं उधार, कहीं व्यर्थ न चला जाये जीत जायेंगे मुकदमा तब 10 रूपये का प्रसाद चढ़ायेंगे। हमारे देवी-देवता भी ऐसे मिल गये हैं- लोभी, लालची मिठाई के, क्या किया जाये। जड़ बुद्धि वालों को किसी तरह लगाया गया है मार्ग में। 3-4 शब्द आये। मृत्यु के पहले अगर तुम्हें होश आ जाये तो न धन छोड़ना। धन को न छोड़ना लेकिन लोभ छोड़ देना, पति-पत्नी, माता-पिता न छोड़ना लेकिन मोह छोड़ देना, अधिकार न छोड़ना लेकिन अभिमान छोड़ देना और सुख न छोड़ना आसक्ति छोड़ देना। बड़ा सरल, बड़ी विचित्र बात है- कैसे? यानि छोड़ना नहीं, छोड़ने को क्या कहा गया- धन न छोड़ना लोभ छोड़ देना और धन छोड़ दो लोभ बना रहे तो,

परिवार छोड़ दो मोह बना रहे तो, अधिकार छोड़ दो अभिमान बना रहे तो, तो दुख न मिटेंगे चाहे जितना तीरथ करो, चाहे जितने व्रत करो, भगवान के दर्शन करो।

छोड़ना उसे होता है एक बड़ी अच्छी विद्वानों के लिये इशारा है, यहां कोई भी अगर विद्वान है तो समझ ले। त्याग तुम्हें करना नहीं है, त्यागने योग्य जो होता है- बड़ी सुन्दर बात हमें परसों बात मिली। जो त्यागने योग्य है तुम्हें त्याग करना न पड़ेगा, उसका त्याग अपने आप हो जायेगा। बड़ी विचित्र बात है त्यागने योग्य धन नहीं है, त्यागने योग्य शरीर नहीं है, त्यागने योग्य परिवार नहीं है। जो त्यागने योग्य है तुम देखते रहना प्राकृतिक विधान से अपने आप त्याग हो जायेगा। आचार्य जी इस बात को गंभीरतापूर्वक पकड़ लेना। त्यागने योग्य का त्याग अपने आप हो जाता है और ग्रहण योग्य का ग्रहण अपने आप हो जाता है- इस प्राकृतिक विधान को बहुत कम विद्वान समझ पाते हैं।

दृष्टांत एक दे दूँ तो स्पष्ट हो जायेगा- त्यागने योग्य क्या है? त्यागने योग्य घर परिवार धन नहीं है। जो त्यागने योग्य है तुम जरा ठहर जाओ अपने आप त्याग हो जायेगा। तुम्हें त्याग न करना पड़ेगा। समय पर मिलेगा, समय पर छूट जायेगा। जैसे भोजन तुमने किया। भोजन में जो ग्रहण करने योग्य है तुम ग्रहण करते हो कि प्राकृतिक विधान से अपने आप ग्रहण होता है? भीतर जरा पाचन शक्ति को देखो। भोजन तुमने किया, उससे रस बना, रक्त बना, वीर्य बना, सारी धातुयें अन्न से पोषित होती हैं तुम करते हो कि होती हैं- क्या ख्याल है आपका? अपने आप होती हैं। देखो ग्रहण करने योग्य का अपने आप ग्रहण हो रहा है। हमें होश नहीं है अकड़ कर कहते हैं- हमने ये खाया पिया ये किया ये किया। अहंकार को तो देखो। एक बात जो ग्रहण करने योग्य है उसका प्राकृतिक विधान से अपने आप ग्रहण हो रहा है। दूसरी बात न भूल जाये त्यागने योग्य है उसका त्याग अपने आप हो रहा है। उसी अन्न से ग्रहण करने योग्य जो सार तत्व है भीतर पच गये मलमूत्र तुमने त्यागा या अपने आप होता है।

बस यही दृष्टांत काफी है। त्यागने योग्य का त्याग अपने आप होता है। मल-मूत्र तुम नहीं त्यागते और किसी कारणवश कुछ गड़बड़ी करोगे प्रकृति में तो अस्पताल जाना पड़ेगा। तुम गड़बड़ी मत करो प्रकृति के खिलाफ न चलो।

मलमूत्र का, निःसार का त्याग अपने आप हो जायगा और सार का ग्रहण अपने आप हो जायगा- कब? जब तुम प्राकृतिक विधान को समर्पित होते हुये देखते चलोगे तब।

ऐसा कहां अपने असली जीवन में जो परमात्मा का होकर रहे तब तुम्हें कुछ छोड़ना ही न पड़ेगा। अंबरीष को कुछ छोड़ना न पड़ेगा, अंबरीष को कुछ पकड़ना न पड़ेगा। उस अंबरीष को देखते हैं हमें कौन पकड़े हुये हैं, उसी को देखते हैं उनको पकड़ अंबरीष पकड़ते नहीं भगवान को वह जानते हैं परमात्मा निरंतर हमें, परमात्मा से हम कभी भिन्न हो ही नहीं सकते। बड़ा सुन्दर।

हम एक-एक वाक्य जो आ जाते हैं आप लोगों को इशारा किये देते हैं छोटे-छोटे वाक्यों में। जब एक-एक ग्रन्थ पढ़ोगे तब कहीं पता लगेगा बड़े-बड़े ग्रन्थ।

उपासना का सरल अर्थ क्या है? जो हमें ग्रहण किये हुये है उसे हम देखें। उपासना का सरल अर्थ है कि परमात्मा को अपने चारों ओर निरंतर अनुभव करना। हम कहीं परमात्मा से अलग हैं ही नहीं, यही उपासना है। मंदिरों में आंख बंद करके बैठना ध्यान नहीं है। मंदिर में भगवान की मूर्ति के निकट बैठना उपासना नहीं है। उपासना का मतलब है- निकट से निकट अपने निकट केवल अनुभव करें। सबसे निकट है सबसे निकट जो है परमात्मा है इसके बाद फिर प्रकृति है। इस अनुभूति का नाम उपासना है।

ज्ञान में ये- ये ऐसे में पता न चलेगा आंखों से न दिखाई पड़ेगा, जब ज्ञान में जाग्रत हो करके ज्ञान के प्रकाशक ज्ञानस्वरूप परमात्मा को जो आत्मा को जो अपने इंद्रिय मन बुद्धि अहंकार के आसपास शुद्ध चेतना में डूबा हुआ देखते हैं, वे सच्चे उपासक हैं। अब उनको क्या भय है? कहीं भय नहीं रह जायगा। भगवान तो प्रेमी भी नहीं हो सकता। कल प्रहलाद चरित्र सुना था कहीं भय था?

प्रहलाद का प्रेम परमात्मा में हो गया था। तुम कृष्ण की चर्चा सुनते हो, भगवन का जन्म देखोगे और जाने क्या-क्या तुम प्रसाद चढ़ाओगे, पंजीरी खाओगे- ये प्रसाद? लोग कहते हैं प्रसाद बंट रहा है। बालक दो-दो बार लेने की नियत करेंगे लोभी आदमी सयाने भी नियत करेंगे। ये प्रसाद है?

'प्रसाद सर्वदुःखानां हानिरस्योपजायते' जिससे स्वाधीन प्रसन्नता प्राप्त हो

ये प्रसाद है। प्रसाद- स्वाधीन प्रसन्नता को प्रसाद कहते हैं। कल मैंने थोड़ा सा संकेत दिया था हमारी तुम्हारी सब प्रसन्नता हर समय पराधीन है। बिना देखे हम प्रसन्न नहीं हो सकते, बिना सुने प्रसन्न हो ही नहीं सकते। जीवन बीत गया, पराधीन प्रसन्नता के पीछे भागते-भागते। आप प्रसन्न होने के लिये बचपन से माँ की गोद में माँ की गोद में अपने को पाया और आंखें खुलीं तो कुछ देखा कान ने कुछ सुना और सुनने देखने का परिणाम यह हुआ कि माँ की सुखद गोद से तुम उतरे प्रसन्नता प्राप्त करने के लिये कि खिलौना कैसे मिल जाये और माँ की गोद से उतर करके मरघट तक पहुंचने वाले हो थोड़े दिन में कि नहीं क्यों भय्या? यह शरीर मरघट में पहुंचेगा कि नहीं जरा बता देना, बूढ़ों से पूछ लेना क्या प्राप्त करके लाये हो- पराधीन प्रसन्नता। यानि होश तो आ जाये- इतना सरल है होश आ जाये तो तुम्हें न कुछ छोड़ने की जरूरत है न कुछ पकड़ने की जरूरत है, मुक्त होने की जरूरत है स्वतंत्र होने की जरूरत है। स्वतंत्रता का अर्थ इस दुष्टि बुद्धि को स्वतंत्रता का अर्थ इस कौन बुद्धि को कौन शब्द कहा था बुद्धि के लिये दुर्मेधा। सुमेधा नहीं दुर्मेधा। जो बिल्कुल गलत रास्ते पर पतन की ओर जो विनाशी को पकड़े-पकड़े चल रही है वह दुर्मेधा- ऐसी बुद्धि को समझाना इस पर न ये भागवत का प्रभाव पड़ेगा, न महात्माओं का। खिलौने का पड़ेगा, पैसे का पड़ेगा, कोट-पैंट का पड़ेगा, साड़ी जेवर का पड़ेगा। माता-पिता का, लोभी, मोही, अभिमानी का प्रभाव पड़ेगा कि पड़ चुका क्यों भाई? लोभी के साथ लोभी हो गये कि नहीं, मोही के साथ मोही बन गये कि नहीं, अभिमानी के साथ अभिमानी हो गये कि नहीं। पान सुपारी के साथ खाने वालों के साथ पान सुपारी खाने लग गये कि नहीं और अभी छुड़ा दे तुम्हारा कोई ताकत नहीं हमारी। संग का असर है ये। आप लोग यह न कहना कि हमें कह रहे हैं अरे भाई संग में पड़ करके तुमको करना ही पड़ेगा, मजबूर हों अरे एक बड़ी खूबी बात बताते हैं- जो चबाते हैं सुपारी उन्हें कम गुस्सा कम आता है बजाय न खाने वालों के क्योंकि चबाने की आदत जो है चबाना, चबाने से क्रोध की शक्ति बड़ी कम हो जाती है और बड़ी खुशी मनायेंगे सुपारी चबाने को मिली। चबाने से वह शक्ति कम हो जाती है। बड़ा अच्छा मौका मिल गया है, तुम बड़े अच्छे से सुपारी चबाते हो।

इशारा यह है कि हम व्यसनी के साथ व्यसनी बन गये, लोभी, मोही, अभिमानी के साथ सब बन गये कि नहीं। ज्ञानी के पास सब रह करके खाली

पैर ही छूते रहे। ज्ञानी के साथ रह करके ज्ञानी न हो पाये। निर्मोही के साथ हो करके निर्मोही न हो पाये। लेकिन बड़ा शुभ मुहूर्त है पुण्य तो आपका साथ दे रहा है कि यहां आ गये हो।

मैं आज इन बालिकाओं से कह रहा था कि तुम्हारी हमारे प्रति देखो श्रद्धा है हम तुमको कुछ नहीं दे सकते, न साड़ी न जेवर, न अन्न, न कुछ और, उल्टा तुम हमारी सेवा करते हो, हमें भोजन कराते हो, बदले में कुछ नहीं चाहते। तो बड़ा हमें। हम सोचते-सोचते यहां तक पहुंचे कि हमसे प्रेम करने वाले बालक और बालिकायें हमसे कोई कुछ नहीं चाहता और फिर भी चाहते हैं, शायद आलस्य भी छोड़ देंगे अगर हमारा कोई काम होगा तो मैंने इशारा किया- क्या कारण है? अगर ऐसा ही, इतना ही निष्काम प्रेम तुम्हें अपने पति के परिवार में जा करके हो जाये तो कितना सुंदर जीवन हो सकता है जैसे हमसे कुछ न चाहते हुये हमसे प्रेम कर सकते हो वैसे ही पति से भी कुछ न चाहते हुये पति से प्रेम कर सकते हो, माता-पिता से प्रेम कर सकते हो, सास-ससुर से प्रेम कर सकते हो। बस ये कुछ चाहना ही तुम्हें दरिद्र बना देता है और ये दरिद्र नारी क्या धर्म करेगी? दरिद्र नारी क्या पतिव्रता हो जायेगी? पति का संग जीवन भर न छोड़ेगी और पति से लड़ती भी रहेगी। साड़ी न मिलने का, जेवर न मिलने का ताना देती रहेगी। ये पतिव्रता। खाली नकल करते रहो यह पातिव्रत्य धर्म नहीं है।

सचमुच पति भी ऐसे पति का ज्ञान भी नहीं है। वास्तविक में हमारे भागवत में एक श्लोक आया है या कहां आया है- पति तो वह है जो सर्वथा सर्वत्र जो हमारी रक्षा में तत्पर है वह पति है। ऐसा पति चेतन सिन्धु परमात्मा आत्मा ही हो सकता है। द्रौपदी को जब पता चला उसी पति को पुकारा वरना 5-5 महारथी पति बैठे रह गये और सुरक्षा न कर पाये। ऐसे पति, ऐसा पति तुम्हारे हृदय में विद्यमान है और भूल न जाना दूसरी बात तुम्हारे हृदय में नहीं जिनको तुम लोग पति मानती हो उनके हृदय में भी वह परमात्मा की आत्मा विद्यमान है लेकिन यहां कोई बिरली ही ऐसी नारी होगी जिसको यह पता होगा। आज सुन रहे हो शायद पता चल जाये और शायद रह जाये अपने अपने घरों में। तो विनाशी पति में अविनाशी तत्व को जानो तो तुम्हारा अविनाशी से संबंध पति के नाते हो जायेगा और अगर ये न जाना तो मंदिर में भटकते रहो, परमात्मा न मिलेगा।

बड़े कड़े वाक्य हम कह देते हैं इसलिये कि आपको थोड़ी चोट लगे और समझ में आ जाये। तुम कितने ही मंदिरों में जाओ और मंदिरों में जाना बड़ा शुभ है। मंदिरों में न जाते होते तो यहां न आते। भगवान को कहीं मानने लग गये हो, बड़े अच्छे हो। भगवान को मानते-मानते फिर भगवान की कथा सुनने आये हो और जब कथा सुनने आये हो तो उसी कथा में बताया जा रहा है अब भगवान की खोज में तुम भटको मत, मत भटको लेकिन आदत की गुलामी आसानी से न छूटेगीं अब भी भटक रहे हो, अब भी भटक रहे हो तुम्हें अभी भी होश नहीं आ रहा है कि अब भी भटक रहे हो। लोग एक कथा होती है कथा सुनते हैं भगवान की। हमारे देश में बड़े अच्छे-अच्छे विद्वान व्यास हो चुके हैं कथा से धुरंधर मर्मज्ञ, बड़े-बड़े उनके नाम के पीछे डिग्रियां लगी हैं कथा करते हैं भगवान की कथा के प्रेमी हमारे बीस बरस के सत्संगी और मिले और हमसे कहने लगे- बनारस में एक गुजरात के बड़े अच्छे कथावाचक महात्मा आ रहे हैं। उनकी बनारस कथा सुनने जायेंगे और वही बीस बरस के सत्संगी अपने यहां वृंदावन के बड़े अच्छे सुंदर प्रसिद्ध व्यास की कथा अपने सत्संग मंडल में 4-5 बार करा चुके, 4-5 बार बड़ी अच्छी कथा करा चुके अब वहां जायेंगे। हमें बड़ा आश्चर्य हुआ क्या बतावें कैसे कहें फिर रहा न गया, हमने कहा- कह तो देना ही चाहिये। जड़ बुद्धि है समझ में आवे या न आवे। मैंने कहा- तुम भागवत के प्रेमी नहीं हो, भागवत कहने वाले के मुख के प्रेमी हो उसी को देखो। जैसे हम जो कहते हैं जो हम कहते हैं यह गुरू वाक्य जो हम बोल रहे हैं तमाम यहां पर हमारे प्रेमी बैठे हुये हैं उनको हम सावधान करते हैं कि तुम हमारे प्रेमी नही हो। जो हम कह रहे हैं उसके प्रेमी नहीं हो। अगर उसके प्रेमी हो हमारे प्रेमी हो तो जो हम कह रहे हैं उसे स्वीकार करो। नहीं नहीं फिर स्वामी जी के दर्शन हों और जहां जायेंगे वहां आप दौड़ोगे। ये क्या दौड़-भाग कर रहे हो, जड़ता का परिचय दे रहे हो कि नहीं? कब तक दौड़ाये, दौड़ने लायक न रहोगे, कब तक दर्शन करोगे, दर्शन करने लायक न रहोगे लेकिन तुम्हारा मन नहीं मानता। तुम मन पर सवार हो ओर जब तक तुम मन पर सवार हो तो भगवान की बात याद रखना- 'अहं गुरो महाबाहो' कहा। जब मन शिष्य बन जाये तब।

आज तक हजारों शिष्यों का, हजारों शिष्य होने के अभिमानी लोगों का मन शिष्य न हो पाया गुरू बना है मन मारते हैं पथिक जी हमारे गुरू हैं। बड़ा धोखा खा रहे हैं- पथिक जी को गुरू मानते हैं, शंकराचार्य को गुरू मानते हैं और

किसी महात्मा को गुरू मानते हैं ये सब धोखे में हैं। किसी को गुरू नहीं मिले। मन गुरू है, मन ने पसंद किया है। पसंद करने के कारण बार-बार वहां दौड़ते हैं और जो वाक्य होते हैं उनको भूले रहते हैं। हमने तो इसीलिये किताबें लिखी हैं एक-एक सैकड़ों महात्माओं के, शास्त्रों के, भागवत के, गीता के, श्रुतियों के वाक्य जो हमें अपने जीवन में प्रकाश देने वाले मिले, हमारे अज्ञान को हटाने वाले मिले तो हमें तरस आया अपने साथियों पर कि हमें जैसे प्रकाश मिल रहा है। इस प्रकाश में हमारे साथी जो हमें, हमारे पीछे दौड़ते हैं वे भी इस ज्ञान में अपने को देखने लग जायें। इसीलिये हमने समाज के लिये नहीं, संसार के लिये नहीं केवल अपने श्रद्धालु जनों के लिये ही किताबें लिखी हैं। एक पुस्तक-एक पुस्तक ये 'असत् से मुक्ति', 'दृष्टि और दर्शन', 'पूर्णता की ओर', एक पुस्तक तुम साल भर पढ़ो जैसे कोई 10वें कक्षा का विद्यार्थी ग्यारहवें-बारहवें कक्षा का विद्यार्थी अपने कोर्स को पढ़ता है फिर साल में परीक्षा देता है। साल भर पढ़ो फिर हमारे पास आओ कि लो पुस्तक। इस पुस्तक के अनुसार हमसे प्रश्न करो। इतना भी आज तक एक शिष्य हमें न मिला जो पुस्तक पढ़ने के बाद हमारे पास आता और पुस्तक हमारे सामने रखता और कहता- अब आज हमारी परीक्षा ले लो। सब पास हैं अपने आप पास हैं। क्या बतावैं- कोई फेल है ही नहीं। हमें परीक्षा लेने की भी जरूरत नहीं है। हम सवाल बोले और अपने आप कापी में लिखें और हल करें, मैंने ठीक हल कर लिया। कभी कापी न दिखाई हम तो सब देख ही लेते हैं लेकिन कोई दिखाने को तैयार नहीं है। ये है आप लोगों का हाल तो क्या होगा इसका परिचय? तुम अपने अहंकार को न पहचान पाओगे और अहंकार अंधा है, पकड़ना जानता है, देखना नहीं जानता वरना आपकी भागदौड़ बंद हो जानी चाहिये। शिष्य होने के बाद आपकी तीर्थयात्रा समाप्त हो जानी चाहिये। केवल गुरू की प्राप्ति के लिये संतों का समागम करना होता है। संतों का समागम करने के लिये, साधु संतों के दर्शन के लिये तीर्थों में जाना होता है लेकिन आज तीर्थ जाने वाले तीर्थ ही में भाग रहे हैं। संत साधु मिले ही नहीं और संत साधुओं के दर्शन करने वाले दर्शन ही करते चले जा रहे हैं, गुरू मिले ही नहीं और गुरू की फोटो पूजने वाले फोटो ही पूजते चले जा रहे हैं, ज्ञान से संबंध जुड़ा ही नहीं। ये अंधेरे में हैं प्रकाश में नहीं। परिणाम यह होगा कि तुम जिस धन का सहारा, तन का सहारा, पति-पत्नी, पुत्र, माता-पिता का सहारा ले रहे हो ये सब सहारे तुम्हारे छूट जायेंगे अगर ज्ञान में तुमने न देखा तो मोह का परिणाम जो है, अज्ञान का

परिणाम जो बंधन है वह तुम्हारा बंधन कोई न मिटा पायेगा। तुम हाय-हाय नहीं अभी वाह-वाह करते हो कुछ पा करके और फिर जब छूटेगा तब हाय-हाय करोगे। हम तो यही चाहते हैं, हमारी तो नियत यही है कि तुम हाय-हाय करके न जाओ, वाह-वाह करते हुये जाओ।

लाखों करोड़ों लोगों को जो गुरू संदेश नहीं मिल रहा है वह तुम्हें मिल रहा है। करोड़ों लोगों को जो ये भागवत परमहंस संहिता का ज्ञान, मंत्र नहीं मिल रहे हैं वे तुम्हारे सामने उतारे जा रहे हैं लेकिन आंखों से न पकड़ पाओगे, कानों से न पकड़ पाओगे बुद्धि सूक्ष्म होनी चाहिये। आज तक कोई साधक, हमारे सामने अनेकों साधक हैं लेकिन कोई साधक इस बात की कोशिश नहीं कर रहा है कि हमारी बुद्धि कैसे सूक्ष्म हो? सब यही कोशिश कर रहे हैं, कोई कह रहा है दर्शन कैसे हो? कोई कहता है- हमारा तीसरा नेत्र कैसे खुले? कोई कहता है, कोई चमत्कार कैसे घटे? कोई कह रहा है भगवान में मन कैसे लगे? सब इसी तरह के प्रश्न करते हैं, ऊटपटांग प्रश्न बिल्कुल बीस बरस पहले और आज भी वही। मन कैसे लगे, मन कैसे स्थिर हो जाये। आंख बंद करें और भगवान दिख जायें जैसे तुम्हारे नौकर हों। भगवान दिख जायें, क्या गरज पड़ी है भगवान को दिखाने की जिसको देखो वही यही प्रश्न कर रहा है। मन हमारा वश में कैसे हो, ये भी होश नहीं आ रहा है कि अगर 24 घंटे भी तुम्हारा मन स्थिर हो जाये तो अस्पताल भेजे जाओगे। घर-परिवार वाले कहेंगे दिमाग खराब हो गया है, न दुकान गया, न मुकदमा, न कचहरी। अरे मन स्थिर हो गया, कुछ याद ही नहीं रहता। ऐसा मन स्थिर? तो तुम्हारे प्रश्न आज तक नहीं समझ पा रहे हैं तुम कहते हो हम साधक हैं, भजन करते हैं।

एक बात भगवान की सुन लो, भगवान कहते हैं देखो- अगर तुम हमारा भजन करना चाहते हो तो पाप- 'पापवंत कर सहज सुभाऊ'- रामायण में संत ने कहा है। पापी का सहज स्वभाव है वह भजन न कर पायेगा। तुम यहां पुण्य के प्रताप से आ भले गये हो लेकिन अब अब भी तुम भजन न कर पाओगे। ये तुम 2-4-10 माला जप लो, इसका नाम भजन नहीं है। तुम मंदिरों में चले जाओ, भगवान को प्रणाम कर लो, इसका नाम भक्ति नहीं है। मत धोखा खाना- हम बड़े भक्त हैं, रोज मंदिर में जाते हैं, गंगा नहाते हैं। ये गंगा नहाने वाले, मंदिर में जाने वाले मुक्त नहीं हो पाये, भक्त नहीं हो पाये। भक्ति का अर्थ ही कुछ दूसरा ही है, ये कौन समझा पायेगा। केवल गुरू कृपा से तुम समझ पाओगे लेकिन

तुम समझने की कोशिश ही नहीं करते। कीर्तन कर लिया अखंड, 24 घंटे में कीर्तन कर लिया और भक्त बन गये। 24 घंटे में रामायण समाप्त कर ली और अखंड पाठ हो गया। रामायण की एक चौपाई जीवन भर समझ में नहीं आयी और अहंकार कहता है मैं पाठ करता हूँ। पड़ोसी कहते हैं बड़े भक्त हैं रामायण पढ़ते हैं, रामायण पढ़ते हैं। उपन्यास नॉविल समझ में आ जाते हैं और रामायण की चौपाई में कोई विचार ही नहीं होता, क्या कहा जाय? कितना अंधेर है, अहंकार तृप्त हो रहा है।

भगवान कहते हैं- अहंकार विमूढ़ात्मा- विशेष मूढ़ हैं वो जो अपने को कर्त्ता मानता है बताइये, एक शब्द पर ध्यान नहीं जा रहा है। 'अहंकार विमूढ़ात्मा कर्त्ता अहमितिमन्यते' विशेष मूढ़ हैं तो भाई और मूढ़ बने रहें। सत्संग में आना आसान बात नहीं है, पाप आने न देंगे। आपका एक पुण्य है 'श्रद्धा' वो आपको यहां बैठाये हुये है और थोड़ी ही देर में जी ऊब जायगा। रात भर यहां नौटंकी होती रही और ऐसे बहादुर लोग हैं जाने कहां-कहां से गांव के लोग आ करके रात भर नौटंकी देखते रहे और यहां एक घंटा बैठना आपको मुश्किल है। मुश्किल है कि आसान, हर एक को? आप लोग तो बैठे हुये हो, श्रद्धालु हो लेकिन ये मामूली बात नहीं है। कोई-कोई तो इतनी ही देर में ऊब जायेंगे और ऊब करके चल देंगे और ये नौटंकी में रात भर बैठने वाले! ये क्या है तुम्हारी बुद्धि की लीला है, बुद्धि की जड़ता है। बुद्धि जड़ कब तक है याद रखना जब तक विनाशी का संबंध है तब तक हमारी तुम्हारी बुद्धि की जड़ता का अंत होगा नहीं। विनाशी से संबंधित बुद्धि की जड़ता का अंत होना नहीं और जड़ता का अंत हुये बिना, मूढ़ता का अंत हुये बिना, मान्यता का अंत हुये बिना तुम देह के पुजारी रहोगे, देव के पुजारी नहीं हो सकते। यहां पर जितने लोग बैठे हैं, सब देह के पुजारी हैं, बड़ा कड़ा शब्द लग रहा होगा। देह की पूजा, देह की पूजा क्या है? देह को देखना, देह को सजाना, देह को संवारना, देह को खिलाना, देह को मोटा-ताजा रखना, बाल ठीक करना, कपड़े ठीक करना हमारी देह की सुंदरता पर लोग मुग्ध हो जायें लोग यही कोशिश करना यह देह की पूजा है। हमारे भीतर परमात्मा के गुणों का विकास हो जाये, ये कोई कोशिश नहीं है। क्यों, देह के पूजक हो कि देव के? देह का पूजक देवपूजक नहीं हो सकता, बड़ी देर लगेगी।

हमारे कहने का मतलब ये नहीं है कि देह का श्रृंगार करना छोड़ दो। हमारे कहने का मतलब इतना ही है कि इतना तो समझ लो कि तुम देवपूजक नहीं हो, देहपूजक हो। देहपूजक, देवपूजक नहीं हो सकता। करो पूजा देह की, बुढ़ापा आ जायगा तुम्हारे काले बाले सफेद हो जायेंगे चाहे जितना पाउडर लगाओ, चाहे जितना लाली लगाओ और चाहे जितना अकड़ करके चलो, सब समाप्त हो जायगा। मृत्यु सब कुछ को व्यर्थ कर देगी। इसलिये किसी को होश आ जाये तो उसको जानो जो सदा रहने वाला है, उसको पकड़ो जो सदा रहने वाला है, उसको समझ लो, उसको करो जिससे तुम्हारे दुख मिटेंगे। दुख मिटेंगे दबेंगे नहीं। दुख दबाना तो पशु-पक्षी भी जानते हैं। मिट जाये इसके लिये भजन शब्द है। भजन भी तुम कुछ देर जप करने को, कीर्तन करने को, पाठ करने को, मंदिर जाने को भजन मान लेना। भगवान की बात मैं कह रहा हूँ अपनी ओर से नहीं। भगवान कहते हैं- 'येषां त्वन्तगतं पापं जनानां पुण्य कर्माणाम्' यानि जिनके पाप पुण्यकर्मों के द्वारा, ये बात आपको अपने व्यवहारिक जीवन में लानी है, जिनके पाप पुण्य कर्मों के द्वारा नष्ट हो गये हैं-

येषां त्वन्तगतं पापं जनानां पुण्य कर्माणाम् ते द्वंद्व मोह निर्मुक्ता, उनमें एक बात घटित होगी क्या? पाप न रहने से वियोग आयेगा लेकिन दुख न होगा, लाभ होगा लेकिन सुख, सुख से उछल न पड़ेगा, सुख-दुख, हानि-लाभ, संयोग-वियोग, मान-अपमान, भाग्यानुसार आएंगे लेकिन भजन करने वाला जिनके पाप नष्ट हो जायेंगे उन पर इनका प्रभाव न पड़ेगा। अब जरा झांक करके देखो आपकी क्या दशा है चाहे कितना भजन करते रहो। वियोग हो जाय तो भूल जायगा, लाभ हो जाय तो भूल जायगा, संयोग होगा सब भूल जायगा, सम्मान में अपमान में भूल जायगा। भगवान कहते हैं नहीं भजन कर सकते। द्वंद्व आयेंगे, ये दो चीजें घटित होंगी, पुण्य होंगे तो अनुकूलता होगी, पाप होंगे तो प्रतिकूलता होगी।

भगवान कहते हैं इतना पुण्य हो कि तुम्हारी बुद्धि इतनी शुद्ध हो जाय जितनी कि तुम इनसे विचलित न हो सको। 'जनानां पुण्य कर्माणाम् ते द्वंद मोह निर्मुक्ता' वही द्वंद्व के मोह से मुक्त हो करके 'भजन्ते मां दृढ़व्रता', मेरा भजन कर सकते हैं दृढ़व्रती होकर। इसका नाम भजन है। भजन का मतलब जप करना नहीं है। भजन का मतलब है भगवदाकार वृत्ति निंरतर बनी रहे। बड़ी सरल परिभाषा है भगवदाकार वृत्ति निरंतर बनी रहे। आत्मवान हो करके तुम

परमात्मवान, परमात्मा से नित्य संबंधित रहोगे, आत्मवान। देहवान हो करके तुम प्रकृति से संबंधित रहोगे, आत्मा से संबंधित न रह पाओगे। आत्मवान हो करके तुम परमात्मा से निरंतर भक्ति का अनुभव करो। भक्ति मांगनी न पड़ेगी। आत्मा हो करके तुम जानोगे- मैं परमात्मा से भिन्न हूँ ही नहीं।

अगर किरण अपने स्वरूप को जान ले कि मैं प्रकाशस्वरूप हूँ और फिर किरण देखेगी कि वह सूर्य से अभी अलग हो ही नहीं सकती। हो सकती है? दृष्टांत याद रखना- किरन को पता चल जाये कि मैं प्रकाशस्वरूप हूँ, मैं ही प्रकाश हूँ, मेरे प्रकाश से ये हरे नीले, काले कांच प्रकाशित हो रहे हैं। अगर ये किरन को पता चल गया है तो परमात्मा सूर्य की भक्ति के लिये उसको जप करना पड़ेगा? कीर्तन करना पड़ेगा? किरण तो देखेगी मैं सूर्य से अलग हो ही नहीं सकती। ये हरे, नीले, पीले कांच इन संबंध से जो ये मेरा रंग प्रतीत होता है, ये संग दोष है और यहां क्या है? लाल, हरा, नीला, कांच फूट जाये और किरन रोये- हाय मैं मरी वैसे ही यह चेतन स्वरूप ज्ञानस्वरूप चेतन जीवात्मा आत्मा ये रो रहा है, हाय मेरी पत्नी, हाय मेरा पुत्र! हाय मेरी पत्नी, मेरा धन गया। हे भगवान! यह वही दशा है किरन का अज्ञान। कांच के रंग को अपना रंग मानने लग गई, भूल गई संग को अपना रूप मानने लग गई, भूल गई मैं सूर्य की हूँ। तैसे ही हम भूल गये कि हम परमात्मा के हैं और हम किसके बन गये? कहीं माता के बन गये, पिता के बन गये, पति के बन गये, पत्नी के बन गये। बताओ तुम्हारी गीता रामायण क्या कर लेगी? क्या कह रहे हो तुम? तुम किसके बने हो परमात्मा के कि पति पत्नी पुत्र के माता पिता के? सोच लो जितने लोग बैठे हुये हो सब लोग यही परिचय दे रहे हो। ऊपर-ऊपर कथा सुन रहे हो, भीतर से हम किसके बेटा हैं, किसके बाप, किसकी पत्नी हैं, किसके पति? यह तुम्हारा असत् संग है या सत्संग।

कितना धोखा देते हो हाथ जोड़ करके। लगता है बड़े बढ़िया सत्संगी आये और हम इस आशा से बोल रहे हैं अब हमें पता चल गया है हम धोखा नहीं खाते तुम्हारी पूजाओं से। चाहे जितने हाथ जोड़ो। हम तो कहते हैं बड़े चालाक। अब तो हम देखते हैं बुद्धि कितनी साफ है। क्योंकि गीता का वाक्य हमें याद है- 'बुद्धया विशुद्धया युक्तो, मद्‌भक्तिं लभते पराम्।' अब इसकी व्याख्या हम न करेंगे लेकिन शुरू कहां से किया है- बुद्धया विशुद्धया बुद्धि कितनी विशुद्ध है वो आगे चल करके बड़ी लंबी यात्रा करने के बाद 'मद्‌भक्तिं

लभते पराम'। आज की चर्चा में कुछ इशारे किये गये अब आप इनका मनन करें ओर मनन करते हुये चाहो तो कोई तुम्हें रोकने वाला नहीं है।

जब तक तू चाहे देख ले (अभी नहीं और देख लो)

जब तक तू चाहे देख ले, जग में जो सुख असार है।
सुख से विरक्त लेते ही, मिल जाता मुक्ति द्वार है।।

त्यागी ही इस पथ में जा सके-2 प्रेमी ही उस प्रभु को पा सके
उसकी दया अनंत है-2, सबकी वो सुनता पुकार है।।
जब तक तू......

माया में अब न भूल तू-2, अभिमान में न फूल तू-2।
जो राग रंग दीखते-2, कुछ ही दिनों की बहार है-2।।
जब तक तू चाहे देख ले.....

तू मोह नींद में न सो-2, जीवन न अपना व्यर्थ खो।
अब तो शरण उसी की हो-2, जिसका असीम प्यार है।।
जब तक तू चाहे.....

कुछ न करो चुपके-चुपके, किसी से कहना भी नहीं है।
जो कुछ मिला है अपना न मान-2, सब कुछ के सच्चे स्वामी को जान-2
उससे पथिक विमुख न हो, जो सबका सिरजनहार है।।

•

कल्याण श्रीरामांक, वर्ष-46, अंक-1
सौर माघ, श्रीकृष्ण संवत् 5197 जनवरी 1972

परमात्मा राम और हमारी साधना

(लेखक- साधुवेष में एक पथिक)

प्रायः संसार में प्रत्येक मनुष्य जहां कहीं सौन्दर्य अथवा माधुर्य एवं ऐश्वर्य देखता है, उसकी ओर आकृष्ट हुये बिना नहीं रहता और जब कभी किसी में एक साथ ही अनुपम सौन्दर्य, अगाध माधुर्य तथा सर्वोपरि ऐश्वर्य का परिचय मिलता है, तब विज्ञ जनमानस उसकी ही निराकार ब्रह्म के नररूप में अवतरित आकार की ही उपासना को अपने जीवन का परम लक्ष्य निश्चित कर लेता है। त्रेतायुग में निराकार ब्रह्म के नराकार अवतार के अनुपम सौन्दर्य माधुर्य ऐश्वर्य की कथायें सुनकर सहज ही उनके दर्शन की अभिलाषा जाग्रत होती है। लाखों दर्शनाभिलाषी जनों में अनेक लोग जप करते हैं, अनेक लोग नाम संकीर्तन करते हैं तथा अनेक लोग भगवान श्रीराम की मूर्ति में मंत्रों द्वारा प्राण-प्रतिष्ठा कर वर्षों अपनी मान्यता के अनुसार अर्चन वन्दन रूप में भावोपासना करते हुये जीवन बिता देते हैं, पर दर्शन उनके लिये दुर्लभ ही रह जाते हैं।

राम की कृपा से संतों का सुसंग सुलभ होता है, उस सुसंगति को विवेक प्राप्त होता है, विवेक के सदुपयोग से मूढ़ता का अंत होता है, तभी साधक दर्शन का अधिकारी होता है। कुछ भक्तों का निर्णय है कि जो प्रेम से निरंतर राम के रूप का चिंतन करेगा तथा कभी किसी भी प्रलोभन से विचलित न होगा और राम के रूप का स्मरण-मनन एवं चरित्र का गान करते हुये उन्हीं के रूप के दर्शन की ध्यान में प्रतीक्षा करेगा, उसी के समक्ष ब्रह्मतत्व राम रूप में प्रकट होगा। जब कोई साधक भगवान के अतिरिक्त संसार में अन्य कुछ भी नहीं चाहता, उस निष्काम साधक को प्रभु की कृपा का अनुभव होता है। प्रभु की कृपा से ही प्रभु सुलभ होते हैं। जब हम सुनते हैं कि भगवान राम अखण्ड ज्ञानस्वरूप हैं, सच्चिदानंद हैं तब साधकों के लिये विशेष साधक द्वारा यह जान लेना संभव है कि असत् के साथ सत्, जड़ के साथ चेतन और दुःख के साथ आनन्दाभास के रूप में परमात्मा ही हमारे साथ है। **......** भगवान राम हम लोगों के साथ अपने सच्चिदानंद स्वरूप में अभिन्न ही हैं-

राम सच्चिदानन्द दिनेसा। नहिं तहं मोह निसा लवलेसा।।

(रामचरितमानस, 1/115/2½)

त्रेता के रामरूप से विमोहित होकर मुनियों के मन भी भ्रमित हो सकते हैं पर वे भगवान राम आज हमारे साथ जिस तरह नित्य-निरंतर हैं उस तरह उनके दर्शन से मोह-भ्रम का लेश भी नहीं रह सकता। यदि किसी का प्रश्न हो कि 'इस सहज साधना में पाठ-पूजा, जप कीर्तन, कथा श्रवण आदि की आवश्यकता है या नहीं?' तो इसका यही उत्तर है कि जहां विनाशी रामयप का कीर्तन, स्मरण, चिन्तन और ध्यान अनायास ही चलता रहता है, वहीं उस अभ्यास को हटाने के लिए अविनाशी राम के नामरूप, लीला कथा के कीर्तन, जप, स्मरण, चिन्तन, ध्यान का अभ्यास आवश्यक है। जब साधक किसी साधना में ही अटक कर संतुष्ट होता रहता है और साध्य तत्व की अभिन्नता का अनुभव नहीं कर पाता, तब वह जो भी साधना करता है, उसी को कहने में अपने आपको असमर्थ पाता है, क्योंकि जो भी साधन मिले हैं, वे सभी छूट जायेंगें जिस साधना, आराधना, उपासना, पूजा, जप कीर्तन में किसी भी वस्तु, व्यक्ति, शक्ति की अर्थात् किसी अन्य की अपेक्षा रहती है, उससे स्वतंत्रता नहीं आती। निरपेक्ष ही स्वतंत्र होता है, जो पर का आश्रय छोड़ देता है, वही 'स्व' में शांत होकर सत्यचेतन परमात्मा राम तत्व से नित्ययुक्त अथवा भक्त होता है।

भगवान राम के सगुण-साकार रूप का दर्शन वाह्य दृष्टि से ही सुलभ होता है। रूप और स्वरूप के दर्शन की दृष्टि भिन्न-भिन्न है। हमें समझाया गया है कि जिसकी सत्ता से अथवा जिसकी चेतना से जड़ साधकों द्वारा अर्थात् इंद्रियों द्वारा विषयों का ग्रहण होता है तथा मन रूपी साधन द्वारा सुख का भोग होता है और बुद्धिरूपी साधन द्वारा भोग के परिणम की जानकारी होते है और अन्त में सभी साधनों को साध लेने पर प्रज्ञारूपी साधन द्वारा ज्ञान में सच्चिदानंद का अनुभव होता है, वही परमात्मा रामतत्व हम सभी को नित्य सुलभ है। नित्य-निरंतर राम से विमुख रहने के कारण ही काम की परिधि में आबद्ध रहना होता है और राम की कृपा से प्राप्त साधन के सदुपयोग से काम से विमुख होकर परमात्मा राम के सम्मुख होना सुगम हो जाता है। अज्ञान में ही हम सब प्राणी राम से विमुख रहते हैं, ज्ञान में दृष्टि खुलने पर हम नित्य प्राप्त राम के सम्मुख होते हैं। ज्ञान में ही परमात्मा राम का दर्शन संभव है, प्रेम ही नित्य मिलन या नित्य योग सम्भव है।

ॐ

व्याख्यान बाजपेयी जी के यहाँ

5 दिसम्बर 83, कुटी

ध्यान किया नहीं जाता जहाँ क्रिया होती है वह कर्म है। ध्यान तो केवल देखना है देखना, जो है उसे देखो- इसी का नाम ध्यान है।

एक तो होता है करना। करना होता है अहंकार में। मैं जप करूँगा, मैं तप करूँगा, मैं इतना जप करता हूँ, इतनी पूजा करता हूँ, रोज दर्शन करता हूँ- ये अहंकार की क्रिया है। अहंकार जो कुछ करता है उसका भोक्ता बनता है। जैसे समुद्र में घड़ा, कोई समुद्र में पात्र, तो समुद्र तो अनंत है, उसमें अगाध जल है लेकिन घड़े के भीतर जब भर जाता तो छटांक भर का पात्र हो, सेर भर का हो, 5 सेर का हो, 5 मन का हो, समुद्र के भीतर जितने पात्र होंगे सब अपने को भरा हुआ मानेंगे। ऐसे ही अहंकार चाहे छोटा हो, चाहे बड़ा हो, चाहे जितना हो, चाहे मजदूर का हो, चाहे महाजन का हो, चाहे 4 दर्जा पास होने वाले का हो, चाहे डाक्टर का हो, चाहे वकील का हो- ये बड़े-छोटे अहंकार सब चेतन रूपी समुद्र में हैं और सब अपने को भरा हुआ मानते हैं और जब भरा हुआ मानते हैं तो जो भी शक्ति है वह अहंकार अपनी मानता है।

जैसे घड़े में जो जल है वह समुद्र का ही होता है। घड़ा तो कहता है- मैं भरा हूँ उसे समुद्र नहीं दिखाई देता, उसको अपना छोटा सा जो दायरा है, दीवार है, वही दिखाई पड़ती है। दीवार के भीतर है ना।

एक तो यह ध्यान दो- मैं अहं रूप में, अहंकार रूप में है, अहं परमात्मा में है और परमात्मा की शक्ति, परमात्मा का ज्ञान, परमात्मा का प्रेम जो हममें हैं यह अहंकार अपनी मान रहा है- मेरा, मेरा, मेरा, यही अज्ञान है।

ज्ञान में जब देखोगे तो लगेगा- वह अहंकार के भीतर है। जो अहंकार के भीतर ज्ञान है वह सीमित है, अहंकार के बाहर है उसकी कोई सीमा नहीं है। अहंकार के भीतर जो शक्ति है वह परमात्मा की है वह भी सीमित है लेकिनवही शक्ति अहंकार के बाहर जो है उसकी कोई सीमा नहीं है। अहंकार के भीतर जो प्रेम है, मैं प्रेम करता हूँ वह सीमित है लेकिन अखंड अनंत प्रेम स्वरूप परमात्मा उसका कोई अंत नहीं, कोई सीमा नहीं।

जो भी अहंकार के भीतर आ जाता है अहंकार उसका भोक्ता बन जाता है। अहंकार के बाहर जो है उसको अहंकार देख नहीं पाता है। जब गुरू ज्ञान में जाग्रत होता है तब पता चलता है, ये मेरा जो मैं मानता हूँ- मेरा मेरा सब परमात्मा का है। यह होश की बात है, सब परमात्मा का है, मेरा कुछ नहीं।

तुम लोग जो भी मेरा-मेरा मानते हो, ये सब अपना न मान करके सब परमात्मा की प्रकृति का है। मैं परमात्मा का हूँ और जो भी मेरे साथ है वह परमात्मा की प्रकृति का है। यहां से अहंकार फिर झुकता है, समर्पित होता है। अहंकार समर्पित होने में फिर जो कुछ भी अपने भीतर है, वह परमात्मा का और अपने बाहर है तो वह परमात्मा का।

जैसे श्वास तुम्हारे भीतर गई देह के। जब देह में फेफड़ों में गई तो वहां तो एक थोड़ी सी सीमा है लेकिन जहां से गई बाहर से, तो बाहर की हवा की कोई नापतौल है? और यही हवा भीतर जाती है थोड़े से फेफड़ों में श्वास में कम या ज्यादा। लगता है मैं श्वास ले रहा हूँ, मैं हवा ले रहा हूँ, मेरे भीतर हवा पेट में भरी है लेकिन बाहर की हवा की कोई नाप तौल है? तो जैसे-जैसे भीतर जाते-जाते श्वास सीमित हो जाती है तैसे भीतर जाते-जाते परमात्मा का सब कुछ सीमित हो जाता है। यही ज्ञान में देखो।

तो तुम करोगे- भगवान की प्राप्ति के लिये जप तो जप भगवान की प्राप्ति के लिये नहीं करना है। जप इसलिये करना है संसार का जप छूटे और भगवान का नाम याद आवे, संबंध जुड़े भगवान से इसके लिये जप करो। लेकिन पहली बात जो बताई गई अपने आप जो रहा है परमात्मा की शक्ति से उसे देखो तुम कुछ कर्ता न बनो। फिर जब मन चंचल हो तो मन चंचल हो तब कहाँ जिस मन की चंचलता को मैं देख रहा हूँ तो यह मन मैं नहीं हूँ जिसको मैं देखता हूँ वह मैं नहीं हूँ लेकिन अपने ऊपर ओढ़ लेता हूँ तो लगता है मैं मन हूँ मेरा मन है ये गलती हो गयी। मन मेरा नहीं है, बुद्धि मेरी नहीं है, अहंकार मेरा नहीं है, कुछ भी मेरा नहीं है, मैं भी नहीं। मैं अगर हूँ तो परमात्मा की शक्ति हूँ, परमात्मा का प्रेम हूँ, परमात्मा का ज्ञान हूँ। मेरा संबंध अनंत से है, अखंड से है, अगाध से है लेकिन अहंकार की सीमा में सब कुछ सीमित हो जाता है। तो ध्यान में कुछ न करो खाली ध्यान से देखो, श्वास को देखो। देखते-देखते शांत और मौन होकर जितना देखोगे मन चंचल हो तो कह दो- मन चंचल है मैं चंचल नहीं हूँ। मैं परमात्मा में स्थिर हूँ, मन संसार में चंचल है। बुद्धि में विचार आवें तो बुद्धि में

विचार आ रहे हैं, मुझमें विचार नहीं, मुझमें विचार की जरूरत नहीं। मेरी सत्ता से मेरी शक्ति से सब विचार उठ रहे हैं- ऐसा ध्यान से देखो। अपने को उससे न मिलाओ। मुख्य बात है न अपने को मन से मिलाओ, न अपने को बुद्धि से मिलाओ, न अपने को तन से मिलाओ। यह तन है, यह मन है, यह बुद्धि है- ऐसा देखो।

जितनी देर तुम बैठ करके 15 मिनट से शुरू करो फिर 1 घंटा तक बढ़ा ले जाओ, शांत और मौन- यह ध्यान हुआ। ध्यान में करना कुछ नहीं हुआ, ध्यान से देखना हुआ। जब यह न कर सको तब जप करो। अब जप में चाहे नारायण जप करो, चाहे वासुदेव जप करो, चाहे राम नाम लो, चाहे कृष्ण नाम लो, ये तप कर लो, ये परमात्मा के सब नाम हैं, उन्हीं की सब विभूतियां हैं। राम भी परमात्मा की विभूति, कृष्ण भी परमात्मा की विभूति। परमात्मा में ही विभूतियां मानो चमक रही हैं, प्रकाशित हो रही हैं। नाम इसलिये लेना है कि अविनाशी से संबंध हमारा जुड़ जाये। विनाशी नाम लेते हो माता का, पिता का, अपने शरीर का, परिवार का जितना हैं सब विनाशी नाम हैं, अविनाशी का नाम ले लो अविनाशी से संबंध जुड़ जाये तब नाम जपो। मंत्र जप करो। मंत्र जप में चाहे आठ अक्षर का जपो, चाहे द्वादश अक्षर जपो। इसमें भी फरक है। अगर तुम्हें निराकार समझ में आता है तो निराकार का मंत्र अलग है, साकार का मंत्र अलग है जबकि निराकार साकार दोनों में कोई भेद नहीं है। जैसे निराकार अग्नि दिखाई नहीं पड़ती, जब वस्तु से मिल गई साकार अग्नि सब देखते हैं। आकार जब समाप्त हो जाता है तब अग्नि कहीं चली नहीं जाती है- अपने स्वरूप में स्थित है। वह किसी आकार के संग से आकारवत् प्रतीत होती है। जैसे- चेतना देहाकार बन गई, चेतना विषयाकार बन गई, चेतना क्रोधाकार बन गई, ये जो आकार है ना ये चेतना ही की शक्ति ही जैसे 'आत्मा सर्वमयो नित्यं' ऐसा पढ़ने सुनने में आता है। तुम्हीं सर्वमय हो। तुम्हीं क्रोधमय हो, तुम्हीं काम मय हो, तुम्हीं लोभमय हो। 'मय' शब्द कह रहा हूँ, क्रोध नहीं हो क्रोधमय हो।

जैसे शरीर अनेक हैं ना लेकिन ये ज्ञान देहमय बन गया। अगर कोई कहता है काला, गोरा, मोटा, दुबला, ब्राह्मण, क्षत्रिय सब तुम्हीं बन गये। ये सर्वमय जो तुम बने हो, किसी मय न हो करके लेकिन फिर सोचा जाता है- मैं ब्रह्ममय हूँ, मैं परमात्मामय हूँ। परमात्मा अखंड है, अनंत है- उससे मिल जाओगे, यही अज्ञान है। देह से मिल करके देह को भीतर रख लिया तो देही

बन गये। माता-पिता को रख लिया तो तुम पुत्र-पुत्री हो गये, पति को रख लिया तो तुम पत्नी हो गये। यह सब तुम्हारे ज्ञान में भर जाते हैं नाम रूप मिथ्या, उसी का असर पड़ता है। ज्ञान कहता है अपने भीतर कुछ न भरो। अपने को कहीं न रखो, न अपने में कुछ रखो। अपने में कुछ रख लोगे तो लगेगा मेरा और अपने को कहीं रख दोगे तो लगेगा मैं। देह को रख दिया देह में अपने को लिया ज्ञान को तो मैं बैठा हूँ अब देखो- देह बैठी है लगता है मैं बैठा हूँ अपने को देही बन गये। मैं चल रहा हूँ, मैं उठ रहा हूँ, मैं बैठ रहा हूँ और अपने में परिवार रख लिया तो ये मेरे पिता हैं, मेरी माता हैं, मेरा धन है, मेरी भूमि है- ये जो कुछ अपने में रख लोगे वह तुम्हें अपना मालूम होगा। ये ज्ञान में तुमने रख लिया है। ज्ञान सत्य है ज्ञान में जो रखा है वह सब मिथ्या है। यह है थोड़ी सी बात।

बार-बार यही सोचो- हमें किसकी याद आती है, जिसको ज्ञान में रख लिया है और मैं किससे मिल जाता हूँ जिसमें मैंने अपने को रख दिया है- यह है अज्ञान। कभी-कभी ध्यान का मतलब है अपने को सबसे अलग करके जहां रख लिया है वहां से अपने को हटा लेना जो रख दिया उसको हटा दो।

फिर तुम क्या बचे? ज्ञान तुम शुद्ध चेतन तत्व तुम क्यों केवल ज्ञानस्वरूप बचे। बुद्धि में जो यह बैठ जाये इससे सब भ्रम का अंत हो जाये। इससे ऊँची साधना फिर नहीं है। तो पहले श्वास को देखो फिर जितना मन शांत होगा तो भीतर ध्वनि हो रही है अनाहत। यह ध्वनि दाहिने कान से सुननी चाहिए। कई तरह के नाद होते हैं, वह होते ही रहते हैं, हम बात करें, हँसें रोयें, चलते ही रहते हैं। उसके पीछे फिर चेतना है- 'नाद बिन्दु कलातीतं तस्मै श्री गुरवै नमः'- गुरूतत्व उसके भी पीछे है। तो जैसे-जैसे एकाग्रता आयेगी तैसे तुम्हारा भीतर प्रवेश होगा। यह बाहर की साधना में दौड़भाग होती है। भीतर की साधना में न कहीं आना न जाना, खाली देखते चले जाना। जितना मौन और शान्ति बढ़ेगी उतना भीतर तुम घुसोगे फिर जब बाहर आओगे तो बाहर मुकाबला पड़ेगा- वासना है, कामना है, इच्छायें हैं यह सब बाहर है- ऐसा देखो। यह सब बाहर प्रकृति में है, भीतर जाओ तो वहां कुछ नहीं।

जैसे समुद्र के भीतर कोई गोता लगा जाय, जल के भीतर कुछ नहीं, ऊपर-ऊपर लहरें उठ रहीं हैं, सब दिखायी पड़ रही हैं लेकिन भीतर चले जाओ तो कुछ नहीं। ऐसे ही चेतना के गहरे उतर जाओ तो अखंड परमात्मा की

अनुभूति होती है, बाहर आ जाओ तो संसार की प्रतीति होती है- बस इतना ही फरक है बाहर-भीतर का।

ये ध्यान से देखना चाहिये- बाहर क्या है? भीतर क्या है? संग से सब चीजें उत्पन्न होती हैं। संग से देखो- प्रकृति में सब कुछ छिपा है, चेतना में कुछ नहीं है चेतना तो निर्विकार है, आत्मा निर्विकार है, असंग है कोई वहां न सुख है, न दुख है, न जन्म है, न मृत्यु है, ये सब अहंकार में है।

अहंकार रूपी घड़े के भीतर सारे प्रभाव हैं। यह भी ध्यान से देखना चाहिये कि क्रोध है अहंकार के भीतर है, चेतना में क्रोध नहीं है, चेतना के कारण क्रोध की प्रतीति हो रही है। लोभ की प्रतीति हो रही है। चेतना तो निर्विकार है, निरंतर निर्विकार है- ऐसा अनुभव करो। उसके लिये अपना जप का मन हो तो जप किया करो। जप भी अलग-अलग हैं। जो पसंद आवे लेकिन जिसका जप करो, नारायण कहो तो ये न कहो, कहीं है। राम कहो तो यह नहीं कि अयोध्या में हैं, मथुरा वृंदावन में हैं। सबसे पहले चेतन रूप में परमात्मा हमारे साथ है। राम हमारे साथ हैं, राम हमींमय हैं हमीमय। ये जो हम-हम निकल रहा है, राम ही हम हममय बन गया है। राम ही हममय हैं। हमारे रूप में ही राम प्रकट हो रहा है। हमारे रूप में कृष्ण प्रगट हो रहा है। नारायण सच्चिदानंद है (सत् चित् आनंद)। वही हमारा सुरूप है।

अज्ञान में देह से मिल गये हैं, देहमय बने हुये हैं, यह अज्ञान है। संबंधीमय बने हुये हैं। ये हमारा बनाया हुआ सुख-दुख है। इससे सावधान रहो तो जो है वह छोड़ दो पीछे, अपने को अलग रखो।

देह का अभिमान छोड़ो- मैं देह हूँ। यह हाड़ मांस की बनी है क्योंकि इसमें चेतन है इसलिये सुन्दर मालूम देती है। यह सुन्दरता उस प्रभु की है। किसी बालक को गोद में खिलाओ तो सुन्दरता जो बाहर चमक रही है ये हाड़मांस की सुन्दरता नहीं है। चेतना का संबंध टूट जायेगा तो तुम उस बालक को, उस पति को, उस पत्नी को, उस माता को, पिता को सब मिट्टी में दबा दोगे कि नहीं, जला दोगे कि नहीं। अगर ये सुन्दर होता तो क्यों जला दिया जाता?

जो कितने-कितने साल शरीर सुन्दर मालुम होता है, क्यों जी तुम्हारे शरीर का संबंध अगर चेतना से संबंध टूट जाये तो फिर उसे कोई घर में रखेगा? और 24 घंटे में दुर्गन्ध आने लग जायेगी कि नहीं? कि तुम्हें कोई प्यार करेगा? हैं, कोई प्यार करेगा देह को? कोई नहीं। प्यार किसको किया जाता है, हाड़मांस

को नहीं किया जाता लेकिन लगता है देह बड़ी सुन्दर है जैसे हाड़मांस बड़े सुन्दर हों। यह तुम भ्रम अगर निकाल दो तो बड़ा अच्छा है। हाड़मांस सुन्दर नहीं है। चेतना सौन्दर्यमय है उसी का सौन्दर्य सबमें चमक रहा है।

प्यार करो किसी से मिलो ये चेतना का सब चमत्कार है। ये हाड़मांस की सुन्दरता थोड़े ही है ये तो अभी जो कितने कितने 20 बरस, 40 बरस, 50 बरस जो देह सुन्दर मालूम होती है, वही थोड़े दिनों में, 24 घंटे में दुर्गन्ध पैदा हो जायेगी, सड़न पैदा हो जायेगी। हो जायेगी कि नहीं।

इस देही का गर्व क्या, कहा देह से प्रीति।
बात करत ढह जात है, बालू की सी भीति।।

तो देह का गर्व न करना चाहिये। हम बड़े बलवान हैं, हम बड़े अच्छे हैं। हम बड़े सुन्दर हैं। यह हमारे हाथ हैं, हमारा मुँह है क्यों हमारा हमारा। क्योंजी मेरी देह है, मेरे हाथ हैं, मेरा मुँह है- ऐसा मानती हो कि नहीं- ये तो हमसे बोलती ही नहीं।

ये मेरा कुछ नहीं है, सब प्रकृति का है, मैं तो परमात्मा का चेतन-स्वरूप हूँ, निर्विकार हूँ, नित्य मुक्त हूँ। कोई बंधन नहीं है। अहंकार बीच में आ करके सब बन रहा है। यही सुख-दुख का भोग कर रहा है। ऐसा ज्ञान रखो।

सतर्क रहो बस ज्यादा कुछ करना धरना नहीं है। इस ज्ञान को पकड़ लो तो बस मुक्त ही हो। इस ज्ञान को भूल जाओ तो तुम्हें भगवान भी मिल जायें तब भी तुम्हारे बंधन न छूटेंगे। है ना।

•

ॐ

मैं क्या मागूँ

श्रीमन नारायण नारायण नारायण, श्रीमन नारायण नारायण नारायण।
श्रीमन नारायण नारायण नारायण, श्रीमन नारायण नारायण नारायण।

सर्वनामरूपों में विद्यमान परमात्मदेव को प्रणाम करते हुये आपस में हम अपने आपको समझने की कोशिश करें। बाल्यकाल से सुना और मान लिया, उस समय बुद्धि विकसित न थी और सबसे बड़ी नासमझी यह है कि बुद्धि के विकसित होने पर भी माने हुये को हम जान सकते हैं पर जानने की कोशिश नहीं करते। मानना मन से होता है, जानना बुद्धि से होता है। दर्शन बुद्धि से भी नहीं होता, दर्शन तो प्रज्ञा की जाग्रति पर होता है। ये दर्शन शब्द का प्रयोग जो हम करते हैं, हम दर्शन करने जा रहे हैं, भगवान के, संत के- ये दर्शन नहीं हैं। भगवान के कोई दर्शन कर ले- अगर आप रामायण को मानते हैं तो स्पष्ट कर दिया है भगवान के ही द्वारा 'मम दर्शन फल' मेरे दर्शन का फल 'परम अनूपा' परम जिसके आगे कुछ है ही नहीं और 'अनूपा' उसकी उपमा नहीं दी जा सकती।

'मम दर्शन फल परम अनूपा। जीव पाव निज सहज स्वरूपा।।' जीव अपने स्वरूप को पा जाता है।

थोड़ आप लोग शिक्षित देवियां और आप सज्जन ध्यान दें- स्वरूप और रूप। रूप तो ये है जो आंखों से दिखता है लेकिन स्वरूप आंखों से नहीं दिखता और हमारे गुरूजनों का निर्णय है कि रूप के प्रकाशक रूप के पीछे स्वरूप, स्वरूप का बोध जब तक नहीं है तब तक कितने तीर्थ करे, व्रत करे, जप करे, तप करे, यज्ञ करे, दान करे, कुछ भी करे, स्वरूप में बुद्धि के स्थिर हुये बिना सत्य का बोध, परमात्मा का दर्शन नहीं हो सकता। स्वरूप जो है जिसको स्वयं कहते हैं- यही दर्शन का द्वार है। संतमत की साधना यही है। संतमत की साधना कुछ और है शास्त्रसम्मत विद्वानों पंडितों की साधना कुछ और है। संतमत की साधना भीतर की ओर चलती है, बाकी और साधनायें हमें बाहर की ओर ले जाती हैं।

संसार में कुछ चाहिये तो हमें साधना की गति बाहर रहेगी, परमात्मा को चाहिये तो हमें बाहर से भीतर लौटना पड़ेगा। बाहर जो कुछ प्राप्त होता है,

बहुत श्रम करना पड़ जाता है और जो प्राप्त होता है, रह नहीं जाता। ये छोटा सा शब्द आप याद रखो, जो मिला है रहेगा नहीं। इतने लोग बैठे हो जो मिला है वह रहेगा नहीं और कैसी विचित्र बात है रहेगा नहीं फिर भी नियत क्या है? मूर्ख नहीं बड़े-बड़े विद्वान उसी को रखना चाहते हैं। उसी के रहने की प्रार्थना करते हैं पूजा करते हैं भगवान से मनौती, देवी-देवताओं को मानते हैं- भगवान रह जाये बच जाये। यह कई बार कहा जा चुका है कि मनुष्य के भीतर अगर भय न होता और लालच न होता तो मंदिर में आने की कोई जरूरत ही न थी देवी-देवताओं की कोई उपासना की आवश्यकता न थी। भय और लालच। भय तो ये है- छूट न जाये, लालच है- जो नहीं है वह मिल जाये। मंदिर में जाने वाला, भगवान से प्रार्थना करने वाला, तीर्थों में जाने वाला? दक्षिण के मंदिरों में बड़ी भीड़ें लगती हैं, शायद ही कोई ढूंढ़ने से मिले जो भगवान के लिये भगवान के मंदिर में जाता हो। कुछ पाने के लिये जाता है, कुछ बचाने के लिए जाता है, पाना और बचाना। पाना जो चाहता है वह संसार का है, बचाना वह चाहता है जो संसार का है। (स्वयं में) अगर बुद्धि स्थिर कर लो तो न कुछ संसार से पाने की जरूरत है, न कुछ बचाने की जरूरत है क्योंकि स्वयं ही सत्य है। जरा यह संतमत याद रखना- आप सत्य हैं लेकिन अहंकार झूठा है। अहंकार से बढ़ करके संसार में कोई झूठा नहीं और (अहं) से अधिक कोई सत्य नहीं- यह बड़ा छोटा सा फर्क है अहं और अहंकार। अहं तो है ज्ञान।

जितने लोग यहां उपस्थित हो, जब 'हम' कहते हो यही ज्ञान है। 2-3 बार कभी बताया जा चुका है फिर दुहराते हैं भूल न जाये। 'हम' कहते हो ये ज्ञान है। यह 'हम' संसार का नहीं है, ये परमात्मा का है, परमात्मा में है सदा रहेगा। रामायण की चौपाई आपको याद होगी- ये 'हम' जो है ईश्वर अंश है, 'हम' ईश्वर अंश जीव अविनाशी है विनाशी नहीं, चेतन है जड़ नहीं है, अमल है, शुद्ध है अशुद्ध नहीं और सुखराशी है, यहां दुख है ही नहीं। युक्ति बताई थी। फिर याद दिलाते हैं थोड़ी देर के लिये जब कभी आपको दुख घेरे, याद रखना- दुख से घिरा हुआ मनुष्य दिखता है दुख का घेरा चारों तरफ दिखता है लेकिन जो घिरा है वहां दुख नहीं प्रवेश कर पाता। बड़ी विचित्र बात है लेकिन हम आज से अगर आपको याद रह जाय सांसारिक व्यवहार में परिचय दो- मैं कौन हूँ- ब्राह्मण क्षत्रिय शूद्र वैश्य पत्नी पिता पुत्र हम किसी के बेटा, किसी के पिता, किसी की पत्नी किसी के पति।

लेकिन साधन करने वाले, भगवान को मानने वाले, भगवान की चर्चा सुनने वाले गीता रामायण का पाठ करने वाले जरा गीता का रामायण का अनादर न करे, अनादर कर रहे हैं, बड़ा भारी अपराध है रामायण का अनादर, गीता का अनादर, वह कैसे? जब रामायण में लिखा है- ठीक ठीक आपका परिचय दे दिया गया है कि तुम (संसारी नहीं हो) **'ब्रह्मैवाहं न संसारी नित्य मुक्तो न शोक भाक'** मैं परमात्मा का हूँ संसारी नहीं हूँ मैं नित्य मुक्त हूँ मुझमें शोक नहीं है। ऐसा मेरा सुरूप लेकिन हम रूप में अटक गये। आपकी आंखें रूप में अटक जाती हैं, स्वरूप को नहीं देख पातीं। महाराज चाहे जितना पूजा-पाठ करो, पूजा-पाठ से इतनी बुद्धि शुद्ध हो जाये तो पूजा पाठ सार्थक है और नहीं तो करते रहो जब तक बुद्धि शुद्ध न होगी तब तक स्वरूप का बोध न होगा और आपकी पूजा-पाठ का अहंकार ही भोगी बना रहेगा। मैंने इतना जप किया, इतनी पूजा की, इतना तप किया, इतना पाठ किया, इतना सत्संग किया।

2-4 बातें हैं- प्रथम दिन की बैठक में आपको बताया गया था। श्रद्धावान ही संतसंग का आदर करता है और संतसंग का आदर करने वाला ही विवेकी होता है और विवेकी होने के दो ही लाभ हैं- मोह दूर हो जाता है, भ्रम दूर हो जाता है। मोह है बुद्धि में और भ्रम है मन में तो क्या होता है अंधकार में हम बुद्धि के द्वारा पकड़ते चले जाते हैं लेकिन देख नहीं पाते और भ्रमित होकर जो प्राप्त शक्ति है उसका दुरूपयोग करते चले जाते हैं, सत्य के लिये उपयोग नहीं कर पाते। अब बताओ कौन भगवान, कौन गीता, कौन रामायण हमें मुक्ति भक्ति शांति दे पायेगी। नगद हम लोग बैठे हैं। करने के लिये बहुत कर चुके हैं लेकिन न मुक्ति का पता, न भक्ति का पता, न शांति का पता। अब भी अशांत होते हैं, अब भी बंधन की प्रतीति होती है, चिन्तायें घेर लेती हैं, भय घेर लेता है। होश नहीं रहता और हम कहते हैं सतसंग कर रहे हैं, गीता पढ़ रहे हैं, रामायण का पाठ कर रहे हैं। सचमुच संतों का संग नहीं मिला क्योंकि संतसंग से ही प्रेरणा मिलती है, जाग्रति आती है। इतना भी न हम जान पाये कि अपने को न जाने पाये और भगवान को खोजने चले- ईश्वर कहां है और आपने ये पता न लगाया- हम कहां हैं? आप कहोगे- बैठे तो हैं सामने। (कितनी मूढ़ता, कितनी मूर्खता) ये बैठी है देह, देह बैठी है। देह के भीतर कौन है, एक प्रश्न हल करो चाहे 6 महीने लग जायें। देह के भीतर कौन है, देह तो आंखों से दीखती है, जो देह के भीतर है वह आंखों से नहीं दीखता। आकार आंखों से दीखता है

निराकार आंखों से नहीं दीखता। निराकार में जो आकार है और आकार में जो निराकार है, ऐसा जो जान लेता है वही तत्ववेत्ता है। जहां हो वहीं आकार में निराकार को देखो और निराकार के ही आकारों को प्रकाशित देखो- बस हो गया न कुछ छोड़ना है न कुछ पकड़ना है और लोग बहस करते हैं- ईश्वर साकार है कि निराकार? और हम तुमसे पूछते हैं- तुम साकार हो कि निराकार? तो क्या उत्तर होगा आपका? कोई बताओ- आप साकार हो कि निराकार? इन आंखों से आकार दीख रहा है कि नहीं? आंखों से जो आकार दीख रहा है तो तुम साकार हो कि निराकार? कितना छोटा-सा प्रश्न? कई उत्तर आते हैं लेकिन टालो नहीं। प्रभु की कृपा से जो अवसर मिला है, ये जीवन में जाग्रति का अवसर है।

मोह निशा जग सोवनिहारा- ऐसे ही संतों ने कहा है पित्ता मोहमयी समाधि मदिरा उन्मत्त जगत भूषन।

सारे जगत के प्राणी मोहरूपी मदिरा के नशे में मोहित हो रहे हैं। शराब का नशा तो कुछ देर में उतर जाता है गिरता है नाली में गिरता है सड़क में गिरता है। उतर जाता है तो होश आ जाता है। यहां जीवन बीत गया मोहरूपी मदिरा को पी करके उन्मत्त हुआ जीव मेरा, मेरा, मेरा। वह तो गिरता है नाली में, यहां तो न जाने कब से संसार के शरीर रूपी नर्क में गिरे हुये हैं हम लोग। नरक में जो सामान है सब शरीर में है। अगर शरीर का सामान बेचा जाय- हड्डी, चमड़ा, मांस तो 5-10 रूपये से ज्यादा नहीं बिकेगा। यह है देह। इतनी घृणित चीजें इस देह में हैं लेकिन वाह क्या चमत्कार है- परमात्मा के चेतन स्वरूप का, उस निराकार चेतन स्वरूप का कितने-कितने बरस देह को जीते हुये बीत गये न इसमें दुर्गन्ध आती है, पसीना निकलता है धो डालते हैं फिर वही मल निकलते हैं, आंखों से कानों से मल-मूत्र सब धो देने से साफ। अगर चेतन का संबंध शरीर से छूट जाये तो 24 घंटे के भीतर कितनी बदबू आयेगी। प्यारे से प्यारे पुत्र, माता-पिता, के शरीरों को आपको जमीन में गाड़ देना पड़ेगा या जला देना पड़ेगा। इतने बरसों तक जो चल रहा है। कैसा चमत्कार है। महात्मा कोई चमत्कार दिखा देता है। कहीं फोटो से भभूत गिरती है तो बड़ी दुनियां दौड़ती है बड़े सिद्ध महात्मा- खाली फोटो से भभूत गिर रही है अथवा कोई रोग दूर कर दिया किसी संत ने अपना हाथ फेर दिया और उस परमात्मा के चमत्कार को अभी तक अंधी आंखें नहीं देख पा रही हैं।

शरीर जब से जन्म लिया तब से कितना चमत्कार है कोई रोग नहीं, कोई दोष नहीं। सांस चल रही है, धड़कन चल रही है, भूख लग रही है, भोजन पच रहा है, रक्त बन रहा है। ये किसने अच्छा कर दिया, यह किसने हाथ फेरा? कोई कष्ट नहीं। वह तो असंयम है, असंयम से जीते हैं आप लोग। पूर्व का कोई हिंसात्मक कर्म का भोग होता है तब हमें भोगना पड़ता है दुख वरना परमात्मा की ओर से कैसा सुन्दर शरीर, कैसी आंखें, कैसे कान, कैसी बुद्धि, सब शुद्ध क्या चमत्कार है! न किसी से भभूत ली, न किसी से हाथ फिराया? खाते हैं, पीते हैं, मौज से हँसते हैं, चलते हैं, सोते हैं, जागते हैं, ऐसा चमत्कार?

एक बार हमने एक महात्मा को सुना- बड़े सिद्ध पुरूष हैं, बड़े अच्छे हैं, इतने विरक्त हैं, न कहीं जाते हैं, न कुछ मांगते हैं, और न जाड़ा में कपड़ा रखते हैं, न कुछ खाते हैं तो हमारे मन में आया दर्शन करें। तुरंत उसी दिन हमें बोध हुआ- तुम उस महात्मा के दर्शन करने जाते हो जो भोजन में कहीं मिल गया तो खा लेता है कपड़ा नहीं ओढ़ता तुम्हारे भीतर ऐसा महान् आत्मा है चेतन स्वरूप न इसको जाड़ा लगै, न गर्मी लगै, न भूख लगै, न प्यास लगै- यह चेतन तत्व जिसके द्वारा यह जड़ शरीर चल रहा है, असुन्दर सुन्दर दीख रहा है एक यंत्रवत् कैसी आंखें चल रही हैं, कैसी पलक गिर रही है, कैसी सांस चल रही है। पलक ऐसे-ऐसे ये कौन गिराता है, कभी होश आया? मुर्दा से कहो- पलक हिलाओ, हिलायेगा? यहां पलक गिर रही है भगवान की मूर्ति का ध्यान करते हो। पलक के उठते और गिरते हुये का ध्यान करो तो शायद परमात्मा का आज ही पता चल जायेगा- यह है परमात्मा।

अगर परमात्मा न होता तो पलक कैसे गिरती, पलक कैसे उठती। भूख कैसे लगती, भोजन कैसे पचता, रक्त कैसे बनता, रस कैसे बनता। अन्न और जल से मन बुद्धि चित्त अहंकार इतने सूक्ष्म तत्व बने हुये हैं। संसार का कोई वैज्ञानिक अभी तक न बना पाया है और न बना पायेगा- ऐसा चमत्कार घटित हो रहा है रोज-रोज। हमारी अंधी आंखें इसको देख नहीं पा रही हैं। संसार की कुछ चीजों में कुछ परिवर्तन देखते हैं तो बड़े सिद्ध महात्मा, सिद्ध परमात्मा का पता तक नहीं चल रहा। आप होश में सुन रहे हो कि नहीं। भिखारी न बनो तुम परमात्मा में हो परमात्मा पूर्ण है भिखारी मत बनो। अगर तुम्हारे आस-पास कोई है तो दानी बनो, धन नहीं है तो मान का दान दो। चाहने वालों को, प्यार का दान दो चाहने वालों को, शरीर को स्वयं को सेवा में लाभ दो लेकिन तुम किसी

से कुछ न चाहो यहां आने वालो। यहां से तो शुरू करो साधना।

तन श्रमी हो, मन संयमी हो, हृदय अनुरागी हो, चित्त विरागी हो, बुद्धि विवेकी हो, अहंकार अभिमान शून्य हो- इतनी बात मानवता की पूर्णता के लिये करना है।

(मैं क्या मांगू)2 जब मेरा सब कुछ भार तुम्हीं में परमात्मन्।
मैं क्या मांगू....

पता चला बिना मांगे इतना मिला है, हम देख ही नहीं पा रहे हैं और
मांगने की आदत अभी नहीं छूटती
(जाने अनजाने)2 जीवन का निस्तार तुम्हीं में परमात्मन्।।
मैं क्या मांगू....

सोचो देख लो अभी-अभी
(धड़कन नाड़ी प्राणों की गति)2 तन का पाचन विधिवत् पोषण।

इनमें से, इन कामों में कोई तुम करते हो? एक काम तुम नहीं कर सकते
दिन रात सब चलता है।
धड़कन नाड़ी प्राणों की गति, पाचन तन का विधिवत् पोषण।
चलता है जन्म मरण तक सब व्यापार तुम्हीं में परमात्मन्।।
मैं क्या मांगू......

अब पता चला
(यह अहंकार अपने ही दोषों से अगणित दुख पाता है)2

लेकिन बड़ी सुन्दर बात है
इस (महारोग का)2 होता है उपचार तुम्हीं में परमात्मन्।।
मैं क्या मांगू....

और एक दर्शन
(सुख के पीछे भागते हुये)2 (जब हम अतिशय थक जाते हैं)2

क्या सुन्दर बात है
[(विश्राम सुलभ)2 होता है]2 मन के पार तुम्हीं में परमात्मन्।
मैं क्या मांगू....

एक दर्शन
ज्यों सागर में तरंग रहती ऐसे हम रहते हैं तुममें।

कभी भिन्नता है ही नहीं, उसी से उत्पन्न, उसी में चलना, उसी में लीन हो जाना
ज्यों सागर में तरंग रहती ऐसे हम रहते हैं तुममें।
(तुम ही तो अपने हो अपना)2 अधिकार तुम्हीं में परमात्मन्।।
मैं क्या मांगू....

जिसका कोई भी रूप नहीं... ये दर्शन की दृष्टि है।
(जिसका कोई भी रूप नहीं)2 (वह सर्वरूपमय तुम ही हो)2
यह सभी बिगड़ते बनते हैं, देख लेना आसपास
यह सभी बिगड़ते बनते हैं, आकार तुम्हीं में परमात्मन्।।
मैं क्या मांगू.....

(उत्तर दक्षिण पूरब पश्चिम से पथ कितने ही दिखते हैं)2।
(हम पथिक कहीं हो)2 मिलते हैं सब द्वार तुम्हीं में परमात्मन्।।
मैं क्या मांगू जब मेरा सब कुछ भार तुम्हीं में परमात्मन्।
जाने अनजाने जीवन का निस्तार तुम्हीं में परमात्मन्।।
मैं क्या मांगू....

•

ॐ

तुम्हीं में यह जीवन जिये जा रहा हूँ

अहंकार जब समर्पित होता है अपनी शक्ति से निराश होने पर जब अपना वश नहीं चलता, दोषों की निवृत्ति के लिये, अशांति को हटाने के लिये, दुख को मिटाने के लिए तब अहंकार समर्पित होता है परमसत्ता के प्रति-

तुम्हीं में यह जीवन जिये जा रहा हूँ
(जो कुछ दे रहे हो लिये जा रहा हूँ)2
तुम्हीं में यह जीवन जिये जा रहा हूँ
तुम्हीं में सचेतन अहंकार तन मन

अभी लगता था मैं सब कुछ कर रहा हूँ अब भी हम लोग, हम अभी-अभी भोजन करके आ रहे हैं, हम अमुक स्थान से आ रहे हैं, यहां जा रहे हैं, यह हमें करना है। अभी तक अहंकार को पता नहीं, उसके पास है ही क्या उसका? जो अकड़ता है मुझे यह करना है, मैं ये कर चुका हूँ। जब होश आता है तब पता चलता है पैर भी न उठा पायेगा एकदिन जो कहता है मैं चल करके आया हूँ। हाथ न उठेंगे, पैर न उठेंगे, आंखें देख न पायेंगी, सुनना चाहेगा सुन न पायेगा, करना चाहेगा कर न पायेगा और अभी कह रहा है मैं कर रहा हूँ, मैं भोजन करके आ रहा हूँ। पूछो- भूख कौन लगाता है?, भोजन कौन पचाता है? रस कौन बनाता है, होश ही नहीं अंधा अहंकार। अगर परमात्मा के दर्शन में, बोध में कोई भी रुकावट है तो परमात्मा नहीं रोका, अहंकार ही रोकता है। अहंकार अहं के आकार, आकार क्या है मेरा? मेरा। यह बात आप जैसे साधकों को याद रखना चाहिये, दिन में अनेकों बार याद करो- मेरा जब तक कहोगे आकार नहीं मिटेगा। अहंकार पूजा, पाठ, जप, तप, कीर्तन, भगवान के दर्शन से भी अहंकार नहीं मिटता। ईमानदार हो जाओ- मेरा कुछ है ही नहीं, सब प्रभु का है फिर आकार समाप्त हो जायेंगे।

तुम्हीं से चला करती प्राणों की धड़कन
तुम्हीं में सचेतन (अहंकार तन-मन)2
तुम्हीं में ये दर्शन किये जा रहा हूँ-2
जो कुछ दे रहो हो, लिये जा रहा हूँ-2
असत के सदा आश्रय हो तुम्हीं सत्

● जो कुछ भी दिखता है वह नाशवान। जो कुछ भी नाशवान है उसी अविनाशी में है- कितनी सरल साधना है। विनाशी देह को देखो, अभी तो लगता है मैं ही बैठा हूँ- काला, गोरा, मोटा, दुबला। जो सत्संग में आने वाले हैं सावधान हो जायें- यह देह तुम नहीं हो, देह तुम्हारी नहीं है और जब तक देह मेरी मालूम देती है, देह में मालूम होती है तब न रामायण का असर हुआ, न गीता का असर हुआ, न भागवत का असर हुआ, न मंदिर में जाने का असर हुआ। तब असर है- अहंकार पकड़े बैठा है बेईमानी नहीं छोड़ रहा। बड़ी छोटी सी बात, बड़ी युक्ति है- जो कुछ असत् है, विनाशी है, उसी अविनाशी से ही प्रकाशित हो रहा है।

असत् के सदा आश्रय हो तुम्हीं सत
तुम्हीं में विषय विष (तुम्हीं में है अमृत)2
(पिलाते हो जो कुछ)2 पिये जा रहा हूँ
जो कुछ दे रहो हो (लिये जा रहा हूँ)2
तुम्हीं में यह दर्शन किये जा रहा हूँ।

जहां भी रहूँ बस रहे ध्यान तुम पर
जहां भी रहूँ ध्यान से तुमको देखूँ

● ध्यान कहते ही उसे हैं जिससे देखा जाता है। ध्यान किया नहीं जाता। बहुत दिन हम समझते रहे कि हमें ध्यान करना है। ध्यान में करना कुछ नहीं होता, अगर करना हुआ तो ध्यान कैसा? जो नहीं है उसका ध्यान नहीं होता, जो है उसी का ध्यान, उसको ध्यान से देखा जाता है। आज हम आप भगवान का ध्यान करते हैं, शिकायत करते हैं, क्या बतावें मन जाने कहां-कहां भागता है? ये ध्यान है! रूपया गिनते समय लोभ का मन नहीं भागता, पुत्र को गोद में खिलाते हुये मोही का मन, पति से वार्तालाप करते हुये मोही का मन नहीं भागता और भक्त का मन, भजन करते वाले का मन, ध्यान करते हुये, जप करते हुये, भजन करते हुये भागता है, इसका मतलब क्या? जहां प्रेम नहीं है वहां ध्यान कैसा? और जो दिखता नहीं, उससे प्रेम कैसा? तब आप बात पकड़ लेंगे- जब भगवान दिखेंगे तब प्रेम करेंगे- बहुत गलत बात है। भगवान दिखेंगे तब प्रेम करोगे? तो जो यह दिख रहा है वह क्या है, जो दिख रहा है वह क्या है? जो दिख रहा है वह किसके द्वारा दिख रहा है? अगर परमात्मा न होता तो यह दिखता ही नहीं, अगर परमात्मा न होता तो ये कुछ होता ही नहीं। ये है

ज्ञानियों की दृष्टि। जहां कहीं देखते हैं- ''सीय राममय सब जग जानी।''

''जड़ चेतन जग जीव जत सकल राममय जानि।'' ये दृष्टि खुली तुलसीदास जी की, तभी देखा। ''बन्दउँ सबके पद कमल सदा जोरि जुग पानि।'' यह भी एक दृष्टि है। यह दृष्टि कब खुलेगी- इसी का नाम साधना है। यह जरा विज्ञान की बात है। ये जो चेतना है जैसे हमारी ये आंख यहां खुली है जो यहां पर होगा वही तो दिखाई पड़ेगा, जो यहां पर होगा वही दिखाई पड़ेगा और ऊपर जाओगे तो ऊपर का दिखाई पड़ेगा, तीसरी मंजिल में जाओगे तो तीसरी मंजिल का दिखाई पड़ेगा। आज का साधक अगर समझ ले कि मैं हूँ कहाँ- अन्नमय कोष, प्राणमय कोष, मनोमय कोष, विज्ञानमय कोष फिर आनंदमय कोष। आनंद कहीं से आयेगा नहीं, आनंद कोई देगा नहीं। आनंद है एक स्थान ऐसा जहां है ही लेकिन चेतना वहां नहीं पहुँची, चेतना वहां जाग्रत नहीं हो रही है। चेतना जहां जाग्रत है वहीं जो प्रतीति हो रही है जड़ शरीर अभी तो आनंदमय कोष क्या, विज्ञानमय कोष में ही चेतना जाग्रत नहीं है। ये साधना है। साधना करते-करते शक्ति जैसे-जैसे ऊपर उठेगी जब ऊपर के केन्द्र में चेतना जाग्रत होगी तो वहां का पता चल जायगा। चेतना जिस केन्द्र में, जिस पर्दे में, जिस स्तर में, जिस कोष में जाग्रत है उसी कोष में काम हो रहा है। जप करते-करते इसी को योग की भाषा में- ''योगाश्च चित्तवृत्ति निरोधः।''

चित्त की वृत्तियों के निरोध करने से परमात्मा का योग दिखाई देता है। इसका मतलब क्या है- वृत्ति का निरोध और हम करते हैं वृत्ति का विरोध यानि बड़ा छोटा सा शब्द है लेकिन ध्यान देने लायक है। वृत्तियों को हम लड़ते हैं, लड़ते हैं तो विरोध वृत्ति को देखते हैं तो निरोध। क्रोध से लड़ते हैं तो विरोध क्रोध को देखते हैं तो निरोध। मोह से लड़ते हैं तो विरोध और मोह को देखते हैं- यह मोह है अब यह निरोध हो जायगा।

जिसको तुम देखोगे उससे अलग हो जाओगे तो साधक को बहुत सावधान रहना होगा। क्रोध आये तो क्रोध से लड़ो नहीं कसम खाने से क्रोध दूर न होगा। क्रोध को देखो- यह क्रोध है बस तुम अलग हो गये। जब यह क्रोध है, वह मोह है। यह लोभ है, यह कामना है, यह देह है, यह भूख है, यह प्यास है- यह साधना बता रहे हैं। भूख लगे तो यह न कहो भूख लगी है, वह देह को भूख लग रही है। देह को सर्दी लग रही है, देह को गर्मी लग रही है। अहंकार का अपमान हो रहा है, अहंकार को मान मिल रहा है। अहंकार में लोभ जाग्रत है,

अहंकार में मोह जाग्रत है, अहंकार में क्रोध जाग्रत है- अपने को अलग कर दो। कुछ दिन तक बराबर याद रहे- 'यह' मेरे में नहीं है, यह है लेकिन यह मैं नहीं हूँ यह से अपने को हटाते रहो, ध्यान रखो- ध्यान से देखो। जो यह है उसको तुम अपने में रख लोगे। यह सब दिया तो हो गया मैं, जिसको भीतर रख लिया हो गया मेरा। जिसमें अपने को रख दोगे- वह हो जायेगा मैं, जिसको अपने में रख लोगे- वह हो गया मेरा। बस ये मेरा और मैं- ये दो चीजें हैं साधक के समझने की। इसको हम नहीं समझना चाहते और भगवान के दर्शन करना चाहते हैं? जीवन बीत जायेगा और ऐसे ही हम भटकते रहेंगे।

'यह' और 'मैं', यह शब्द का उच्चारण करते ही यह से अपने को हटा लो, यह को अपने भीतर से हटा दो। अब देखो- तुम क्या बचे? यह पिता, यह माता, यह पत्नी, यह पति हां ये ठीक है 'यह' कह दो यह ठीक है लेकिन यह पत्नी यह अपने में न रखो तो तुम पत्नी और पति और पुत्र और पिता न रह जाओगे यह हटते ही। तुम रहोगे तो लेकिन यह कुछ न रह जायगा। और न हटा पाये तो बने रहो और जब बनोगे तो बिगड़ना पड़ेगा। जब बिगड़ोगे तो रोना पड़ेगा। इसीलिये हमारे दुखों का अंत नहीं होता। अभी बुद्धि में चेतना इतनी जाग्रत नहीं है इसलिये सुनते हुये भी सबकी समझ में नहीं आयेगा लेकिन बात साधना की है। कल इशारा किया था- अभी तो हमारी शक्ति इतने नीचे स्तर में जगी है और नीचे स्तर पर खर्च हो रही है- न हम प्रेम समेट पा रहे हैं, न हम ज्ञान समेट पा रहे हैं, न हम शक्ति समेट पा रहे हैं। तीन शब्द कह रहे हैं- बड़े थोड़े शब्दों में साधक अगर सावधान होना चाहे तो जो भोग में शक्ति खर्च हो रही है, सेवा में लगा दो एक काम- प्रत्येक जिस प्रकार से शक्ति इंद्रियों की शक्ति, मन की शक्ति, बुद्धि की शक्ति को सेवा में लगा दो इस भाव से मुझे कुछ नहीं चाहिये। शक्ति को क्या करेंगे- ये किसी के काम आ जाये। किसी के काम आ जाये- बस इतना ही देखते रहो। बदला चाहे तो फिर सेवा नहीं होगी।

सेवा उसी को कहते हैं जिसके बदले में कुछ चाहा न जाय। जो अपने को पत्नी मानती है, पिता मानते हैं, पुत्र मानते हैं वे याद रखें वह सेवा तब तक होगी ही नहीं जब तक कुछ चाह है अपने लिये तब तक सेवा नहीं यह सौदा होगा, स्वार्थ होगा। इसीलिये लोगों की चित्त शुद्धि नहीं होती है बड़े अच्छे मौके हैं यदि शक्ति सेवा में लग जाये अपने लिये कुछ मांग न रह जाय, वह शक्ति से तुम्हारा कल्याण हो जायगा बिना पढ़े लिखे। तुम्हारा ज्ञान जो है उस ज्ञान में

मेरा कहने को कुछ न रह जाये बस मुक्ति मिल जायेगी। ज्ञान में मेरा कुछ न रह गया बस मुक्ति मिल गयी। प्रेम में कोई सुखद पदार्थ व्यक्ति वस्तु न रह जाये तो भक्ति मिल गयी। जब कुछ न रह जायेगा प्रेम में सुख तब आनंदमय हो जायगा और ज्ञान में कुछ न रह जायगा तो ज्ञान मुक्त हो जायेगा और शक्ति में स्वार्थ न रह जायेगा तो सेवा हो जायेगी। तीन काम करने हैं- क्या? **सेवा** और **त्याग** और **प्रेम** तीन चीजें। त्याग घर का नहीं, परिवार का नहीं, धन का नहीं, किसका त्याग करना है? जिसे मेरा मानते हो उसका त्याग करना है, मेरापने का त्याग करना है। एकदम न होगा, महीनों लग जायेंगे और ज्यादा जड़ता है तो सालों लग जायेंगे अगर समझ में आ जाये तो अभी-अभी, अभी-अभी काम पूरा हो जायेगा।

करो तो ये करो, करो तो सेवा करो, छोड़ना है तो संबंध छोड़ो ज्ञान से, ज्ञान में अपना कुछ न मानो। भक्त होना है तो परमात्मा को दूर न मानो। आप कहोगे- दिखाई पड़ें। अरे दिखाई पड़े यह शर्त लगा दी जो दिखाई पड़ेगा परमात्मा के बिना तुम देख पाओगे? वह परमात्मा के बिना दिखाई पड़ेगा? एक आदमी अगर शरीर के द्वारा पृथ्वी देवता के दर्शन करना चाहे पृथ्वी देवता के कोई कह दे पृथ्वी देवता बड़ा महान है संसार के सारे पदार्थ उसी में हैं, सब पदार्थों को पृथ्वी देवता धारण किये हुये हैं और आंख से जो कुछ दीखता है सब पृथ्वी देवता में ही है। तो तुम पृथ्वी देवता के दर्शन करने चलो, ऐसा देवता कहां मिलेगा? जप से कि कीर्तन से कि पाठ से कि पूजा से करो सब कुछ लेकिन कोई गुरू मिल जायेगा तो कहेगा- पृथ्वी देवता को तुम दर्शन करना चाहते हो जिसमें सब कुछ है- वह तो वही है जहां तुम हो। क्या कहेगा? गुरू कहेगा- पृथ्वी देवता वहीं है जहां तुम बैठे थे, जहां तुम लेटे थे, जहां से तुम चले थे और जब तक चले थे, जहां ठहरे थे उसी का नाम पृथ्वी देवता है। बताओ दूरी हुई? और पृथ्वी देवता के दर्शन करते जाओ। शरीर का संबंध पृथ्वी देवता से है और शरीर पृथ्वी देवता को खोजने चले तो कितनी मूर्खता होगी?

अगर मछली सागर को खोजने चले- कोई कह दे सागर बहुत महान है और लाखों करोड़ों मछलियां सागर में हैं। मछली सागर को खोजने चले तो कहां जायेगी? कोई गुरू मिल जायेगा तो वह कहेगा अरे सागर को तुम- सागर से तुम्हारा शरीर बना, शरीर उसी सागर में रह रहा है उसी सागर में समाप्त हो जाता है। सागर की खोज सागर में रहते हुये? ऐसे ही परमात्मा की खोज

परमात्मा में रहते हुये? यह बुद्धि का भ्रम है बड़ा भारी भ्रम है। यह बुद्धि में क्यों भ्रम है? चेतना अभी विज्ञानमय कोष में बुद्धि में जाग्रत नहीं है। कोशिश करें हम जप करते हुये, कीर्तन करते हुये चेतना को बिखरने न दें हमारी चेतना बिखर गयी है, हमारा प्रेम कई धाराओं में बिखर जाता है। हमारे ज्ञान में जाने कितने संबंध भर गये हैं जरा सोचना, ज्ञान में संबंध भर गये हैं, प्रेम हमारा सुख देने वालों में फंस गया है और शक्ति स्वार्थ में फंसी है। तीन काम हैं जीवन में, तीन ही काम संभालने हैं, शक्ति जो स्वार्थ में फंसी है वह सेवा में लग जाय। ज्ञान में जो पदार्थ भर गये हैं वह निकाल दिये जावें तो मुक्ति मिल गई और प्रेम जो सुख के पीछे दौड़ रहा है सुख दौड़ना बंद कर दे, आनंद मिल गया। क्या समझे? जरूरत है अभी? नहीं आदत पड़ी हुई है।

बड़ी मोटी भाषा में- आप कहोगे- कहां से संभालें? जहां से सेवा कर रहे हैं। अपने परिवार में जिससे आपका संबंध है, वहीं से संभालना शुरू करें- यह साधना होगी जहां से संबंध है। क्योंकि अभी शक्ति भोग में खर्च हो रही है, स्वाद मिले, सुख मिले, शब्द मिले जो अच्छा लगे तो मिले। भोग में शक्ति खर्च होगी तो योग न हो पायेगा। शक्ति सेवा में लग जाये जो सामने है जो निकट में है जो तुम्हें अपना मानता है अब उससे कुछ न चाहो और देखते रहो (वह क्या चाहता है)2 उसकी पूर्ति करो अपने विवेकपूर्वक, मूर्खतापूर्वक नहीं विवेकपूर्वक करते रहो ये कौन कर सकेगा जो परमात्मा का प्रेमी है। परमात्मा का प्रेमी कौन है? जो परमात्मा को ही चाहता है परमात्मा से कुछ नहीं चाहता। अभी हम परमात्मा को नहीं चाहते परमात्मा से चाहते हैं। जब तक 'से' चाहते हैं तब तक हम प्रेमी नहीं हो सकते और जब तक प्रेमी न होंगे, भक्ति न मिलेगी। और जब तक चाहते रहेंगे मुक्ति नहीं मिलेगी। जिसे चाहेंगे उसी के पीछे हमें अशांति मिलेगी।

कितनी सुन्दर साधना है करो तो अभी से करो और नहीं तो याद रखो जब कभी जरूरत पड़े तब करना। इसके बिना और कुछ निस्तार नहीं है। फिर हम शब्दों को दुहराते हैं चूंकि हमारी चेतना अभी उस पर्दे में नहीं जाग्रत है जहां से ये दिखाई पड़ता है- विज्ञानमय कोष में। कैसे जगेगी? अधिक से अधिक हम शांत रहें, अधिक से अधिक हम मौन रहें, अधिक से अधिक हम इच्छाओं की पूर्ति का पक्ष न लें। बीच-बीच में ईर्ष्या, द्वेष, कलह, क्रोध, निन्दा, घृणा, इन 6 से अपनी शक्ति को बचाते रहें। ध्यान दें- बचाना पड़ेगा। 6 में शक्ति बहुत खर्च हो

रही है- ईर्ष्या में, द्वेष में, कलह में, क्रोध में, निन्दा में, घृणा में फिर भजन हमारा पूरा नहीं हो सकता। सब गड़बड़ रहेगा।

इतने लोग सुन रहे हो चाहो तो आज ही से कर सकते हो, न चाहे तो (बरसों न होगा)2। जीवन बीत जायगा तुम चाहो तो कर सकते हो। कोई बता दो- इसके करने में क्या कठिनत है? न परिवार छोड़ना है, न धन छोड़ना है, न भूमि भवन छोड़ना है। मूर्खता को जान लेना है बस मूढ़ता को, मूर्खता को जान लेना है। इतना ही प्रयास करना है। मन में मूढ़ता कहां से कहां तक है, बुद्धि में मूर्खता कहां से कहां तक है। इतना जान लेना है कोशिश करो जान लोगे इसका मार्ग क्या है- ध्यान। ध्यान किसे कहते हैं- देखो, किसे देखो- जो है। क्या है? इस 'है' को देखो। जो तुम्हारे किये बिना है, उसे देखो- ये ध्यान है। आपको कोई एक साधन दे देता है- ये काम करना है। जब तक साधन है तब तक आप काम करते हो। जो है यानि इतनी छोटी सी बात जैसा ज्ञान वैसा ध्यान।

एक पेड़ को ध्यान से देखो, बालक को ध्यान से देखो, रूप को ध्यान से देखो, देखो रूप को ध्यान से, शब्द को ध्यान से देखो तो क्या होगा? ध्यान से देखते-देखते एक ऐसी जगह पहुँचोगे जिसकी जड़ होगी मूल होगी। क्योंकि ऐसा कोई दृश्य नहीं, ऐसा कोई पेड़ नहीं जिसकी कहीं जड़ें न हों। कोई एक अमरबेल कहते हैं जिसकी जड़ें लोग कहते हैं नहीं होतीं, जड़ें नहीं होतीं। आप लोग अपनी साधना में लाना चाहते हो तो सावधान रहो दिन भर रहो, तीन काम करने हैं- ध्यान से उसे देखना है उसे जो सामने है। अभी क्या होता है? याद उसकी आती है जो सामने नहीं है। चाहे जब बैठना, चाहे जब लेटना अथवा बातों में पड़े हुये इधर-उधर की बातें करना ठीक है इधर-उधर मन फंसा हुआ है। जब बात नहीं करते हो कुछ काम भी नहीं करते हो- इतने लोग बैठे हो जब लेटे होते हो जब बैठे होते हो, तब मन क्या करता है देखते रहो। तब मन वही करता है कभी आगे की चिन्ता, कभी बीते की याद- दो चीजें उस समय कोई संभाल ले। आगे की चिन्ता बेकार है जो होगा देख लेंगे। बीते की बात बेकार है क्योंकि मुर्दा गाड़ दिया है उसको क्या देखना- ऐसा हो जाय तो साधना बड़ी बढ़िया हो जाये लेकिन अभी बहुत कम लोग हैं जिनको जरूरत होगी। लेकिन करना यही चाहिये इसीलिये प्रार्थना की गई है-

जहां भी रहूँ ध्यान से तुमको देखूँ
(तुम्हीं में हूँ) मैं ज्ञान तुमको देखूँ
पथिक मैं यह अरजी दिये जा रहा हूँ
जो कुछ दे रहे हो (लिये जा रहा हूँ)2

अगर आप लोग एक नियम बना लें- जो कुछ करते हो करते रहो, तुम्हारे करने के बाद अपने आप कुछ हो जाये, घट जाये घटना। तुम सावधान हो जाओ अपने आप घटा है ईश्वरीय विधान है, स्वीकार कर लो। मान चाहते हो कभी-कभी छिन जाता है, ये ईश्वरीय विधान है। संयोग चाहते हो कभी-कभी वियोग आ जाता है, ये ईश्वरीय विधान है। लाभ चाहते हो कभी-कभी हानि हो जाती है तुरंत सावधान हो जाओ स्वीकार कर लो, स्वीकार कर लो, अनादर मत करो, ईश्वरीय विधान है स्वीकार कर लो। स्वीकार करने पर तुम देखोगे जो शक्ति व्यर्थ की चिन्ता में, संघर्ष में खर्च होती है, बच जायेगी। एक शांति की दिशा में, शांति के स्तर पर तुम पहुँच जाओगे। क्या याद रहेगा? जो अपने आप होता है वह किसके द्वारा होता है? प्राकृतिक विधान। तुम करते हो तो अहंकार। तुम्हारे करने के खिलाफ होता है प्राकृतिक विधान।

तुमने बीज बो दिया, ये तुम्हारा कृत्य है। बीज में अंकुर आयेगा अपने आप प्राकृतिक विधान है। बबूल बोया है तो बबूल के ही पेड़ निकलेंगे ये विधान है। आम बाया है तो आम ही उसमें निकलेंगे, ये प्राकृतिक विधान है। जैसा कर्म किया है- कैसा कर्म किया है सुख के लिये कि दुख के लिये? कोई आदमी दुख के लिये कर्म नहीं करता। लेकिन जब कर्म करता है तो उसको होश है कि मैं जो कर्म कर रहा हूँ उसका परिणाम क्या होगा? कैसे आप संयोग की इच्छा करते हैं तो संयोग होगा जरूर। लेकिन आपको होश है, संयोग होगा मेरे करने से वियोग होगा अपने आप। लाभ होगा मेरे चाहने से प्रयास से, हानि होगी अपने आप। हमारा शरीर मजबूत बनेगा, बलवान बनेगा हमारे किये, शरीर दुर्बल होगा बीमारी आयेगी तो अपने आप। अपने आप जो आता है- ईश्वरीय विधान और जो तुम करते हो तो तुम्हारा अहंकार। इतना अगर सावधान रहो, अपने आप घटित हो जाये ईश्वरीय विधान है हमारे कल्याण के लिये, मंगल के लिये तो इससे राग-द्वेष न होगा। अनेकों अपराध होते हैं राग-द्वेष से। इससे इन अपराधों से जाओगे। आज की चर्चा में सावधान किया गया- 3 बातें मिली हैं- शक्ति अभी भोग में काम आ रही है और ज्ञान जो मिला है वह पदार्थों की

प्राप्ति में काम आ रहा है और प्रेम मिला प्रेम उसकी सुरक्षा में, प्रेम संसार के पदार्थों में फंसा वस्तुओं व्यक्तियों में फंसा है। ये गड़बड़ी है। शक्ति सेवा में लग जाये और ज्ञान में अपना कुछ न मान करके मुक्त हो जाओ और प्रेम परमात्मा में हो जाये बस बेड़ा पार हो जाये। जब कभी जरूरत पड़े तो 3 बातों को याद रखना। ये मंत्र हैं- हम परमात्मा में हैं, हम संसार के नहीं है। हम संसारी नहीं हैं। देह किसी का बेटा, किसी का बाप, किसी का पति, किसी की पत्नी हो सकती है लेकिन हम नहीं हैं देह है। संबंध देह से है। इतना याद रह जाये तब भी कल्याण हो जाये। व्यवहारिक जीवन में अपना कुछ न मानो सब परमात्मा का है, ऐसा मानते हुये देखते चलो (अब क्या आता है)3 अब क्या जाता है। जाते हुये जो भी देखो आते हुये को भी देखो। आता है तो तुम्हारा नहीं और जाता है तो तुम्हारा नहीं, इतनी दृढ़ता हो जाये तो आप दुखी नहीं हो सकते लेकिन ऊपर-ऊपर कहते हैं। तभी संत कहते हैं- **विहाय शास्त्र कामाय।** यह भी जाल है शास्त्र जाल को छोड़कर। बिना पढ़े लिखे तुम्हें भक्ति मुक्ति शांति मिल सकती है- कब? जब तुम संयम द्वारा नीचे जाने वाली, नीचे खर्च होने वाली चेतना को (ऊपर उठने दो)2। बस यह है साधना। तो विज्ञानमय कोष में हमारे योग की भाषा में कुण्डलिनी एक शक्ति बतायी है। सो रही है। वह जाग्रत होती है।

कुण्डलिनी शक्ति जब जाग्रत होती है तो वह शक्ति जाग्रत होकर जिस कोष में जिस केन्द्र में जिस चक्र में पहुँचती है उसके विकार गुण सब जाग्रत हो जाते हैं। लोभी आदमी शक्ति को जगा ले तो बहुत लोभी बन जायेगा। मोही शक्ति को जगा ले तो बहुत मोही बन जायेगा। अगर वह भक्त है तो भक्ति जाग जायेगी। सब यह शक्ति का चमत्कार है इसीलिये हम लोगों को चाहिये- अपनी शक्ति को धीरे-धीरे ऊपर उठायें, केन्द्रों में ले जायें तो एक ऐसी मंजिल में पहुँचेंगे जहां बिना कोशिश के परमात्मा के दर्शन, परमात्मा का बोध हो जायेगा। ऐसे-ऐसे कोष हैं, ऐसे-ऐसे क्षेत्र हैं। अंत में बताया है जो सत्य है- वह आत्मा है वह परमात्मा है। 5 दीवारों के पीछे मौजूद है। अन्नमय कोष, प्राणमय कोष, मनोमय कोष, विज्ञानमय कोष, तब आनंदमय कोष। इसके लिये जैसे-जैसे साधना गहरी होती जायगी, हम लोग कोशिश करें- पहले तो आधा घंटा बैठें फिर 1 घंटा बैठें फिर दोनों समय 1-1 घंटा बैठें, दोनों समय तब कुछ काम हो सकता है। अब आप लोग जो साधन भजन करते हो उसमें कोई बात

ऐसी हो तो 5-10 मिनट पूछ सकते हो, कुछ लोगों को जाना है, पूछ सकते हो। लेकिन एक नियम बनाओ- सबसे पहली बात हमने क्या कही? जो अपने आप आये- प्रभु तुम्हारे विधान से आया, हम तुम्हारे होकर इसका विरोध करें। ये कैसी भक्ति कैसा प्रेम? हानि हो तो, अपमान हो तो वियोग हो तो संयोग मिला, तब न कहा क्यों संयोग मिल गया? लाभ हुआ तब न कहा- क्यों लाभ हो गया? धनी घर में जन्म लिये तब न कहा- क्यों धनी घर में जन्म लिये, मजदूर के घर में क्यों न जन्म लिये। और जब चला गया तो हाय क्यों चला गया? धन क्यों चला गया? पद क्यों चला गया? परिवार का संबंधी क्यों चला गया? ये प्रश्न करते हो।

अगर आपके इस समय कोई प्रश्न हों ऐसे क्या कारण हैं बरसों सत्संग करते बीता विवेक नहीं हुआ- क्या उत्तर है आपके पास। **वासना** उसे कहते हैं जैसे किसी हड़िया में खटाई रखी है, निकाल दी गयी है, बास आती है। जब बास आती है तो फिर मन में आता है खटाई कब मिले? इसका नाम है **कामना।** बसाय गंध आवे, बासे इसका नाम **वासना।** संकल्प हो यही करेला कढ़ी की महक आ रही थी कभी खाये थे आज फिर खायेंगे- इसका नाम है **कामना।** इसको भी देखो तुम पीछे हट जाओ। आइना को ऐसे लगा लो आंख में तो दीख पड़ेगा? फासला होगा तो मुंह अलग, आइना अलग।

तुम्हीं क्रोधी बन गये तो क्रोध को कहां देखा? यह क्रोध है तब क्रोध को देखते हो। यह मोह है, यह काम है, यह अभिमान है तब देखते हो। हम देखते नहीं ओढ़ लेते हैं हमीं हो जाते हैं, यही गड़बड़ी है। ....उससे भिड़ गये, गाली-गलौज करने लग गये तो फिर क्रोध को कहां देखा? हमें तो उसकी देखने लग गये- इसने ऐसा क्यों कहा? इसने क्यों नहीं दिया? इसने क्यों लिया? अब इसको देखने लग गये। कहां क्रोध को देखा, कहां मोह को देखा। बात समझे कि नहीं? इसने जो कहा- क्रोध क्यों आया, लोभ हमारे भीतर क्यों आया? ऐसा देखने पर क्रिया न होगी। देखने का मतलब है क्रिया न हो। क्रोध तो आयेगा लेकिन क्रिया न होगी- ये देखना है। अब उससे अलग हो गये। छोड़ना नहीं है खाली देखना है, अलग होना है।

आसुरी वृत्तियों के द्वारा तुम मजा लेते हो। दैवी वृत्तियों का अनादर आसुरी वृत्ति का आदर। अब सहने से काम न बनेगा, कहने से काम बनेगा। अब संतोष

से काम न बनेगा, अब तो लड़ने से काम बनेगा। छीनो झपटो लेओ। तुम्हीं तो मजा चाहते हो। संतोष धारण नहीं किया जाता तो लोभवश लड़ा जाता है। बात बर्दाश्त नहीं होती तो कहा जाता है। तुम्हीं तो हो दोनों में चाहे ये करो चाहे वो करो। चाहे सत्संग में जाओ, चाहे सिनेमा में जाओ, बात तो एक ही है। वही पैर उधर जायेंगे, वहीं पैर इधर आयेंगे। वही मन लड़ेगा वही मन चुप रहेगा। तो वही सब कुछ कर रहा है उपद्रव और तुम्हारे लिये कर रहा है। तुम मजा चाहते हो तब लो मन से काम लेते हो। जब सजा मिलती है तो कहते हो– ये क्यों हो गया? बस देखो। जब तुमने कहा– बहुत अच्छा, अब तुम मन को नहीं देख रहे हो, उसको देख रहे हो जो अच्छा है।

हमारी बातें सुन रहो ना। हम बातें कर रहे हैं तुम्हारी कि और किसी की और तुम कहते हो पथिक जी बड़ा अच्छा बोले। बातें तो वे भूल गये, पथिक जी को देखने लग गये। अब पथिक जी के रागी-मोही बन गये। फिर पथिक जी मिले, फिर उनकी बातें सुनें, जो कहा था वो भूल गये पथिक जी को पकड़ लिया। है ना ऐसा! यही तो गड़बड़ी है। जब तुम स्वाद लेते हो तो स्वाद को देखते हो कि स्वाद देने वाली मिठाई लड्डू पेड़ा को देखते हो? जी स्वाद को नहीं देखते लड्डू पेड़ा को। फिर वही पेड़ा मिले फिर वही जलेबी फिर वही हलुआ। कहां देखा? स्वाद को देखोगे तो स्वाद तो यहां है। जिसका स्वाद आ रहा है वह तो अलग है।

दर्शन है ये दृष्टा हो जाओ। ऐसा कहां देखते हो, देखते हैं तो क्रिया न होगी, नहीं तो क्रिया होगी। जहां कर्म बनेगा तहां भोग करना पड़ेगा। कर्म न बने थे कब होगा? जब सहयोग न दो। क्रोध को देखो, लोभ को देखो पर क्रोध, मैं क्रोधी नहीं हूँ। हम क्रोध को नहीं देख पाते। इसने क्यों नहीं किया, इसने ऐसा क्यां कहा, इसने क्यों लिया, इसे देखते ही तीन बातें। कर्म बना जायेगा बंधन हो जायेगा, यही भूल तो हो रही है।

विज्ञानमय कोष की खुराक है सत्संग के द्वारा सद्विचार। सद्विचार यह विज्ञानमय कोष की। मनोमय कोष की खुराक है इच्छाओं की पूर्ति होती रहे, मनोमय कोष बलवान रहेगा। चेतना वहीं जाग्रत रहेगी। प्राणमय कोष की शक्ति जिस भोजन से जिस प्रकार से प्राप्त होती रहे वह क्रिया प्राणमय कोष की शुद्धि है। हम किसकी खुराक ज्यादा दे रहे हैं?

आप जब तक यहां बैठे हो यह विज्ञानमय कोष की सतोगुणी खुराक दे रहो हो, जब अखबार पढ़ते हो तो रजोगुगी खुराक दे रहे हो रजोगुणी और जब कुछ भी नहीं पढ़ते लिखते और विचार करते मन की इच्छा पूर्ति करते हो तो मनोमय कोष। मन की इच्छापूर्ति में मनोमय कोष को खुराक दे रहे हो। मन की इच्छा पूरी न करो तो विज्ञानमय कोष। एक विद्यार्थी पढ़ रहा है और मन की इच्छापूर्ति करेगा उसकी बुद्धि कमजोर होगी। अगर उसकी यही धुन है कि हमें पढ़ना है, जो खाना मिल जायेगा खा लेंगे, जहां सोना मिल जायगा सो जायेंगे लेकिन पढ़ने में बाधा न डालेंगे। अब विज्ञानमय कोष में उसके ताकत बढ़ जायेगी। जिसका मनोमय कोष भोगी होगा उसका विज्ञानमय कोष जाग्रत न हो पायेगा- ऐसा नियम है।

हम जो कर रहे हैं वो कर रहे हैं। हमारे किये बिना जो होता है वह परमात्मा का विधान है- स्वीकार कर लो। बस स्वीकार कर लो। जो आवे (सब स्वीकार)2, प्रभु पर छोड़ दो। प्रभु आपके द्वारा कभी अन्याय नहीं हो सकता, आपके द्वारा कभी अहित नहीं हो सकता। जो भी आपके विधान से आता है, इससे हमारा हित ही होगा, स्वीकार कर लो हित होगा, अस्वीकार कर दो अहित होगा अगर स्वीकार न किया। सब स्वीकार। इसका नाम समर्पित अहंकार है ये युक्ति है। संत महात्मा साधु उसे ही कहते हैं जो सब स्वीकार करता जाये। संत उसे कहते हैं जो स्वीकृतियों में सिद्ध हो जाय।

सब माया है अब ये दर्शन है सब माया है, सब मिथ्या है, सब मन का खेला है तब दर्शन है। अच्छा लगा तो राग हो गया, राग होगा तो द्वेष जरूर होगा। कुछ अच्छा लगेगा तो बुरा उसके पीछे चल रहा है। लाभ हुआ तो हानि उसके साथ चल रही है। सम्मान मिला तो अपमान उसके साथ चल रहा है, बच ही नहीं सकत। तभी हमारे भगवान कहते हैं- **ते द्वंद्व मोह निर्मुक्ता भजन्ते मां दृढ़व्रताः।** जो ये दो के बीच में पिस रहे हो।

चलती चाकी देखि के दिया कबीरा रोय।
दो पाटन के बीच में साबुत बचा न कोय।।

ये क्या है राग-द्वेष, हर्ष-शोक, लाभ-हानि, संयोग-वियोग। जिन्दगी के ये दो पाट हैं संसार में, इन्हीं में सब पिस रहे हैं।

चलती चाकी देखि के हंसा कमाल ठठाय- और कबीर से भी आगे बढ़ गये, कमाल उनके पुत्र कहते हैं- **जो ठहरे उस कील में तो साबुत ही रहि जाय।**

जिसमें सब चक्र घूम रहे हैं उस कील में ठहर जाओ। पाटों के बीच में राग-द्वेष में, हर्ष-शोक में, हानि-लाभ के बीच में क्यों पिसो। दोनों के पीछे दृष्टा बन जाओ। ये लाभ, ये हानि, ये संयोग, ये अपमान, ये संयोग, ये वियोग। हम परमात्मा में हैं- यह अंतिम मंत्र है। हम परमात्मा में है और यह सब परमात्मा की प्रकृति में है, बस एक शब्द याद रखो, हमें कोई परमात्मा से अलग कर सकता नहीं। ये प्रकृति से जो मिला है सदा रह सकता नहीं। क्या पता है इसमें? क्या छोड़ना है वह तो खुद ही छूट जायेगा लेकिन यह मंत्र याद नहीं रहता- नमः शिवाय- नमः शिवाय रटे चले जा रहे हैं। यह होश नहीं शिव की बात नहीं मानते हो, नमः शिवाय। राम की बात नहीं मानते हो- रामाय नमः रटे चले जा रहे हैं, क्यों कुछ मिलेगा। वहां भी लालच छिपा है। ये साधनायें हैं बिना सत्संग इसीलिये कहते हैं- **गुरु बिन भवनिधि तरइ न कोई।** गुरु का मतलब है ज्ञान। ज्ञान के बिना इस संसार सागर से कोई तरेगा नहीं।

तुम लोगों ने चालाकी की है, हमें गुरू बना दिया। मंत्र दिया गुरू जानें, अब वही भार ढोयें, वही हमें मुक्त करें हम जो चाहें मौज करें, बाकी सजा वह भोगें। अब ये चालाकी आयी। सब करें गुरू और हम करें मजा मोह। सब मतलब-मतलब की बात है। यह सत् है, यह असत् है, ये नित्य है, ये अनित्य है, ये पाप है, ये पुण्य है, इसमें क्या अच्छा लगेगा?

गुरू के पास एक साधक गया, कहा- भाई हमें आगरे जाना है। कितनी दूर? महात्मा ने कहा- अच्छा आगरे जाना है तो तुम जिधर मुँह किये हो अगर उधर ही को तुम चलते रहो तो आगरा पहुँचने में बरसों लग जायेंगे क्योंकि तुम्हारा जिधर मुँह है उधर आगरा नहीं है। लेकिन अगर तुम सीधे चले गये तो चक्कर काट करके पृथ्वी गोल है पूरी पृथ्वी गोल है चक्कर काट कर फिर यहीं आओगे। आगरा इतनी दूर है कि तुम चलते-चलते मर जाओगे एक रास्ता, जिधर को मुँह किये हो। मुँह अगर इधर से घुमा लो तो आगरा पांच ही मील दूर है। 5 मील दूर पर आगरा, 5 लाख 5 हजार मील पर भी आगरे का पता नहीं चलेगा, कब? अगर इधर मुँह किये हो संसार की तरफ तो सत्य का पता न चलेगा और संसार से पीठ कर लो। अन्नमय कोष में आ जाओ, प्राणमय कोष में

आ जाओ, मनोमय कोष में आ जाओ, विज्ञानमय कोष में आ जाओ, आनंद प्राप्त हो गया। इतनी ही दूर है, 5 ही कोष हैं। 5 कोष पर परमात्मा। अगर परमात्मा की तरफ पीठ कर ली तब तो पता ही न चलेगा, मर-मर जायेंगे, परमात्मा न मिलेगा। कैसी बढ़िया बात है इसी का नाम योग है। परमात्मा 5 कोस के पार है और संसार 5 ही मील। तुम्हारी मौज चाहे इधर चलो।

फिर महात्मा ने कहा- अच्छा चलके तो बताओ, 5 कोस भी तुम्हारी रफ्तार बता देगी कि तुम कितनी जल्दी पहुंचोगे, कैसे कदम उठाते हो। तो तुम्हारी साधना की गति कैसी है, साधना में बाधा क्या है, कैसे कदम उठते हैं, कहां-कहां वृत्ति चंचल होती है। जब पता चलेगा कि जल्दी पहुंचोगे 5 कोस कि देर लगेगी। यह भी बात है भेद की। यह गुरू ही बता सकेगा, गुरू ही जान सकेगा।

•

ॐ

ज्ञान में जब देखा

बाराबंकी, गुरू पूर्णिमा,
13 जुलाई 84 प्रातः

चैतन्यं शाश्वतं शांतं व्योमातीतं निरंजनं।
नाद बिन्दु कलातीतं तस्मै श्री गुरवै नमः।।

गुरू मंत्र का प्रभाव बड़ा विलक्षण है। गुरू मंत्र उसे कहते हैं जो रक्षा करता है। लोभियों का गुरू मंत्र, लोभी जब गुरू मंत्र जपते हैं तो धन की रक्षा के लिये जपते हैं। मोही जब गुरू मंत्र जपते हैं तो अपने संबंधियों की रक्षा के लिये जपते हैं। अभिमानी अहंकारी जब मंत्र जपते हैं तो अपने पदाधिकार की रक्षा के लिये करते हैं। लेकिन साधक वह है जो परमात्मा से, गुरूजनों से, सत्संग से प्राप्त विवेक की रक्षा के लिये मंत्र जपता है। विवेक सुरक्षित रहे, भगवान का मिला हुआ प्रेम सुरक्षित रहे, परमात्मा का ज्ञान हमारी बुद्धि में जो प्रकाशित होता है वह सुरक्षित रहे। साधक लोभ ज्ञान की सुरक्षा के लिये, प्रेम की सुरक्षा के लिये, भाव की सुरक्षा के लिये दैवी-संपदा की सुरक्षा के लिये, जो मंत्र जपता है अथवा जिन मंत्रों से सद्ज्ञान की, सद्प्रेम की दैवी संपदा की सुरक्षा होती है, उसको गुरू मंत्र कहते हैं। साधक के लिये- आप सभी लोग साधक हैं और प्रत्येक व्यक्ति अपनी-अपनी धारणा के अनुसार गुरूमंत्र जप करता होगा।

थोड़ा निरीक्षण कर लें भीतर यदि लोभ है, भीतर यदि मोह है, यदि अभी अहंकार को मान की चाह है तो ये मंत्र परमार्थ दिशा में सिद्धि द्वार में नहीं पहुंचने देंगे। इसीलिये संत के कितने सुन्दर वाक्य हैं- **ममता रत सन ज्ञान कहानी।** अब तो आपके भीतर ही कोई ममता न रह गई होगी, बरसों से सत्संग कर रहे हो।

ममता रत सन ज्ञान कहानी। अति लोभी सन बिरति बखानी।।
क्रोधी सम कामिहिं हरि कथा। ऊसर बीज बए फल जथा।।

ऊसर में जैसे बीज बोना व्यर्थ होता है तैसे ममता के रहते ज्ञान व्यर्थ जाता है। लोभ के रहते ज्ञान में समता का उपदेश व्यर्थ जाता है। क्रोध के रहते, काम के रहते, जो भी हम आप सुनते हैं वह ऊसर में जैसे बीज व्यर्थ जाता है वैसे व्यर्थ जा रहा है। सावधान हो जाना चाहिये- बरसों से सत्संग करते हुये यदि

हम लोभी हैं, यदि हम मोही हैं, यदि हम अभिमानी हैं और संसार के सुख के कामी हैं तो सारा गुरू उपदेश ऊसर में बीज बोने के समान व्यर्थ हो रहा है। उसका पता कब चलता है कि नहीं चाहते हैं दुख, आ ही जाता है। नहीं होना चाहिये भय, हमें भय घेर लेता है। नहीं होनी चाहिये चिन्ता, लेकिन चिन्ता से चित्त ग्रसित हो जाता है। अंत में नहीं होनी चाहिये अशांति सो बीच-बीच में अशांति आ ही जाती है, क्यों? यही कारण है कि ऊसर में बीज बोने के समान गुरू उपदेश व्यर्थ जा रहे हैं। इसीलिये ये प्रार्थना की जाती है-

ज्ञान में जब दिखा देते हो तुम।

कब? जब दृष्टि खुली हो। गुरू तो दिखा रहे हैं, प्रकाश फैला हुआ है और हमारी आंखें ही बंद हों तब क्या होगा? हुआ करे सूर्य। हमारी बुद्धि दृष्टि मोह से सनी है तो हुआ करें गुरू के उपदेश।

ज्ञान में जब दिखा देते हो तुम।
(बात बिगड़ी बना देते हो तुम।।)2
ज्ञान में.....

(जिसे हम दूर नहीं कर पाते।)2
(दोष मेरा हटा देते हो तुम।)2
बात बिगड़ी बना देत हो तुम।।
ज्ञान में जब दिखा देते हो तुम।। बात.....

(बिना तुमसे मिले)2 जो बुझती नहीं।
(बिना तुमसे मिले)2 जो बुझती नहीं।
(प्यास ऐसी जगा देते हो तुम।)2
बात बिगड़ी बना देते हो तुम।।
ज्ञान में जब दिखा देते हो तुम।। बात....

(गरूर अपने आप)2 गल जाता।
गरूर अपने आप झुक जाता।।
(चोट ऐसी लगा देते हो तुम)2
बात बिगड़ी बना देते हो तुम।। बात....

रोशनी (मेरी यह बंद आंखें)2 खुल जातीं।
(मेरी यह बंद आंखें)2 खुल जातीं।

रोशनी जगमगा देते हो तुम।
बात बिगड़ी बना देते हो तुम।।
ज्ञान में जब दिखा देते हो तुम।। बात....

(हम तो भूले स्वयं को)2 तुमको भी2 स्वयं को तुमको भी
(याद अपनी दिला देते हो तुम।।)2
बात बिगड़ी बना देते हो तुम।।
ज्ञान में जब दिखा देते हो तुम।। बात.....

(पथिक गिरते हुये)2 सम्हल जाता। कब?
(मंत्र ऐसा सुना देते हो तुम।।)2
बात बिगड़ी बना देते हो तुम।
ज्ञान में जब दिखा देते हो तुम।
बात बिगड़ी बना देते हो तुम।।

श्रद्धालु की ये महान् महिमा है। श्रद्धा एक अद्भुत दैवी गुण है लेकिन सावधान रहना श्रद्धा के दो भेद हैं- एक श्रद्धा मस्तिष्क से हृदय से तो शुरू होती है- भाव प्रधान। भाव की शुद्धि होने पर पूज्य के प्रति, सद्ज्ञान के प्रति, प्रेम के प्रति, परमात्मा के प्रति जो पूज्यभाव है उसको श्रद्धा कहते हैं। लेकिन जब उसके ऊपर बुद्धि छा जाती है तो वह श्रद्धा अंधी हो जाती है इसलिये अंधी श्रद्धा वाला ठगा जाता है। शक्ति, समय खोकर पश्चाताप करता है। ऐसा यहां कोई व्यक्ति नहीं है जिसमें श्रद्धा न हो और जो यहां आया हो। हो भी सकता है उसकी कोई दूसरी घात होगी लेकिन आप सभी श्रद्धालु हैं। लेकिन यह निर्णय कर लेना- श्रद्धा अगर मस्तिष्क से है, श्रद्धा के ऊपर अगर बुद्धि है तब गड़बड़ हो जायगा। श्रद्धा के साथ यदि हृदय है तो हृदय में भाव की प्रधानता होती है, बुद्धि में तर्क की प्रधानता होती है। तर्क बहुत जरूरी है यह भी बात है। तर्क कब जरूरी है, इस बोध के लिये कि यह सत्य है कि असत्य है। बुद्धि परिणामदर्शी हो जाय तो बड़ी सुन्दर और परिणामदर्शी न हो करके यदि केवल तर्क ही तर्क करती चली जाये तो बहुत ही असुन्दर। तो हम लोग अपनी श्रद्धा के साथ सावधान रहें और वह सावधानी इतने से ही पूरी हो जायेगी कि हमारी श्रद्धा का संबंध केवल ज्ञान से होना चाहिये लेकिन भूल हो जाती है। श्रद्धा देह से हो जाती है और जब देह से हो जाती है तो श्रद्धा मोह का रूप ले लेती है। श्रद्धा जब धन के लिये होती है तो श्रद्धा लोभ से ढक जाती है। श्रद्धा जब

पदाधिकारी के पीछे- गुरू महाराज आशीर्वाद दे दें, भगवान दया कर दें, मुकदमा जीत जायें, पद मिल जाये, पदाधिकार मिल जाये, धन मिल जाये, संयोग मिल जये, ऐसी श्रद्धा जो पूज्य के प्रति है, यह हमें लोभी, वह हमारे भीतर लोभ की, मोह की, अभिमान की पुष्टि करती है। यही कारण है कि **ऊसर बीज बए फल जथा**- बरसों प्रवचन सुनते हो गए गुरूजनों के लेकिन जैसे ऊसर में बीज व्यर्थ जाता है, वैसे व्यर्थ जा रहा है।

श्रद्धा मोह का रूप ले रही है। सुनते हैं सत्कथा, भगवत्कथा, सुनी तो कथा लेकिन अच्छा क्या लगा? आंखों से कुछ अच्छा लगा तो बार-बार देखने की रुचि हो गयी, कानों से कुछ अच्छा लगा तो बार-बार सुनने की इच्छा हो गयी तभी तो आप कहते हो एक गीत सुना दो, गीत सुना दो क्यों? गीत अच्छा लगता है कानों के द्वारा, रूप अच्छा लगता है आंखों के द्वारा, मन को भा जाता है। और फिर मन क्या चाहता है, जो मन को भाया है वही बार-बार चाहता है।

अब **ऊसर बीज बए फल जथा-** हुआ करे कथा, हुआ करे सत्संग।

श्रद्धा के साथ अगर ये विकार हैं तब श्रद्धा का संबंध ज्ञान से नहीं होगा। **श्रद्धावान लभते ज्ञानं,** इसीलिये बहुत आप लोगों को सावधान रहना है। आज का विषय हमने रखा था-

ममता रत सन ज्ञान कहानी- अपने व्यासों से यही निवेदन किया था- हम लोग इस प्रकाश में देखें कि हमारे भीतर ममता है तो ये ज्ञान की कहानी ऊसर में बीज बोने के समान व्यर्थ है। हमारे भीतर लोभ है, हमारे भीतर कामनायें हैं, ऊसर में बीज बोने के समान ये ज्ञान चर्चा व्यर्थ जा रही है और अभी जाती रहेगी- संत के वचन हैं।

यहां कथा चल रही थी, सत्कथा है तमाम लोग ऊपर घूम रहे थे। हम जब गये तो हमारे पीछे चल पड़े। ये क्या है- मोह ये विवेक नहीं है। ऊपर क्या कर रहे हैं कोई समाधि नहीं लगाये हैं, ध्यान नहीं कर रहे हैं, घूम रहे हैं। पथिक जी बोलेंगे तब सुनेंगे और क्या सुनना (ये मोह है)2। लोभ छोड़ करके तो आप यहां तक आ पाये हो, मोह के कारण आगे सद्गति नहीं हो रही है। अगर लोभ न छोड़ा होता तो अपनी आप दुकान, व्यापार, बाजार काम छोड़ करके सैकड़ों मील दूर से जाने कहां-कहां से आप लोग यहां आये हो। जरा ये 3 शब्द याद रखना, **वस्तु का लोभ व्यक्ति का अनादर करता है।** बहुत सोच लेना- वस्तु

का लोभ व्यक्ति का अनादर करता है। घरों में लड़ाईयां क्यों होती हैं, देवरानी जेठानी, सास-बहू, पति-पत्नी, भाई-भाई, मुकदमें चलते हैं, हत्यायें हो जाती हैं। **1. वस्तु का लोभ व्यक्ति का अनादर** करता है। बड़ा छोटा सा वाक्य- **2. और, व्यक्ति का मोह, धर्म का अनादर करता है।** बहुत विचार करना पड़ेगा और व्यक्ति से मोह हो गया है तो धर्म अर्थ की कोई जरूरत नहीं, कोई आदर नहीं। व्यक्ति व्यक्ति से संबंधित हम रहेंगे, व्यक्ति का पक्ष लेंगे, व्यक्ति के पक्ष में ही बड़े सुखी अपने को मानेंगे।

पहले तो अगर आपको धन से मोह है तो परिवार के संबंधियों में झगड़ा होगा। अगर किसी से मोह ज्यादा है तो धन उसको दे दोगे। धन दे देगा भाई भाई को, देवरानी जेठानी को, सास बहू को दे देगी लेकिन लोभ न देने देगा, लोभ झगड़ा करेगा। दाबे बैठे रहेंगे रकमें।

वस्तु का लोभ व्यक्ति का अनादर करता है। और व्यक्ति का मोह धर्म का अनादर करता है। अगर मोह ज्यादा है तो धर्म क्या कहता है- नहीं, न्याय नहीं है, हम तो इन्हीं के साथ ऐसा करेंगे, इन्हीं को देंगे, हम इन्हीं को मानेंगे, हमारे जो कुछ है यहीं है। घरों-घरों में, समाज में, जाति में, देश में यही हो रहा है।

व्यक्ति का मोह धर्म का अनादर करता है। एक सीढ़ी और बढ़ जाना- धर्म का मोह, धर्म का अभिमान, विवेक का अनादर करता है। चूंकि हम हिन्दू धर्म को मानते हैं, हम आर्य धर्म को मानते हैं, हम इस्लाम को मानते हैं, हम जैन को मानते हैं, हम बौद्ध को मानते हैं। धर्म का अभिमान है ये विवेक का अनादर करना है। कहां-कहां गाड़ी हमारी जीवन की यात्रा रुकी हुई है और हम लोग विचार नहीं कर पाते। आप सुन रहे हैं शायद कभी बुद्धि में बैठ जाये और नहीं तो जो मिला है- छूटने के लिये जा रहा है। जो मिला है छूट जायेगा। परिवार छूट जायेगा, धन छूट जायेगा, जवानी चली जायेगी, काले बाल सफेद हो जायेंगे। जिसका लोभ है वह छूट जायेगा, जिससे मोह है वह छूट जायेगा, जिसका अभिमान है वह छूट जायेगा। तुम रह जाओगे हाय-हाय करने के लिये। इसलिये अंत में क्या हुआ (धर्म का)2 अभिमान विवेक का अनादर करता है और (विवेक के अनादर से)2 ही बस सत्य का अनादर होता है। विवेक का अनादर कर दिया, अब क्या बाकी रह गया? यही कारण है कि आपके सामने चित्र रखा जा रहा है कि क्या कारण है- रामायण पढ़ते हुये, गीता पढ़ते हुये, मंदिर में आते हुये, पूजा करते हुये हमारे जीवन में अशांति, दुख और

भय और चिन्ता, ये नहीं मिटते। कारण यही है 2 न 4।

अगर इसका फैसला कर लो तो जीवन का उत्थान तुम्हारे हाथ में है। अगर तुम न करो तो कोई परमात्मा नहीं है कोई परमात्मा ऐसा तुम्हारा पक्षपाती नहीं है जो कि इन दोषों के रहते और तुम्हें भक्ति मिल जाये, हमें मुक्ति मिल जाये, हमें शांति मिल जाये, अभी तक ऐसा नहीं हुआ है, आगे भी नहीं होगा। इसीलिये भगवान कह रहे हैं मैं स्वतंत्र हूँ और तुम भी स्वतंत्र हो। स्वतंत्र वही है जो किसी को परतंत्र नहीं बनाता। समझ लेना, जो परतंत्र किसी को बनाता है वह स्वतंत्र रह नहीं जाता। परमात्मा स्वतंत्र है- किसी जीव को परतंत्र बनायेगा? लिखा है कहीं? लिखा है- जीव परतंत्र है और ईश स्वतंत्र है। लेकिन यह निर्णय वहां नहीं किया- जीव क्यों परतंत्र हो गया? परतंत्र इसलिये हो गया कि प्रभु को भूल करके प्रभु से मिले हुये को अपना मानने लगा। ध्यान देना इस पर। प्रभु ही व परमात्मा ने परतंत्र नहीं बनाया, परमात्मा से जो जीवन में हमें मिला था- वस्तु मिली तो मेरी बन गये लोभी व्यक्ति मिले तो मेरे हो गये मोही, पद मिला तो मेरा हो गये अभिमानी। अब बताओ कौन हमें मुक्त करेगा?

परमात्मा से मिले हुये को अपना मानना इंसान के साथ बेइमानी होती तो शायद कहीं रिश्वत से हम छूट जाते, धन दे करके छूट जाते, हाथ जोड़ करके छूट जाते। स्वतंत्र परमात्मा के प्रति परमात्मा के हो करके हम परमात्मा के साथ बेइमानी कर रहे हैं, अधर्म कर रहे हैं संसार में कोई शक्ति नहीं जो हमारा दुख मिटा सकें चाहे जितने मंदिरों में जाओ, चाहे जितनी तीर्थयात्रा करो, चाहे जितना जप करो, कीर्तन करो। बड़े शुभ हैं, शुभ कर्म हैं ये। अभी-अभी आपने प्रार्थना की- जय जय कौन सी प्रार्थना **जय जगदीश हरे।** जीवन बरसों बीत गये प्रार्थना करते हुये लेकिन नहीं सुनी गयी, जरा ध्यान देना नहीं सुनी गई। अगर सुनी जाती तो आज ही प्रार्थना का प्रभाव हमारे तुम्हारे जीवन में उतर आता। रोज प्रार्थना कर रहे हैं जैसे रिकार्ड बज रहा है। भीतर कुछ बाहर कुछ, भीतर कोई दुख नहीं है, ऐसा साबित करते हैं प्रार्थना के द्वारा बड़े दुखी हैं, बड़े अशांत हैं। और भीतर क्या है? मौज है कैसे प्रार्थना समाप्त हो, प्रसाद मिले। क्या नियत है? रिकार्ड की तरह हम प्रार्थना करते हैं, यंत्रवत् हम पूजा करते हैं, भगवान की आरती करते हैं।

और मंदिरों में क्या होता है, जो मंदिरों के मालिक हैं, जिन्होंने मंदिर बनवाया, वह पूजा आरती में शामिल नहीं होते। पुजारी पूजा करै, फल हमें

मिले, उसको वेतन देंगे, फल हमें मिले। क्या ये चालाकी है। अगर तुम्हें पत्नी से प्रेम है तो कोई दूसरा पत्नी की पूजा करेगा! पुत्र से प्रेम है तो कोई पुत्र को दूसरा कुछ मानेगा? जो हमें प्रिय है उस पर तो हम अपना कब्जा जमायेंगे लेकिन भगवान, भगवान की पूजा पुजारी करें। तनख्वाह दे देंगे। प्रेम की ये मांगें हैं? तो ये हमारी पूजायें झूठी हैं- यहां सुन रहे हो और कहीं सुनोगे भी नहीं और पुजारी महाराज न सुनें तो अच्छा। हमारी पूजायें झूठी हैं और परमात्मा इतना धोखा नहीं खाता कि हमारी झूठी पूजाओं से वह संतुष्ट हो जाय, प्रसन्न हो जाये। कथायें बड़ी अच्छी गढ़ी गयी हैं। पंडितों ने कथायें बड़ी अच्छी गढ़ी हैं। ऐसी-ऐसी कथायें गढ़ी हैं।

एक शंकर जी का भक्त था तो वह पूजा करता था। वहां पहुँचा एक दिन चोर। तो चोर ने सोचा- हम घंटा ले जायें तो घंटा उतारने के लिये ऊंचा था तो शंकर जी की मूर्ति के ऊपर चढ़ गया। जब चढ़ गया तो शंकर जी प्रसन्न हो गये- मांगो वरदान, सब तो फूल-फल ही चढ़ाते हैं तुमने अपने को ही चढ़ा दिया। ऐसी-ऐसी कथायें गढ़ ली हैं। मानो शंकरजी भी इतने अल्पज्ञ, प्रसन्न हो गये- अपने को चढ़ा दिया। चुरा रहा है घंटा। शंकरजी समझ रहे हैं, अपने को चढ़ा रहा है।

इन कथाओं से हमारा भाव जरूर बढ़ जाता है लेकिन क्या? बरसों पूजा करते हो गये मंदिरों में, बरसों जाते हो गये तीर्थों में, बरसों नहाते बीत गये गंगाजी में, तन तो शुद्ध हुआ लेकिन मन अभी तक शुद्ध न हो पाया। कारण- मन में है लोभ, मन में है मोह, मन में है अभिमान, अहंकार। मन में बैठा हुआ अभिमानी है, लोभी है, मोही है- इन दोषों के रहते हुये- **ऊसर बीज बए फल जथा।** सारे उपदेश ऊसर में बीज बोने के समान हैं क्योंकि हमें उपदेश में परमात्मा की चाह नहीं है। जो गुरूजन बताते हैं, जो रामायण बताती है, जो हमारे भगवान बताते हैं- तुम्हें शांति चाहिये, मत दौड़ो तीर्थों में, मत जाओ गंगा जी नहाने, मत जाओ साधु महात्माओं के पास। अगर गये हो तो साधु महात्मा बता रहे हैं क्या? तुम शांति चाहते हो मत भटको- अशांत क्यों हो ये जान लो। तुम्हें अशांत अगर भगवान ने बनाया है तो प्रार्थना सफल हो जायेगी लेकिन परमात्मा किसी को अशांत नहीं बनाता। हम स्वयं अशांत होते हैं और शांत होने के लिये भगवान से प्रार्थना करते हैं। स्वयं दुखी होते हैं, कौन सुनेगा हमारी प्रार्थना?

इसीलिये ऐसे ही सब समय बीत रहा है, हम विचार नहीं करते।

तुलसी मिटे न वासना, बिना विचारे ज्ञान।
तन सुखाय पंजर करे धरै रैन दिन ध्यान।।

तो मोही के लिये यह उपदेश- यही बड़े पुण्य हैं तुम्हारे कि सुन रहे हो लेकिन अभी असर नहीं होगा क्योंकि मोह है।

प्रेम फंसा है व्यक्तियों में, प्रेम फंसा है धन में, प्रेम फंसा है पदाधिकार में, मान में, प्रेम फंसा है कामना की पूर्ति में, भगवान के लिये क्या बचा? सब यहां फंसा है। और **रामहिं केवल प्रेम पियारा-** रामायण में पढ़ते रहेंगे- उनको प्रेम प्यारा है हम उनको फूलमाला, हलुआ-पूड़ी दिखा रहे हैं, मिठाई दिखा रहे हैं- प्रसन्न हो जाओ भगवान। वह कहते हैं- तुम रखो अपना, हमारा प्रेम हमें लौटा दो। तुम कहते हो- ये तो होगा नहीं, प्रेम हम संसार में चाहते हैं तुम्हें कैसे लौटा दें? तुम्हारी जिद है प्रेम लौटायेंगे नहीं, वस्तु ले लो, पैसा ले लो और ले लो जो हमारे पास है, पूरा वह भी न देंगे, हिस्सा देंगे। पूरा देंगे तो हमारी गुजर-बसर कैसे होगी? कैसी चालाकियां चल रही हैं भगवान के साथ।

एक शब्द बीच में हमने कहा था- जब तक हम परमात्मा से मिले हुये को मेरा-मेरा मानेंगे तब तक हम बेईमान हैं। ईश्वर के साथ बेईमानी करने वाला शांति नहीं पा सकता, अशांति नहीं मिट सकती, भय नहीं मिट सकता, चिन्ता नहीं मिट सकती। भगवान राम के सामने लोग थे, वो भी मेरा मानते थे, कृष्ण के सामने थे वो भी मेरा मानते थे और कृष्ण हुआ करें भगवान, राम हुआ करें भगवान, भगवान के दर्शन करने वालों को सुख तो मिला लेकिन दुख नहीं मिट सका। याद रखना हमारे तुम्हारे मिट जायेंगे? मिट सकते हैं- परमात्मा स्वतंत्र है, ईश्वर स्वतंत्र है। हम ईश्वर के जीव **ईश्वर अंश जीव** अविनाशी कि विनाशी? आपको अपने अविनाशी स्वरूप की याद आती है कि विनाशी की? जरा ध्यान से देखना- अविनाशी स्वरूप की याद नहीं आती, विनाशी देह की याद आती है। हाय ऐसा न हो जाय, वैसा न हो जाय, धन की याद आती है, परिवार की याद आती है और नाम लेते हो अविनाशी का, और ध्यान किसका है विनाशी का। ऊपर-ऊपर तन की यात्रा होती है अविनाशी की दिशा में, मन की, मन कहां फंसा हुआ है विनाशी में। क्या होगा? इसीलिये हमारे जीवन के दिन इतने बीत गये, रहे सहे वो भी बीत जायेंगे, अपना ही निरीक्षण हम नहीं कर

पाते। यही कारण है मंदिरों में जाते हुये, गंगा नहाते हुये, सत्संग करते हुये, भागवत सुनते हुये, रामायण का पाठ करते हुये (इतना भी होश नहीं आता)2, आपने सुना रात भर रामायण का अखण्ड पाठ हुआ। क्या जरूरत है माइक लगाने की, लोग सुनें हम भक्त हैं, कोई बड़ा फल मिल जायेगा। रहेंगे वैसे के वैसे पाठ करने वाले। अनेकों बार पाठ कर चुके। एक चौपाई रामायण की कोई याद नहीं आती यही क्या? **ईश्वर अंश जीव अविनाशी। चेतन अमल सहज सुखराशी।** यह मेरा सुरूप है और हम कहां हैं बिल्कुल भूल गये अपने स्वरूप को। परतंत्र हो गये किसके? दूसरों का सहारा लेकर के। अब कहा करें भगवान भगवान। ऊपर-ऊपर भगवान निकलेगा और भीतर शैतान का कब्जा रहेगा, है, अहंकार सब पर कब्जा किये बैठा है मेरा-मेरा।

एक दिन से न चलेगा, शाम सुबह भगवान के मंदिर में जाओ। **त्वमेव माता-** रोज कहा जाता है, ना अभी कहा गया ना **त्वमेव माता च पिता त्वमेव** तुम्हीं माता हो, तुम्हीं पिता हो, तुम्हीं विद्या हो, तुम्हीं सब कुछ हो, **त्वमेव सर्वं मम देवदेव-** अभी तो तुम्हीं मेरे सर्वस्व हो और जब यहां से पीठ फेरी और घर गये तो तुम्हीं सर्वस्व हो कि मैं ही सबका सर्वस्व हूँ। भूल गयी प्रार्थना- ऐसी बेईमानी हम कर रहे हैं और हम कहते हैं कि हमें भक्ति मिल जायेगी, मुक्ति मिल जायेगी, शांति मिल जायेगी। कोई द्वार नहीं है तुम्हें मुक्ति, भक्ति, शांति दे सके। अब हम इतने स्वतंत्र हैं कि चाहें तो आज ही मुक्त हो सकते हैं, चाहें तो आज ही भक्त हो सकते हैं। जरा ध्यान देना चाहें। चाहे तो आज हम भक्त हो सकते हैं- कोई रोकने वाला नहीं है संसार में। चाहे तो हम मुक्त हो सकते हैं- कोई बांधने वाला नहीं है संसार में। चाहे तो हम शांत हो सकते हैं- संसार में कोई हमें अशांत बनाने वाला नहीं है। आप कहोगे- चाहते न होते तो यहां क्यों आते, चाहते न होते। आप नहीं चाहते हो (आप चाहों से भरे हुये हो)2 हृदय को लेकर के, उस चाहों से भरे मन में आप चाहते हैं- ज्ञान का प्रकाश, नहीं होगा। कभी जरूरत पड़े तो याद रखना- न कहीं तीरथ में जाना, न किसी मंदिर में जाना, न किसी महात्मा के पास जाना। जब कभी तलाश हो बंधन कैसे छूटे, हम मुक्त कैसे बनें, हम भक्त कैसे बनें, हम शांत कैसे हो जायें, एक ही काम करना- उसी समय तुम सब कामनाओं को छोड़ देना। हमें अब संसार से कुछ नहीं चाहिये, इतना कह देना भीतर से, ऊपर से नहीं, ऊपर-ऊपर तो रोज कहते हैं। अब हमें संसार से कुछ नहीं चाहिये क्योंकि हम जान गये- यह संसार

क्या है? ये संसार मेरा नहीं है, सब परमात्मा का है, परमात्मा का है, परमात्मा के संसार में कैसा अद्भुत- नफरत नहीं करनी है, घृणा नहीं करनी है, किसी से द्वेष नहीं करना है।

एक शैतान भी प्रभु के राज्य में, चोर डाकू भी प्रभु के राज्य में, अपने कर्म का फल प्रभु के विधान से भोगेगा, हम कौन होते हैं उनसे नफरत करने वाले? घर में आयेंगे तो घर में आने दो, नियम है जैसे उनके शरीर वैसे ये शरीर।

हनुमान जी भी कहते हैं- हम कभी न मारते। **जिन्ह मोहिं मारा तेहिं मैं मारे,** लंका में- हम कभी न मारते, हमारा कोई दुश्मन नहीं है। तो हमारे शरीर को मारते हैं हम उनके शरीर को मारते हैं। न्याय है लेकिन सब में भगवान, कहां ऐसी दृष्टि आयी?

अगर कभी आपको जरूरत पड़ जाये उस समय कल हमने बताया था? 1 दिन, 7 दिन में, 1 दिन चाह रहित हो करके देखो। 1 दिन ज्यादा नहीं, ज्यादा तो कहोगे मर जायेंगे लेकिन बात ऐसी नहीं है। काम कैसे चलेगा, परिवार वाले हैं, घर-गृहस्थी है, बाबा थोड़े ही हो गये हैं, आगे पीछे कोई नहीं। 1 दिन चाह रहित, सबेरे से उठो और स्नान कर लो। जो तुम्हारे अधिकार में हो, जो तुम्हारे वश में हो उसका सही सदुपयोग करो लेकिन दूसरे से जो मिलता है उसे न चाहो। चाह का मतलब, चाह उसे कहते हैं जो दूसरे से पूरी होती है। दूसरे से जिसकी पूर्ति होती है, वह दिन भर न चाहो। 6 महीने अगर अभ्यास कर ले जाओ तो महाराज आप ही आप पता चल जायेगा मुक्ति कितनी सहज है? भक्ति कितनी सहज है? क्या कहा- सुनते हो। 1 दिन चाह रहित आज कुछ न चाहेंगे। चाह की परिभाषा बताई जो दूसरे से जो मिलता है, उसे न चाहेंगे। लेकिन शरीर जो कर सकता है। यह जरूर कर लेंगे, भोजन रखा है जरूर खा लेंगे। आटा है दाल है भोजन बना लेंगे, पानी पी लेंगे लेकिन नौकर से पानी न चाहेंगे हो सकता है नाहीं कर दे। अपने आप जो है उसका उपयोग कर लेंगे, जो नहीं है उसको न चाहेंगे। जरा और सोच लेना जो नहीं है गंभीर है जो नहीं है उसका प्रयत्न मत करो। घर में आटा-दाल है भोजन बना लेंगे हाथ हैं, पैर हैं, आगी है- भोजन बना खा लेंगे। भगवान की दया से सुलभ है।

जो है उसे देखना, जो नहीं है उसको न देखना, भूल जाना, पुत्र नहीं है तो पुत्र नहीं चाहिये। पति नहीं है तो आज पति नहीं चाहिये, आज पत्नी नहीं

चाहिये, आज शिष्य नहीं चाहिये, आज गुरू भी नहीं चाहिये। आज हमें भगवान भी नहीं चाहिये। जरा ध्यान देना- भगवान को भी चाहोगे तो भी पराधीन हो जाओगे। आज भगवान भी नहीं चाहिये। कौन सा भगवान? जिसको तुमने जो बनाया है। तुमने जिस भगवान को नहीं बनाया- वह भगवान तुमसे कभी अलग हो ही नहीं सकता, कभी होता ही नहीं। जो तुमने बनाया, वह भगवान मिलेगा और छूटेगा। जो अपने से भिन्न है उसे हमें नहीं चाहिये। 1 दिन चाह रहित हो करके देखो और 6 महीने तक 7 दिन में 1 दिन- महाराज बहुत घटित हो जायेगा आपके भीतर। धीरे-धीरे अभ्यास करते चलो वरना जो कुछ कर रहे हो जीवन बीत रहा है। इन क्रियाओं से, इन कृतियों से अहंकार संतुष्ट हो रहा है और जब तक अहंकार संतुष्ट तृप्त होता रहेगा अपनी कृतियों से तब तक भोग मोह है। भोग नहीं अहंकार कब संतुष्ट होता है- मेरा मानता है मेरा, ये मेरा का जितना विस्तार है वही अहंकार है। एक बात कल साधना की बतायी थी क्या? 1 दिन कुछ न चाहो, अहंकार ही चाहता है। 1 दिन अहंकार की चाह पूर्ति न करो जो दूसरे से होती है- देखना कितनी आजादी का अनुभव होता है भले ही भूखे रह जाओ, जैसे रह जाओ। पास हो उसका उपयोग कर लेना दूसरे का सहारा मत लेना। जो चाह दूसरे से पूर्ति होती है, उसको न चाहना और दूसरा कोई आ जाये तुम्हारी चाह पूर्ति के बीच में तो उसे भी स्वीकार कर लेना नहीं भी न करना। बड़ी विचित्र बात है।

चाह रहित और प्रयत्न रहित तीसरी चीज क्या है? याद है किसी को सुने हो- अकिंचन अचाह, अकिंचन अपना कुछ न मान करके संसार में अपना कुछ नहीं है बस यह तय करो अपना कुछ नहीं। परमात्मा के सिवा अब अपना कुछ नहीं है और जब परमात्मा के सिवा अपना कुछ नहीं है तो हमें चाहिये क्या, हमें कुछ नहीं चाहिये। और जब कुछ नहीं चाहिये तब करना ही क्या है? कुछ नहीं करना है, कैसा क्रम बंधा हुआ है? पहले तो संसार में अपना कुछ नहीं है बेईमानी से हमने मान रखा है- हैं ही नहीं। छोड़ना कुछ नहीं है, कुछ अपना नहीं मानना है। **अकिंचन-** अपना कुछ नहीं है। **अचाह-** हमें कुछ नहीं चाहिये और **अप्रयत्न-** अब करना ही क्या है? बस 3 चीजें सध जायें, हो गया योग, हो गयी मुक्ति, हो गयी शांति इतनी सहज है। चाह रहित हो जाओ अपना कुछ न मानो, चाह रहित हो जाओ और फिर कुछ न करो। और फिर देखो क्या देखो? हो क्या रहा है। कुछ न करो का मतलब बैठे रहो बैठना भी कुछ

करना हो जायेगा। देखो क्या हो रहा है? शरीर में धड़कन चल रही है, सांस चल रही है।

देखो जो हो रहा है, हम नहीं कर रहे हैं। जो करते हो वह न करो और जो हो रहा है उसको देखो इसका नाम है अन्तर साधना। थोड़े दिन अगर यह साधना चल जाये तो जो बरसों नहीं हुआ थोड़े दिन में आपको हो सकता है लेकिन अभी जरूरत नहीं है, आने को भले ही आ जाओ यहां पर जरूरत नहीं है। कई चीजें हम कह गये, ज्यादा बोलेंगे, सब भूलता चला जायगा। बड़ी सार बात है गुरूज्ञान की। संक्षेप में फिर दोहरा देते हैं पहले क्या सुना आपने? ममता रहते, लोभ रहते, क्रोध रहते, कामनाओं के रहते सारे उपदेश, सारे पाठ, तमाम पूजा, तमाम तीर्थयात्रा, तमाम तुम्हारे शुभकर्म ये सब अहंकार के भोग में समाप्त हो जायेंगे। परमात्मा के द्वार में न पहुंचा पायेंगे, अभी तक नहीं हुआ। दूसरी बात क्या सुनी आपने, दूसरी बात क्या है इशारा करो, कोई याद है (अकिंचन)। वह तो बाद में है अच्छा हां चाह रहित, पहले चाह रहित, पहले अपना कुछ नहीं है, बेईमानी छोड़ दो, बीच में कहा था- बेईमानी छोड़ो। बेईमानी क्या है? जो मिला है उस पर अपना कब्जा कर लिया है मेरा और यह कब्जा किसकी वस्तु पर है जो परमात्मा से मिला है। परमात्मा से मिले हुये को अपना मानना बेईमानी है। तुम लोग तो कोई बेईमान नहीं हो क्यों भय्या, हो तो नहीं। भीतर झांक लेना। जहां मेरा कहा बेईमानी, परमात्मा का है ईमानदारी है, इसका पता कैसे चलेगा। जो आता है तो परमात्मा का है मेरी गांठ का क्या है जो आता है उसका है देख लेंगे और जाता है तो वह जावे। अपना चिन्ता रहित, भयरहित, दुखरहित, कैसा जीवन सुन्दर हो सकता है। ईमानदार बन जाओ, जीवन सुंदर हो जायेगा। धर्मात्मा धर्ममय जीवन बिताओ, जीवन तुम्हारा निर्भय हो जायेगा। धर्म-धर्म चिल्लाते हैं। कोई कहता है मंदिर में जाते हैं बड़े धर्मात्मा गंगा नहाते बड़े धर्मात्मा। ये धर्म है? मंदिरों में धर्म का पता भी नहीं, अब आप न चौंकें क्या बोल रहे हैं? मंदिर और धर्म- पता तक नहीं। अनेकों पंडितों विद्वानों से पूछा जाय- श्लोक सुना देंगे लेकिन जीवन में धर्म का पता तक नहीं। अनेकों धर्मों का पता है। भगवान ऐसे ही नहीं कह रहे हैं अर्जुन ऐसे परमभक्त से **सर्वधर्मान परित्यज्य** सर्व शब्द कहा- कि अनेकों धर्मों को तुमने जो सुन रखा है, मान रखा है, उनको त्याग करो। सर्वधर्मान् और मामेकं, मुझ एक की शरण ले लो, क्या बढ़िया बात है। मुझ एक मामेकं- मैं एक हूँ वही परमात्मा अनेक वह

प्रकृति, जो अनेक हैं वही संसार जो एक है वही परमात्मा। अच्छा तुम लोग इतने बैठे हो तुम जरा अपने भीतर झांको, तुम्हारे भीतर ऐसा क्या है जो एक है और एक बाद जो अनेक है। बड़ी बुद्धि तीव्र है- कभी हिसाब न लगाया होगा, अब लगाना।

एक क्या है? एक वही है जहां दो की गुंजाइश नहीं है। एक महात्मा एक गांव में रहते थे तो फौज के आदमी पहुंचे, नमस्कार किया और बड़ी दया की तुम्हारा इतना छोटा-सा झोपड़ा है और तुम महात्मा साधु हो करके भगवान की मूर्ति नहीं रखे हो? उन्होंने सीधा-सा कह दिया- यहां (दो की जगह नहीं है)2। है नहीं बेचारा ले नहीं पाया। दूसरे दिन मूर्ति ले आये, जब ले आये तब भी महात्मा कहता है- अरे भाई, यह क्या किया तुमने। यह एक ऐसा स्थान है जहां दो की गुंजाइश ही नहीं है। बस (एक ही रहना है)2 मामेकं तो तुम्हारे भीतर एक क्या है? तुम एक को भले ही न जानों अनेकों को तो जानते हो। बचपन से लेकर के तुम्हारा संबंध अनेकों से हुआ है कि नहीं और जब अनेकों से संबंध हुआ प्रेम में तो अनेक पीछे ये एक भूल गया कि याद आता है? भले ईश्वर का नाम लो, भले कीर्तन करो, भले प्रार्थना करो। मैंने बीच में कहा था- तुम्हारी प्रार्थनायें बिल्कुल झूठी हैं। तुम्हारी प्रार्थनायें रिकार्ड, रिकार्ड में रोज, अब तो रिकार्ड में सत्यनारायण की कथा भी चल गयी है। अब तो रिकार्ड में तो रोज रामायण की कथा चलती है, भक्त बड़े भक्त, रिकार्ड तर जायेगा कि नहीं, रिकार्ड को भक्ति मुक्ति मिल जायेगी कि नहीं क्यों भय्या? और हम लोग जैसे रिकार्ड बजाता है ऐसे बजने लग जाते हैं। स्तुतियां हो गयीं, प्रार्थनायें भी हो गयीं- भीतर कोई असर नहीं ऊपर-ऊपर सब हो रहा है। क्या? ये तमाशा है।

अहंकार विमूढ़ात्मा कर्त्ताऽहमिति मन्यते- यह जो आत्मतत्व है यह अहं के आकारों से ढक गया है- याद रहेगा- आप क्या हैं? ये पता नहीं लेकिन आप परिचय देते हैं आकारों से ढके हुये को अपना पता मैं (यह हूँ) बने जाने क्या-क्या बन गये। कैसे चले? हम लोग सावधान नहीं हैं, ध्यान करते हैं। ध्यान का पता नहीं, ध्यान से देखना होता है, ध्यान से करना नहीं होता। हम किये चलाये देते हैं, प्रार्थना किये चले जा रहे हैं। प्रार्थना दुखी हृदय की पुकार है। बिना बोले प्रार्थना हो जाती है। यहां बोलते बरसों बीत गये- **जय जय सुरनारयक**। एक बार प्रार्थना हुई थी तो क्या हुआ था- **हरि व्यापक सर्वत्र समाना।** शंकर जी कह रहे हैं। शिव जी की सम्मति है कि नहीं। हरि व्यापक

सर्वत्र लेकिन शर्त क्या है? **प्रेम ते प्रगट होहिं मैं जाना,** तो जब प्रार्थना की गई रामायण में तो प्रगट हो गये कि नहीं और यहां जीवन बीत रहा है प्रगट होने का पता नहीं- ये प्रार्थना है ही नहीं, झूठी है और हम झूठ को नहीं जान पाते। संतों के शब्द हैं- **तुलसी तैं झूठो भयो करि झूठे संग प्रीति-** असत् के साथ, झूठ के साथ प्रीति करके हम झूठे हो गये हैं, सत् का पता नहीं और अब भी इसका कोई दुख नहीं। आपके परिवार की हानि की बात कोई बता दे तो बड़ा असर होगा। ये जो आपको बात बताई गई साधक के लिये सामने रखा जाता है। कितनी महान हानि है- **स्वर्ण लाभ लख परत नहीं, लखत लौह की हानि,** हाय लोहा चला गया और स्वर्ण खो रहा है इसका पता नहीं है। आप अपने भीतर जो एक है जिस एक से अनेक प्रकाशित हो रहाहै उस एक को जानो लेकिन कोई परवाह नहीं। महाराज जब आपकी कृपा होगी तब रिश्वत देनी पड़ेगी- ऐसे बंधे बंधाये शब्द आप लोग बोल देते हो, गुरू की कृपा होगी, भगवान की कृपा होती है तब सत्संग मिलता है जब संत की कृपा होती है तब ऐसा होता है वैसा होता है- साफ बचा ले गये यानि हम बिल्कुल ठीक, कृपा नहीं हो रही है हम बिल्कुल तैयार हैं लेकिन गुजर नहीं है। हम पात्र फैलाये बैठे हैं, गंगाजी हमारे भीतर नहीं भर जातीं, गंगाजी नहीं भर जातीं। अरे बाबा गंगाजी बह रही हैं जितना तुम्हारा बड़ा पात्र हो उतना भरते चले जाओ लेकिन कुछ होश नहीं है। आज हम- कल से हम सोच रहे हैं- ये क्या सत्संग है? ये अहंकार की कृतियां हैं तृप्ति हो रही है। अहंकार तृप्त हो रहा है अपनी कृतियों से, इससे काम न चलेगा तृप्त होता रहेगा।

अहंकार के पार गये बिना, मन के पार गये बिना दर्शन का द्वार ही न खुलेगा, याद रखों इसलिये जो चीज पहले सहायक है वही बाधक है। मंदिर बहुत सहायक हैं लेकिन जीवन भर मंदिर जाते रहे तो बाधक है। तुम्हारी ये प्रार्थनायें, झूठी प्रार्थनायें बहुत सहायक हैं शुभ कर्म हैं और इसी में अटके रहे, शुभ कर्म में अटके रहे तो भाव भी अच्छे न होंगे। धन्य हैं शुभ कर्म वही है जिससे पवित्र भाव की जाग्रति हो जाय। पवित्र भाव जब हृदय में जब जाग्रत होगा तब तुम्हारे भीतर बुद्धि से अज्ञान हट जायेगा, ज्ञान प्रकाशित, विवेक प्रकाशित हो जायगा- कसौटियां हैं ये भाव शुद्ध नहीं हो रहा है आप कहते हो- हम प्रार्थना करते हैं, पूजा कर रहे हैं, गलत। आपकी प्रार्थना पूजा सब झूठी, अगर सच्ची होगी तो भाव पवित्र हो जायेगा और भाव पवित्र होगा तो बुद्धि शुद्ध

हो जायेगी। ज्ञान के प्रकाश में देखते ही आप पाओगे कि मैं मुक्त ही हूँ बंधन कोई है ही नहीं, मुक्त ही हूँ बंधन है ही नहीं। मैं भक्त ही हूँ भिन्नता है ही नहीं। अंतिम शब्द सुन लो- परमात्मा की भक्ति मांगनी नहीं है होश आयेगा तो पता चलेगा कि परमात्मा से दूर होते तो हम भक्ति मांगते, कभी दूर हुये ही नहीं। अगर हमें संसार ने बांधा होता तो मुक्ति चाहते संसार ने हमें बांधा ही नहीं हम ही बंधे हैं, इसका नाम है विवेक, ज्ञान में दर्शन है।

अभी न भाव शुद्ध है, न हमारी प्रार्थनायें शुद्ध हैं, न हमारे दर्शन शुद्ध हैं, कोई भी क्रिया सब काम का भोगी बना। और हमें होश नहीं है। अहंकार भोगी बन रहा है। लेकिन होश नहीं है फिर इतना तो पुण्य सहायक है कि यहां आ जाते हो लेकिन अभी बुद्धि साथ नहीं है। अब ध्यान का विषय और आपके सामने रखना है और यह भी याद रखना- बड़ी कृपा है (भगवान की)2, रामायण के अनुसार भगवान की बड़ी कृपा है जो आप आ गये। अब हम कहते हैं- हे भगवान**!** हमारे ऊपर कृपा करो कि यह सम्मेलन अब हम कभी न देखें, यह सम्मेलन अब हम कभी न देखें। यह कब होगा? जब हमारे ऊपर कृपा होगी, अभी तुम्हारे ऊपर है तो हम बंधे बंधाये आपके पीछे दौड़ रहे हैं। हमारे ऊपर जब कृपा होगी तो महाराज भगवान हमें तुमसे साफ बचा लोगे हम मुक्त हो जायेंगे। अभी बंधे हैं तुमसे। याद रखना, हो सकता है इस सम्मेलन के बाद अब सम्मेलन हमारे साथ आपका न हो। तो हमारे ऊपर कृपा तुम्हारे ऊपर तो कृपा हो ही रही है। हमारे ऊपर बाकी है, ऐसा असर हो जाये हमारे पास आने की जरूरत न रह जाये, मिल गया, दिख गया। खुल गयी आंख, अब क्या जाना, अब क्या आना, अब क्या दौड़ना। सब यात्रायें समाप्त, सब क्रियायें समाप्त। (ऐसा कैसे हो सकता है?) ऐसा कैसे हो जब तुम चाहो। क्या कहते हैं (आपके पास आने की जरूरत न रह जाये ये नहीं हो सकता।) हमारे पास आने की जरूरत न रह जाये, जब आप जरूरत को समाप्त कर दें। क्या सुना? हम तुम्हारी जरूरत पर आये हैं कि अपनी? तुम्हारी जरूरत समाप्त हो जाये, महाराज तृप्त हैं, अब तृप्त हैं, अर्जुन की जरूरत समाप्त हो गयी भगवान की सुनते-सुनते बड़े प्रश्न किये, बड़े तर्क किये, भगवान समाधान करते चले गये। अंत में अर्जुन कहते हैं- **नष्टो मोह, स्मृति लब्ध्वा, करिष्ये वचनं तव।** अब जरूरत समाप्त हो गई अर्जुन की, आपकी जरूरत समाप्त हुई अभी? आप लोगों की। नहीं समाप्त हो रही है तो आपका भगवान से संबंध नहीं जुड़ रहा

है, गुरू से संबंध नहीं जुड़ रहा है। ज्ञान के प्रकाश में आंख नहीं खुल रही है, ध्यान देना 3 चीजें, गुरु ज्ञान मेंआंख नहीं खुल रही है (पश्यन्ति ज्ञान चक्षुणा)2।

पीछे लौट करके सर्व के प्रकाशक सत्य को वह देख पाते हैं जिनके ज्ञान चक्षु खुले हुये हैं। आपको कभी दुख हुआ कि हमारी ज्ञान की आंख अभी तक नहीं खुली। रामायण पढ़ने वाले बता दें- **उघरहिं** विमल विलोचन हिय के। कोशिश ही नहीं है कि हमारे हिय हृदय के नेत्र खुलें। इन्हीं आंखों का भरोसा है- महाराज बस दर्शन देते रहो, कृपा करते रहो। क्या? खिलवाड़ है। कितना अनादर हो रहा है किसका? रोज-रोज अनादर हो रहा है गुरू ज्ञान का। गुरू ज्ञान का रोज अनादर दैनिक अपराध है ये याद रखोगे। तुम चाहे जितने पाठ पूजा करो, तीर्थयात्रा स्नान करो, रोज का अपराध है क्या? गुरू ज्ञान का अनादर। परमात्मा के गुरू वाक्यों का अनादर करना रोज का अपराध है। 7 दिन में 1 दिन का नहीं, ये रोज का अपराध हो रहा है। गुरू ज्ञान क्या है? **ब्रह्म सत्यं जगत मिथ्या**, गुरू वाक्य है कि नहीं- परमात्मा सत्य है यह जगत मिथ्या है। मिथ्या है तो क्या नफरत करें, नफरत नहीं मिथ्या है। मिथ्या है तो क्या उसे छोड़ दें और जब मिथ्या छोड़ना क्या है, छोड़ने को है ही क्या मिथ्या है। सत्य होता तो छोड़ते, यथार्थ होता तो छोड़ते। मिथ्या है तो छोड़ना क्या? मिथ्या है तो पकड़ना क्या? बस परमात्मा सत्य है ये जो है यह मिथ्या है। मिथ्या का मतलब- कितना सुन्दर उत्सव चल रहा है परमात्मा का, जरा ध्यान देना इस पर यहां क्या है? यहां पर बालक भी आये हैं। यहां दो प्रकार के बालक हैं- एक तो 5 बरस के बालक, और एक 70 बरस के बालक। क्या समझे? यहां बूढ़े लोग बालक हैं, बूढ़े लोग भी बालकों के समान हैं जिनकी बुद्धि काम नहीं कर रही है वे बालक ही तो हैं। हम खूब देख रहे हैं, 1-1 आंख देख रहे हैं,देखो इतनी उमर बीत गयी अभी बालक ही हैं। बालक तो बालक हैं, एक बूढ़ा भी बालक हैं, 60 बरस का व्यक्ति भी बालक है क्योंकि बुद्धि की आंख बन्द है। पकड़ना जानता है, देखना जानता ही नहीं। अब भी पकड़ता चला जा रहा है मेरा-मेरा, मेरे को देख न पाया, बालक है कि वृद्ध? बाल के सफेद हो जाने से काई वृद्ध नहीं हो जाता तो हम यही देख रहे हैं- क्या सुन्दर उत्सव है भगवान का यहां बालक भी हैं, वृद्ध भी हैं, मूर्ख भी हैं और विद्वान भी हैं। बड़ा सुन्दर सम्मेलन है।

और सुन्दर प्रेम है? 1-1 कमरे में न जान न पहचान सब सटे-सटे लेटे रहे रात भर जगह की कमी के कारण। कोई किसी से नहीं कहता- तुम कौन हो? कहां से आये हो? सब ये (प्रेम)2 में इतनी गुंजाइश होती है। ये सत्चर्चा की बड़ी सुन्दर महिमा है। जो बड़े-बड़े रईस जिनके कमरे में जो लोग कभी बैठ न सकते थे उनके साथ लेटे हुये हैं, कोई परवाह नहीं। ये प्रेम की महिमा है, ये प्रेम की उदारता है, ये प्रेम की मधुरता है, यह सब कुछ प्रेम का है। तो यह उत्सव है परमात्मा का, परमात्मा के उत्सव में आप सम्मिलित हुये और फिर लौट जाओगे अपने-अपने घर। तो इस जगत में जो कुछ भी मिला है उत्सव की भांति देखो उत्सव है। नफरत न करो, घृणा न करो, ये उत्सव है। आज रोशनी, बड़े-बड़े बल्ब जल रहे हैं, कल ये नहीं जलेंगे। आज उत्सव हो रहा है, कल नहीं होगा। नफरत न करना, हो रहा है तो ठीक और नहीं हो रहा है तो ठीक। उत्सव तो ठहरा रोक-रोक थोड़े ही होता है। चल रहा है जीवन में उत्सव परमात्मा का। यह सृष्टि परमात्मा का उत्सव है। परमात्मा सत्य है और यह सारा उत्सव दृश्य है। दृश्य पर न अटको, दृश्य के पीछे दृश्य के आधार को जान लो, अब तुम भक्त हो गये, दृश्य में न अटको तो मुक्त हो गये। जब दृश्य से कुछ न चाहो तो शांत हो गये। बस इतना ही करना है।

अपने लड़के ही को गाली दे रहा था तो एक महात्मा निकले। कहे- कैसे आदमी हो उल्लू के पट्ठे लड़के को कह रहे हो तो उल्लू का पट्ठा लड़का हुआ तो तुम उल्लू हुये कि नहीं? तुम्हें गालियों का कोई पता नहीं तो वह जोर से कहता है- गालियों का पता उसे होता है जो गाली का अर्थ जानता हो। जो गाली का अर्थ जानता है उस पर असर होता है। जो गाली का अर्थ नहीं जानता उस पर असर होगा? क्यों भय्या तो जिसको संसार में कुछ झूठ नहीं दिखता तो उसको नहीं झूठ है। हमें दिखता है तो हमारे लिये झूठ है।

अच्छा भाई अब होगी पूजा हमारी, पूजा सब झूठी है। क्या खयाल है। तुम्हारी सारी पूजा, तुम्हारे नारियल तुम्हारे फूल, तुम्हारी अहंकार की तृप्ति के लिये हैं कि हमारी? क्या मत है आपका? हमें तृप्त, शांत, सुखी करना चाहते हो कि अपने को? अगर अपने को करना चाहते हो तो हम तुम्हारी मान लेंगे। चलो भाई, हम तुम्हारे साथ कुछ नहीं कर पाये हमारे ही साथ तुम कुछ कर डालो। हमारी तुम नहीं मान पाये तो चलो हमीं तुम्हारी मान लेंगे, तुम्हारी रोटी खायी है। लेकिन यथार्थ में अगर दर्शन करना चाहते हो तो तुम्हारी पूजा झूठी है।

गुरू की पूजा फूल माला हलुआ पूड़ी और पैसे से नहीं होती। गुरू की सच्ची पूजा है कि गुरू के ज्ञान का इतना आदर करो कि तुम मुक्त हो जाओ, भक्त हो जाओ, शांत हो जाओ। यह है पूजा और तुम हमें घंटों बैठाओगे ऐसा तिलक लगाओगे कि बाल नुचे, ऐसा चंदन लगाओगे, धोओ बाबा बाद में हम तो जाते हैं। यह पूजा है तुम्हारी कि सजा इतने आदमी हमारी पूजा करोगे, घंटो थकाओगे, हम बैठे-बैठे पत्थर की मूर्ति बन जाये। इसीलिये भगवान मूर्ति बन करके बैठे हैं, चुनौती है चढ़ाओ चाहे जितना जल निमोनिया होगा?

क्यों भय्या शंकर जी को जल चढ़ाओगे, निमोनिया होगा? भगवान को 50000 थाली लगाओ, कभी बदहजमी होगी? और हमें खिलाओगे तब तो मार ही डालोगे सब लोग? बड़े भागवान बढ़िया। तुम्हारे जैसे जड़ बुद्धि वालों को भगवान मूर्ति बन कर बैठ गये चुनौती है लगाओ भोग कितना लगाओगे, चढ़ाओ जल, चढ़ाओ माला, कितना चढ़ाओगे। अरे भाई विचार करो- **तुलसी मिटे न वासना बिना बिचारे ज्ञान।** अगर विचार न करोगे तो तुम्हारी वासना समाप्त होगी नहीं। (बहुत से लोग अकिंचन भाव होते हुये देखते हैं) क्या कहते हैं? (बहुत से लोग अकिंचन भाव होते हुये देखते हैं) हां ये वकील हैं, वकील साहब हैं, सबके तै कर ली है कुछ फीस-वीस तुम्हारा पक्ष ले रहे हैं। शब्द ही गलत हैं, देखते हैं। आंख है नहीं और देखते हैं। हृदय की तो फूटी है देखेगा- गुरू के दर्शन भी नहीं हो सकते इन आंखों से। जब तक गुरू की कृपा से **उघरहिं विमल विलोचन हिय के,** जब तक ऐसा न होगा, शक्ल देखिये गुरू महाराज की, आकार तो दिल में भर जायेगा लेकिन ज्ञान के प्रकाश में तुम्हारी आंखें जब तक न खुलेंगी- गुरू का दर्शन नहीं होगा। उल्टी बात कह रहे हो।

अरे जितनी देर तुम हमारी 2 घंटे पूजा करोगे, बड़ी सरल बात है, 2 घंटे तुम आंख बंद करके बैठ जाओ, मौन और शांत।

ये हिम्मत नहीं है, ये ताकत नहीं है लोगों में- अच्छा 2 घंटे पूजा कर रहे हैं। शायद यह पूजा तुम्हारी आज ही स्वीकार कर लेंगे। 2 घंटे भगवान के लिये बैठ जाना परमगुरू भगवान के लिये **ब्रह्मानंदं परमं सुखदं केवलं ज्ञानमूर्तिम्,** 2 घंटे बैठ जाओ फिर मजे से हलुआ पूड़ी खाओ लेकिन 2 घंटे शांत मौन बैठे रहो, बढ़िया पूजा है। उतनी देर शक्ति बचेगी, इंद्रियों के द्वारा बिखरने वाली, मन के द्वारा बिखरने वाली और थोड़ा शांत, और मौन होने पर चेतन तत्व का योग होगा। उस योग में बुद्धि में ताकत आयेगी शाय **गतां बुद्धियोग भजतां**

प्रीतिपूर्वकं, जो प्रीतिपूर्वक मेरा भजन करते हैं, उन्हें मैं बुद्धियोग देता हूँ। (भजन)2 का मतलब ये माला जपना मात्र नहीं है। भजन का मतलब (सर्वस्व सेवा में समर्पित)2 ये भजन है। सेवा का नाम भजन है। क्यों भय्या, क्या मत है आपका? पूजा करोगे कि ध्यान करोगे? (जो आपको सुविधा होगी वही करेंगे) आपका मत है तमाम इतने बैठे हैं जरा इनसे पूछें (मैं तो अपनी कह रहा हूँ)। तुम्हारा मत तो ठीक है। इन सबका मत क्या है? महाराज आज कर लेने दो फिर नहीं, क्यों आज कर लेने देना क्या मत है आपका? कुछ लोग तैयार हैं। वह कहती हैं नाहीं वो कहती हैं हां और पास ही पास बैठी हैं (न ध्यान होगा न पूजा होगी न इधर के रहेंगे न उधर के)। हां न इधर के रहे न उधर के। इधर के रहो मत्थे हमारे दो। क्या विचित्र लीला है, नारायण वचन।

याद आ गयी- संसार की कथा सुनते-सुनते जीवन बीत गया, विनाशी की कथा सुनते-सुनते जीवन बीत गया। अच्छा हो कि अविनाशी की कथा सुनते-सुनते यहां आ जाओ, उसमें रस आ जाये तो ये संसार के रस नीरस हो जायें। वैराग्य हो जाये तो इधर अनुराग बढ़े।

अलग-अलग पात्रों के हिसाब से शब्द कहे गये हैं, अलग-अलग कक्षा के अनुसार सब मत हैं। आरंभ में सब ठीक। मैंने बताया- सत्संग बहुत आवश्यक वही सत्संग बाधक है। 1-1 सीढ़ी बहुत आवश्यक है प्रथम सीढ़ी, दूसरी 10वीं सीढ़ी बहुत आवश्यक है। किसी सीढ़ी में रूक जाओ तो वही बाधक। नय्या पार होने के लिये बहुत आवश्यक और किनारे जाकर नय्या में ही बैठे रह गये तो बहुत बाधक है। क्या खयाल है आपका? जो साधक है वही बाधक है। अब विचार तो करो। जीवन भर आपके द्वारा प्रभु तृप्ति ज्ञान यज्ञ से होती रहे। तृप्ति चाहते हो? तृप्त होता है मन गीता की बात मानते हो आज से मान लो-

यस्त्वात्मरतिरेव स्यांदात्मतृप्तश्च मानवः।
आत्मन्येव च संतुष्टस्तस्य कार्यं न विद्यते।।

भगवान कहते हैं जो आत्मा में ही तृप्त है, गया सब कुछ, संसार अलग, जो आत्मा में ही तृप्त है, आत्मा में ही जिसकी प्रीति है- यस्त्वात्मरतिरेव स्यादात्मतृप्त और आत्मा में ही जो संतुष्ट है अब उसको संसार में कुछ नहीं करना है। यह भगवान का वाक्य है। भगवान की मानते नहीं, गुंजाइश नहीं अहंकार की मानते हो। जो मानते हो किये रहो- नहिं अनीति नहिं कछु

प्रभुताई। सुनहु करहु जो तुम्हहिं सोहाई।। और कुछ नहीं। आरंभ की बात हम पहले ही कह चुके हैं।

1,2,3,4 बहुत सहायक और एक क्लास में 10 साल फेल होते रहो तो? यहां आ करके पास हो रहे हो कि फेल हो रहे हो? यह नहीं होश है। बस आते रहना है। आप कहते रहें, हम आते रहें। आते-आते आने लायक न रह जाओगे और कहते-कहते हम कहने लायक न रहेंगे। तब क्या करोगे?

सब गलत प्रश्न।

•

ॐ

मुश्किलें होती हैं

चैतन्यं शाश्वतं शांतं व्योमातीतं निरंजनं।
नादबिन्दु कलातीतं तस्मै श्री गुरवै नमः।।
(आनंदमय)3 (परमात्मन् परमानंद स्वयं)

सर्वनामरूपधारी परमात्मदेव को प्रणाम करते हुये हम सब लोग गुरू संदेश को सुनाते हुये अपने जीवन का अध्ययन करें। बहुत दिन से अनेकों लोग बहुत दिन से संतों का संग अथवा सत्चर्चा सुन रहे हैं लेकिन जो होना चाहिये वह नहीं हो रहा है और जो न होना चाहिये वह होता रहता है। इसका कारण एकमात्र यही है कि हम निरीक्षण नहीं करते। किसका? अहंकार का।

हर एक व्यक्ति को जितने हम लोग उपस्थित हैं सबको शांति चाहिये, आनंद चाहिये लेकिन नहीं सबसे पहले सुख चाहिये। ऐसा कोई व्यक्ति यहां नहीं होगा किसी महापुरूष के सिवा कि जो सुख न चाहता हो और ऐसा कोई सुख चाहने वाला न होगा कि सुख को चाहते हुये, चाहते शब्द कह रहे हैं, सुख को देखते हुये नहीं (क्या बात है, सुनाई पड़ रहा है) सुख चाहते हुये और दुख से बच जाय तो एक वाक्य बहुत याद रखने लायक हमें मिला है सुख हर एक सुख यानि सुख का अंत दुख में हो ऐसी बात नहीं है- बहुत याद रखने की बात है। सुख सहज हमारा स्वभाव है- इसको सभी संत कह चुके हैं सुख स्वभाव है। सुख प्राप्त नहीं करना है सुख किसी से चाहना नहीं है, स्वभाव ही है लेकिन (भूल गये)। आज तक हमें और हमें बहुत दिन बाद तक पता न चला- पहले तो हमीं कहते थे- सुख का अंत दुख में होगा लेकिन अब हम कह रहे हैं- सुख का अंत, उस सुख का अंत दुख में होता है- जो सुख दूसरों से मिला करता है, अन्य से मिला करता है। अगर किसी अन्य से दूसरे से हम सुख न चाहें तो हमारा सहज सुख स्वरूप है, इसका अंत दुख में न होगा। यह बड़ी विचित्र बात आप सुन रहे हो लेकिन उस सुख का अंत दुख नहीं होगा। कब? तो सुख का शत्रु दुख नहीं है सुख को दबाने वाला, सुख के, सुख के अंत में दुख लाने वाला ये दुख दुश्मन नहीं है। बड़ी अच्छी बात मालूम हुई गुरू वाक्यों में- आज आप जिस सुख को, आज आप अभी सुखी हो, सुखी रहोगे- एक ही शर्त है, दूसरी कामना न उत्पन्न होने पावे बस इच्छा न उत्पन्न हो बस सहज स्वरूप में

आपकी बुद्धि स्थिर रहेगी। यह बात बहुत याद रखने की है- सुख दुख नहीं देता इच्छा दुख देती है याद रहेगा इच्छा दुख देती है।

अगर आपको कभी जरूरत पड़ जाय तो किसी मंदिर में जाने की भी जरूरत नहीं है क्योंकि मंदिर में जाने वाले मंदिर के भगवान की बात नहीं मानते। संतों के पास जाने वाले संत की बात नहीं मानते, गुरू को मानने वाले गुरू की बात नहीं मानते। गुरू को मानते हैं, बात नहीं मानते। रामायण को मानने वाले रामायण की बात नहीं मानते। बुढ़ापा आ गया पाठ करते-करते 'कोऊ न काहू सुख दुख कर दाता' इतनी बात रामायण की नहीं मानी। न कोई सुखदाता है, न दुखदाता है, तुम स्वयं सुखस्वरूप हो। अभी-अभी आपके भीतर कोई कामना उत्पन्न न हो कोई दुख नहीं है, कोई अशांति नहीं है। कामना दुख देती है ये बात बहुत अभी नहीं तो आप आपको कभी तो जरूरत पड़ेगी ही क्योंकि दूसरों से मिलने वाला सुख आपके पास रह जाय? संसार में कोई आज तक नहीं हुआ किसी अन्य से, दूसरे से सुख चाहता हो वह दुख में बच सका हो। लेकिन चाह का अंत करने वाला सदा के लिये स्वतंत्र हो गया, स्वाधीन हो गया उसको संसार दुख नहीं दे सकता। यह बात बड़ी गंभीर है। यह हो कैसे? तो प्रथम आप सुन चुके थे- अभी तक हमने जप किया, हमने कीर्तन किया, अखंड पाठ किये, रात-रात भर जागरण किये, तीर्थों में गये, पूजायें कीं, यज्ञ किये जाने क्या-क्या किया लेकिन जो न करना चाहिये वह अभी तक नहीं छूटा, न करना चाहिये वह अभी तक नहीं छूटा। गुरू की सेवा करते हुये भगवान का भजन करते हुये, शास्त्रों का भजन करते हुये, दूसरों को उपदेश देते हुये जो न करना चाहिये, वह अभी तक नहीं छूट रहा। और कोई भी आप जैसे सत्संग प्रेमी जब कभी अवसर आता है तो महात्माओं से पूछते हो- महाराज जप करें? इतने दिन बीत गये अब कौन सा ध्यान करें? अब कौन सा जप करें? अब कौन सा कीर्तन करें? कौन सी साधना करें? लाखों लोग अपने-अपने गुरूजनों से यही पूछते हैं- अब क्या करें? ऐसा पूछने वाला मिलता ही नहीं कि जो पूछे- महाराज अब क्या न करें? याद रहेगा कभी पूछा आपने, अब क्या न करें? यह नहीं पूछते कि अब क्या न करें? कैसी विचित्र बात**!** एक प्रश्न**!** यह नहीं नहीं करते- क्या न करें? यह सब करते हैं- क्या करें और बताओ। इस जप से काम नहीं चला तो और जप बताओ, इस मंदिर से काम नहीं चला तो और सिद्ध मूर्ति बताओ, इस संत से काम नहीं चला और बढ़िया

सिद्ध महात्मा बताओ। कुछ करना ही चाहते हैं। ये नहीं पूछते- अब क्या न करें? अगर आपको होश रहे तो अब ये कोशिश करना पूछना तो ये पूछना- क्या न करें? करने में इतनी-इतनी उम्रें बीत गयीं।

इतने लोग बैठे हो, बालकों को छोड़ करके अभी उनकी थोड़ी ही उम्र बीती है, कोई-कोई तो बुढ़ा गये लेकिन जो होना चाहिये, होना चाहिये, होना चाहिये निर्भयता- भय नहीं छूट रहा, निश्चिंतता- चिन्ता नहीं छूट रही और अशांति- अशांति आ ही जाती है और दुख तो भगवान के दर्शन भी हो जायें तब भी दुख नहीं मिटेंगे। भगवान के दर्शन करने वालों का दुख नहीं मिटा। भगवान कृष्ण के दर्शन कर रहे थे- दुखी थे। राम के दर्शन कर रहे थे, दुखी थे। आज भी अगर कोई भगवान की बात मान ले तो दुख मिट सकते हैं- मिट सकते हैं।

दुख लवलेश न सपनेहुं ताके। किसके- **राम भगति उर मणि बस जाके।** यहां सब ही भक्त बैठे हैं। बड़े भक्त हैं रोज मंदिर में जाते हैं, रोज कीर्तन करते हैं, रोज पूजा करते हैं और भक्ति का पता ही नहीं- भक्ति का पता ही नहीं, कुछ चीजों को हमने भक्ति मान लिया है। फूल चढ़ाना, माला चढ़ाना पूजा मान लिया है। बरसों बीत गये, 20-20 बरस बीत गये, गुरू का संग करते, गुरू की पूजा करते। पूर्णिमा आती है तो गनीमत है कोई फूल की माला बना रहा है, कोई नारियल के गोला ला रहा है, कोई फल ला रहा है, ये पूजा गुरू की और होश नहीं है, गुरू ने कहा- गुरू से पूछा- आपकी पूजा कैसे करनी चाहिये। पंडितों ब्राह्मणों का संग, ब्राह्मणों की पूजा ऐसी ही करनी चाहिये। ब्राह्मण की पूजा और है, पंडितों की पूजा, विद्वान शास्त्रवेत्ताओं की पूजा और है। गुरू की पूजा कुछ और है लेकिन सद्‌गुरू की पूजा तो बड़ी विलक्षण है। सद्‌गुरू की पूजा में किसी वस्तु की अपेक्षा ही नहीं, किसी की जरूरत ही नहीं लेकिन 20-20 बरस संतों का संग करते बीत गये, पूजा की प्रथायें वही- अहंकार तृप्त होता है। पैसा है तो हम बढ़िया नारियल लायेंगे, बड़ा माला लायेंगे, खूब मिठाइयां लायेंगे। हे भगवान, अहंकार की पूजा कर रहे हैं और कहते हैं हम गुरू महाराज की पूजा कर रहे हैं।

गनीमत है- एक साल तो बाराबंकी में नारियल कहीं न रह गये ये दुकानों में। ये नारियल पूजा! लेकिन अहंकार की तृप्ति के लिये सबका गुरू है मन। हम लोगों का गुरू मन है। मन जो कहता है सो हम करते हैं। गुरू जो कहता है सुन तो लेते हैं लेकिन इतनी-इतनी उम्रें बीत गयीं नहीं मानते। जो होना

चाहिये वह नहीं हो रहा है और जो न होना चाहिये मोह, न होना चाहिये लोभ, न रहना चाहिये अभिमान, न रहनी चाहिये कामनायें, न होनी चाहिये अशांति- जीवन के साथ चल रही हैं, साधन भजन भी चल रहा है। कैसी साधना? कैसी उपासना? ये भ्रम सबके साथ है। अगर बुद्धि साथ दे रही है- संसार के कोलाहल से सुनते-सुनते कान इतने बहरे हो रहे हैं कि ये बातें प्रवेश नहीं कर रही हैं।

एक बड़े प्रसिद्ध महात्मा थे और एक बड़े प्रसिद्ध सेठ थे। पहुंचे एक दिन। दर्शन करने कभी-कभी जाते थे। एक दिन पहुंचे बहुत दिन बाद- महाराज आपका संग करते इतने बरस बीत गये, हमारी आदत नहीं बदल रही, हिंसा नहीं छूटती, क्रोध नहीं छूटता, लोभ नहीं छूटता, मोह नहीं छूटता, क्या उपाय करें? जो आपने बताया था बहुत कुछ कर रहे हैं, छूटता नहीं है।

कहा- कोई बात नहीं, आज तो हम जल्दी में हैं कल तुम्हारे यहां भिक्षा करने आयेंगे तब उत्तर दे देंगे। इसका उत्तर तभी देंगे। दूसरे दिन बड़ा मुश्किल था- महात्मा कहीं जाते न थे। कल उस दिन कहा- भिक्षा अपने आप भिक्षा करने आयेंगे। बड़ी प्रसन्नता। आज एक बड़े महात्मा जो कहीं बस्ती में नहीं आते, हमारे यहां भिक्षा लेने आयेंगे। बड़े सुंदर भोजन बनाये, खीर बनायी यानि जो-जो बना सकते थे पकवान मिठाइयां स्वादिष्ट, वह बनायीं। महात्मा आये, आने के बाद उन्होंने अपना पात्र फैलाया। वह भक्त बेचारा देखा कि जिस पात्र में कमंडल में भिक्षा लेना चाहते हैं उसमें पहले ही से गोबर, कंकड़, कूड़ा तमाम भरा है।

कहा- महाराज यह क्या? इतने स्वादिष्ट भोजन, इतने पकवान, इतने मिष्ठान और इसमें कैसे, इसमें तो गोबर कंकड़ पत्थर तमाम जाने क्या मिट्टी भरी है?

कहे- अच्छा तो और क्या करें?

अरे इसे साफ कर लो महाराज तब तो ये सब चौपट हो जायेगा, सब खराब हो जायेगा।

महात्मा ने साफ कर लिया और उन्होंने पात्र में जो-जो अपना स्वादिष्ट भोजन बनाये थे, सब उसमें डाल दिये। ठीक है पा लिया उन्होंने। कहा- अच्छा अब चलते हैं।

कहे- महाराज उत्तर तो दिया ही नहीं।

कहा- अरे तुम सरासर देख रहे हो हम उत्तर कितनी देर से दे रहे हैं तुमने देखा ही नहीं।

कहा- कहां उत्तर दिया? अभी तो आप बोले ही नहीं। अभी तो पात्र में भिक्षा लेने और खाने में लगे रहे।

कहे- उत्तर हो गया, तुम्हारा प्रश्न क्या है (ये नहीं छूटता)3 हमें ऐसा उपदेश दो, हमें ऐसा ज्ञान दो, ऐसी भक्ति दो तुम जिस पात्र जहां तुम भक्ति, ज्ञान और मुक्ति और न जाने क्या-क्या साधना चाहते हो तुमने देखा- तुम्हारे पात्र में ये कूड़ा करकट जाने क्या-क्या भरा पड़ा है- इसमें ये सामग्री डाली जायेगी? उपदेश हो चुका। तुमने तो हमें समझाया कि ऐसे पात्र में, ऐसे गंदे पात्र में इतनी बहुमूल्य, स्वादिष्ट वस्तुयें कैसे डालें? तुम्हारे इस गंदे हृदय में, गंदे मन में, लोभ मोह अभिमान से भ्रमित मन में ये परमात्म ज्ञान ये कैसे ठहरेगा? कैसे टिकेगा? कौन डालेगा? महाराज, आप बात तो ठीक कह रहे हैं। हम जिस पात्र में यह भरना चाहते हैं, वह पात्र इतना दूषित है। आज हमारी सबकी यही दशा है, कथा भी सुन रहे हैं, भागवत के सप्ताह भी सुन रहे हैं, जप कीर्तन पूजा पाठ भी कर रहे हैं लेकिन भीतर झांक के नहीं देखते, भर क्या रखा है बचपन से?

जो सुना है आपने हम लोगों ने स्वीकार कर लिया है। जितने लोग बैठे हो ऐसा कोई व्यक्ति नहीं कि जो सुना हो उसको मान न लिया हो। जाति मान ली, नाम मान लिया, रूप मान लिया, भूमि-भवन, गरीबी-अमीरी, ऊँचा कुल नीचा कुल सब कुछ मान लिया है। क्यों मान लिया है? बुद्धि में सोचने की ताकत न थी, पढ़ने लिखने विद्वान होने के बाद भी जो बचपन में विद्वान न होते हुये जो माना था, विद्वान होने के बाद भी वही मानते चले जा रहे हैं। बताइये होश है? कोई विचार ही नहीं करता। अब तो समझ सकते हैं, सुना और मान लिया। अब तो विचार कर सकते हो जो सुना है- सही है कि गलत है? मेरा है कि नहीं है? सत्य है कि झूठ है? कोई परवाह नहीं। यह हमारी सबकी दशा है आज। अब बताओ क्या होगा? बुद्धि का उपयोग ही नहीं हो रहा और हमारा तुम्हारा ही नहीं सदा-सदा से यही मनुष्य की आदत रही है। अर्जुन जैसे भाग्यवान जिनके परम मित्र भगवान कृष्ण थे, वह भी जो मान लिया था वर्षों

बीत गये थे, वृद्धावस्था शुरू होने वाली थी, आ रही थी, तब भी वह संसार की मान्यतायें समाप्त न हुई थीं। भगवान को समझाना पड़ा कि तुम जो ये समझना चाहते हो, सुनना चाहते हो कि बुद्धि लगे तो देखो। जिस आंख से देखना चाहते हो, इस आंख में तो ये इतना जाला माड़ा मोतियाबिन्द भरा पड़ा है। बाहर की आंख बाहर के पदार्थों को देखती है लेकिन धर्म दर्शन के लिये, सत्य दर्शन के लिये, परमात्म दर्शन के लिये इन आंखों से काम न चलेगा। महात्मा दर्शन के लिये भी ये आंखें काम न देंगी। तब तो 'पश्यन्ति ज्ञान चक्षुषा' ज्ञान दृष्टि खुलेगी तब काम चलेगा। आज हम ज्ञान दृष्टि के खोलने के लिये प्रयास नहीं कर रहे हैं बड़ी भूल है जो न करना चाहिये, वह करते चले जा रहे हैं।

कितनी कितनी दूर से भागलपुर पूरब, पश्चिम, उत्तर, दक्खिन सब तरफ के लोग आये हैं लेकिन जो न करना चाहिये, दिन भर करते रहे। आप कहेंगे- क्या जुआ खेलते रहे कि ताश खेलते रहे? जो न करना चाहिये वह दिन भर लोगों से होता रहा। इतनी देर आप शांत मौन बैठे हैं लेकिन अपने-अपने कमरों में आप क्या करते रहे? वही करते रहो जैसी आदत है। कहीं व्यर्थ का आगे का चिन्तन, जब चुप हैं तब आगे का चिन्तन चल रहा है या बीते हुये की याद चल रही है और कोई मिल गया तो गप्पाष्टक चल रही है, समय कट रहा है। शाम को सत्संग सुन लेंगे। व्याख्यान होगा तब सुन लेंगे और अभी क्या करेंगे, होश ही नहीं। पैसे की बड़ी सम्हाल व्यर्थ न खर्च हो जाये। जूता घड़ी छाता घर की गृहस्थी की छोटी-छोटी वस्तुओं की बड़ी हिफाजत, बिगड़ न जाये कोई उठा न ले जाये बड़ी चिंता, बड़ा प्रयत्न, बड़ी रक्षा और समय हमारा व्यर्थ न जाये कोई परवाह नहीं। शक्ति व्यर्थ नष्ट न हो जाये कोई परवाह नहीं। जो किसी कीमत पर संसार से नहीं खरीदी जा सकती शक्ति, नहीं खरीदा जा सकता समय, उस समय को, उस शक्ति को, इतना जीवन बीत गया हिसाब न लगाया? व्यर्थ है कि सार्थक है? कैसी साधना! कैसी मुक्ति! कैसी भक्ति! यही कारण है जो होना चाहिये अभी तक नहीं हो रहा है। बहुत ज्यादा चीजें नहीं हैं केवल दो, हजार वस्तुओं की तुम सम्हालो घरों में अपनी-अपनी गृहस्थी में कोट पैंट जूता घड़ी छाता कंघी शीशा तेल सब सम्हालो। अरे बाबा! जिसकी कोई कीमत नहीं चुकाई और किसी कीमत पर जो मिल नहीं सकता उस समय का भी तो आदर करो कोई परवाह नहीं। यहां तक काटे नहीं कटता समय तब मन बहलाने के लिए इधर-उधर जाते हैं, दोस्त ढूंढ़ते हैं। और तुम तो बड़े पुण्यवान हो कि व्यर्थ

नहीं, नहीं तो ताश खेलते हैं शतरंज खेलते हैं यानि रेडियो सुनने में मन बड़ा लग जाता है रेडियो सुनने में जी नहीं ऊबता, टीवी देखने में जी नहीं ऊबता, व्यर्थ की चर्चा में जी नहीं ऊबता लेकिन भजन करने में, ध्यान में बैठने में, आंख बंद करने में जरा देर में मन ऊबने लगता है कब आंख खोले देखें क्या हो रहा है? क्या है? जो होना चाहिये वह अभी तक नहीं हो पाया और जो न होना चाहिये वह हो रहा है। आगे भी ऐसे ही बीत जायेगा, निश्चित हमको तुमको कोई न भक्ति दे सकता है, न मुक्ति दे सकता है, न शांति दे सकता है। हां (सुख)3 दे सकता है। धोखा है- कोई सुख भी नहीं दे सकता। लेकिन आज तक हम ऐसे बेवकूफ हैं ऐसे नासमझ हैं कि माता-पिता सुख दे रहे हैं, पत्नी-पति सुख दे रहे हैं, जहां देखो तमाम सुखदाता। सौभाग्य है इनको बड़ा सुख है, इनके जीवन में बड़ा सुख है। इसको सुख मानते हैं जो आज तक मिला ही नहीं, उसको कहते हैं मिल रहा है। इतनी उमर बीत गयी सुख नहीं मिला।

आप कहोगे कैसे पागलपन की बातें कर रहे हैं हम तो बड़े सुखी हैं- आज ही मलाई खाई, रबड़ी खाई और लड्डू खाये, पेड़ा खाये। बड़ा अच्छा लगा, बड़ा सुख मिला। इस समय उसकी याद आ रही है कि सुख तुम्हारे साथ चल रहा है? प्रत्येक भोगे हुये सुख की याद आती है। आज तक प्राप्त नहीं हुआ, प्राप्त हो जाता है तो उसकी इच्छा नहीं रह जाती है। ये कसौटी है। जो आपको जो मिल जायगा जैसे मंदिर आये। मंदिर में भगवान के दर्शन किये। जब तक भगवान के दर्शन कर रहे हो तब तक भगवान के दर्शन की इच्छा नहीं होगी। अगर सुख मिल रहा है तो इच्छा नहीं होनी चाहिये। मिल गया तो इच्छा कैसे? इच्छा बताती है आज तक मिला ही नहीं, इतना भी नहीं सोच पाते। क्या अंधेर है? इतनी बुद्धि अभी साथ नहीं दे रही है। आंख काम कर रही है, कान काम कर रहे हैं, मन काम कर रहा है, चिन्तन हो रहा है आगे का पीछे का लेकिन बुद्धि विचार कर रही है क्या हो रहा है? आपको याद रहे- हम तो अपने साथियों से बता चुके हैं 2-3 बार कह चुके हैं इस साल। हर एक आदमी के साथ भूत लगा हुआ है। तुमने सुना होगा किसी घर में लोग कहते हैं- इनके घर में भूत आता है तो झाड़ फूंक होती है, जाने क्या-क्या मंत्र जंत्र करते हैं लोग के पास जाते हैं भूत उतारने के लिए। ऐसा यहां कोई व्यक्ति है ही नहीं जिसके भूत न लगा हो और इसकी खबर नहीं।

भूत का मतलब है बीते हुये की याद। भूत माने जो बीत गया और प्रेत माने जो प्रेरित करता है। प्रेत का मतलब जो प्रेरित करे, ऐसी ही साड़ी होनी चाहिये प्रेत, ऐसा रेडियो होना चाहिये, टी.वी. होना चाहिये, ऐसा मकान होना चाहिये, ऐसे कपड़े,श्रृंगार का सामान होना चाहिये- इसका नाम है प्रेत। जो पाने के लिये प्रेरित करे, ऐसा होना चाहिये, ऐसे लड़ना चाहिये, ऐसे मिलना चाहिये, इसका नाम प्रेत और जो बीते हुये की याद करे उसका नाम भूत। हर एक आदमी के साथ भूत लगा है और हर एक आदमी के साथ प्रेत लगा है। कौन मंत्र से तुम्हारा भूत प्रेत उतरेगा? इसी का नाम गुरूमंत्र है। जो हमारे भूत को छुड़ा दे वह गुरूमंत्र है। जो हमारे प्रेत को हटा दे वह गुरूमंत्र है। जो हमारे ज्ञान की रक्षा करे, हमारे प्रेम की रक्षा करे, हमारी दैवी संपदा की रक्षा करे, उसका नाम गुरूमंत्र है। मंत्र का मतलब जो रक्षा करे, रक्षा करे उसका नाम गुरू मंत्र है। मंत्र का अर्थ ही है। हम नमः शिवाय जपते हैं, राम-राम जपते हैं, षडाक्षर पंचाक्षर ओर द्वादशाक्षर जाने कितने-कितने मंत्र जपते हैं, यह हम जानते नहीं रक्षा किसकी हो रही है? रक्षा दूर रही, हम चाहते हैं और मिले। जिसकी रक्षा, जो न मिलने के पहले दुख दे रहा है और मिलते ही जिसकी चिंता बढ़ जाती है और मंत्र जप रहे हैं- हे भगवान और-और और मिले, और मिले। क्या अंधेर है? बड़ा उल्टा दिमाग है हम लोगों का। कौन समझायेगा? आज सुनने पर भी हमारा भूत-प्रेत उतरने वाला नहीं है। बहुत मुश्किल है। बहुत जबरदस्त भूत लगा है, बहुत जबरदस्त प्रेत लगे हैं इन गुरूमंत्रों से, अगर आप गुरू मंत्रों का आदर करो तो भूत-प्रेत रह ही नहीं सकते लेकिन आदर ही नहीं है। आदर तो है जो बीत गया है, उसका आदर है। जो नहीं मिला है वह कैसे मिले, इसका आदर है लेकिन गुरूमंत्र का आदर नहीं है। गुरू मंत्र कहता है- जो वर्तमान में है उसको देखो, जो बीत चुका है उसको भूलो। जो आज मिला नहीं उसके चित्र मत बनाओ। मिला ही नहीं उसका चित्र क्यों बना रहे हो। लड़का पैदा नहीं हुआ तस्वीर बनायी जा रही है। क्यों भाई, पेट में लड़का है और तस्वीर पहले ही बन रही है- इसका नाम है भविष्य का चिन्तन, आगे का चिन्तन और मुर्दा हो गया है, गाड़ दिया गया है उखाड़-उखाड़ के देखा जा रहा है। ऐसा किया, ऐसा कहा, ऐसे लड़े, ऐसे मिले। बीते हुये को उखाड़-उखाड़ कर देखते हैं- ऐसा इन्होंने किया, ऐसा मिला, ये सुख मिला, ये दुख मिला, ये अपमान हुआ, ये सम्मान मिला- यह है भूत उखाड़-उखाड़ करके

गड़े हुये को खोद-खोद करके देखने का नाम है, मुर्दा उखाड़-उखाड़ करके देखने का नाम है भूत और पैदा नहीं हुआ है चित्र बनाने का नाम प्रेत प्रेरित करता है और और और। बड़ा भयंकर रोग है। अभी क्या होश है? आप (भूत प्रेत से बचो)2 तब देवता तुम्हारे भीतर काम करेंगे वरना देवता छिपे रहेंगे, काम न करेंगे। जो होना चाहिये अभी तक नहीं हो रहा है- क्यों? जो करना चाहिये- वह अभी तक हमने नहीं किया।

अब क्या करना चाहिये? इस पर थोड़ा समझ लो- क्या करना चाहिये? तीन चीजें आपको परमात्मा से मिली हैं- एक तो शक्ति, एक समय, (ज्ञान)2 या कह लो चेतन- ये परमात्मा से मिले हैं। शक्ति और चेतना या कहो ज्ञान, प्रेम इनको कोई छीन नहीं सकता। जहां-जहां तुम्हारे जन्म होंगे, तुम्हारे साथ परमात्मा की शक्ति रहेगी, परमात्मा का प्रेम रहेगा, परमात्मा का ज्ञान रहेगा और अभी तक होश नहीं है हमको कि हमारे साथ परमात्मा का क्या है और संसार का क्या है? आज कहने पर भी शायद ही किसी की बुद्धि साथ दे जाये, सबकी साथ दे जाय, तो बड़ा अच्छा है लेकिन अभी तक नहीं हो रहा है- प्रश्न वही बने हैं। रामायण पढ़ते बीते, गीता पढ़ते बीते, भागवत की कथायें सुनीं- ऐसा धोखा है- सात दिन कथा होगी, सुनने दौड़े जा रहे हैं। अमुक-अमुक व्यास बड़ी अच्छा कथा कहते हैं। अमुक व्यास बड़ी अच्छी भागवत कहते हैं, बड़ी अच्छी भागवत कहते हैं, मुग्ध हो जाते हैं भगवान पर नहीं जो भगवान की कथा सुनाता है, उस पर और होश नहीं है हम क्या कर रहे हैं यह जो सुन रहे हो किसकी बात है? आपकी बात है। आपको अपने को देखना चाहिये कि हमें? हमें हाँ पथिक जी फिर आयें फिर सुनावें। बताइये हमने यही सुनाया है हमारे पास आओ। हमने कहा- हमारे को फूल माला चढ़ाओ, कब कहा हमने? कब कहा हमने- हमें दक्षिणा दो, नारियल गोला चढ़ाओ। लेकिन वाह रे गुरू! वही अपनी आदत की गुलामी से बंधे हुये हैं। देख-देख कर पहले जो सुन लिया है, मान लिया है उसी को स्वीकार किये हुये चले जा रहे हैं।

जो होना चाहिये शाश्वत शांति, अखंड आनंद, नित्य परमात्मा की योगानुभूति। वह अभी तक नहीं हो रहा है, जिसके लिये कहीं जाना ही नहीं है। सच पूछो तो सत् परमात्मा के लिये कुछ करना भी नहीं है- ये बात पचेगी बड़ी मुश्किल से। संसार का कुछ चाहते हो बिना किये मिलेगा नहीं, करना पड़ेगा। पुण्य करने पड़ेंगे, दान करना पड़ेगा, यज्ञ करने पड़ेगी, जितना करोगे, संसार

में जितना बोओगे उतना ही आपको मिलेगा, अब भी मिला है। और चाहते हो तो और करो, और चाहते हो तो और करो। जितना पुण्य करोगे तुम्हारी कामनायें पूरी होंगी। भिखारी बनने से काम न चलेगा। भीख में कौन धनी हो सका- भीख मांग के लाने में परमात्मा को चाहते हो शांति चाहते हो, आनंद चाहते हो तो याद रखना, धोखे में न रहना- परमात्मा की प्राप्ति के लिये, आनंद की अनुभूति के लिये तो मैं कहता हूँ यहां तक मोक्ष के लिये भी मुक्ति के लिये, मुक्ति के लिये भी तुम्हें कुछ नहीं करना। लेकिन बंधन के लिये अच्छा आप लोगों में कोई ऐसा है जो बंधन के लिये कुछ करता हो? कोई बालक भी नहीं चाहता कि हम बंधे रहें। लेकिन याद रखना ऐसा कोई है ही नहीं जिसने अपने आपको बंधन में न डाला हो। बड़ी विचित्र बात है। बंधन चाहते नहीं लेकिन करते वहीं है जिससे हम बंधते चले जायें। इतनी छोटी सी बात समझ में आ जाय, आ रही है? आप कहते हो, महात्माओं के पास जाते हो शांति मिल जाये। भगवान के पास भी जाओ तो भगवान कहेंगे- शांति चाहते हो। अगर हमने अशांत बनाया है तो हम शांति दे देंगे। हमने दुख दिया है तो तुम्हारा दुख हटा देंगे दिया नहीं तो हटायें क्या? हमने तुम्हें अशांत बनाया नहीं, तो अशांति हटायें कैसे? बड़ी भूल है। अशांत होते हैं हम शांति के लिये जाते हैं जाने कहां दूसरों के पास। दुखी होते हैं हम दुख मिटाने के लिये जाते हैं तीर्थों में मंदिरों में। दुख मिटा देना कह रहे हैं, दबाना नहीं। दुख को दबाना बालक भी जानता है लेकिन दुख को मिटा देना बड़े-बड़े विद्वान हम लोग, हम लोग बड़े शास्त्रवेत्ता, ज्ञानी मगर जाने क्या क्या बने दुख मिटा न पाये। मिटा हुआ दुख कभी न आयेगा। दबा हुआ दुख रोज बार-बार आयेगा।

क्या कह गये? आनंद चाहिये- परमात्मा चाहिये, शांति चाहिये, मत भटको, परमात्मा कहीं न मिलेगा। जो प्राप्त है उसको खोज रहे हैं, जो प्राप्त है उसको खोज रहे हैं और खुद खोये हुये हैं, अपना पता नहीं लगा रहे हैं- क्यों भाई? परमात्मा खोया होता तब मिलता। तुमने परमात्मा को खोया है कभी! अगर कभी पाया होता तो खोया होता। न पाया न खोया तो क्या है? परमात्मा को जाना ही नहीं है- क्या है? सुन-सुन करके परमात्मा को मान लिया है और अभी तक देह में मैं कहा हूँ, देह में हूँ कि पेट में हूँ कि पैर में हूँ कि सर में हूँ। मैं कहाँ हूँ, यह पता नहीं। मैं-मैं सब लोग चिल्लाये जा रहे हैं जानते नहीं, हम हैं पहचानते नहीं तुमको परिचय देते हैं, मैं यह हूँ, यह हूँ। पता है नहीं और

परिचय दे रहे हैं- मैं ये हूँ। अंधेर तो देखो- कहते हैं, कोई पूछता है- तुम कौन हो? किसी की बेटी, किसी की बहिनी, किसी की पत्नी, किसी की सास, किसी की बहू। सब बताना शुरू कर देते हैं। पता नहीं है और पता बता रहे हैं फिर भी आप करते हैं- पता बता रहे हैं। ये आपके सुने हुये झूठे पते हैं कि कभी पता लगाया भी है कि मैं कौन हूँ।

भगवान भी मिल जायें तुम्हें अगर तुम बहुत भाव के अनुसार भगवान का चिंतन करोगे तो तुम उसी रूप में तुम्हारे भीतर का प्रेम जिसका ध्यान करोगे उसी रूप में प्रगट हो जायेगा। प्रेम प्रकट होता है। परमात्मा कहीं से आता नहीं, कहीं गया नहीं। न आता है न जाता है वह तो है ही। परमात्मा उसे कहते हैं जो ऊपर नीचे आगे पीछे है सारा विश्व जिसमें है जो सबको लिये हुये है। सबके ऊपर नीचे आगे पीछे है, इसका नाम परमात्मा है। परमात्मा का कोई रूप नहीं है। रूप तो उसका है जो माया है। परमात्मा का कोई रूप नहीं है इसलिये उसका मिलना भी नहीं है, छूटना भी नहीं है। हम खोये हुये हैं इसलिये आप लाख कोशिश करो- धोखे में रहोगे, अमुक को परमात्मा के दर्शन होते हैं, बहुत धोखा है। परमात्मा के दर्शन हो सकते हैं, होते हैं, हुये हैं। लेकिन कौन परमात्मा? जाने कई परमात्मा? बौद्धों के भगवान और हैं, जैनियों के भगवान और हैं, आर्य समाजियों के भगवान और हैं, इस्लाम धर्मियों के और हैं। जिसकी जो भावना होती है, दर्शन होते हैं।

कोई इतना प्रेम समेट ले मीरा की भांति एक ही चिन्तन, एक ही ध्यान एक ही मनन। कोई न नाम रह जाय, न रूप रह जाये- **मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरा न कोई-** ऐसी जिसकी धारणा हो जाये तो मीरा के मन में जो गिरधर गोपाल की मूर्ति बसी है, मीरा का सारा प्रेम बाहर से सिमट करके गिरधर गोपाल की मूर्तिमय हो करके दर्शन होगा। इसका नाम है दर्शन। लेकिन परमात्मा न कहीं से आता है, न कहीं जाता है। **....**तदाकार हो जाती है शक्ति ही क्रोधाकार है। समझ में आयेगा? याद रहेगा? क्रोध कहीं से आता नहीं, शक्ति ही क्रोधमय है। शक्ति ही क्षमामय है, शक्ति ही प्रेममय है, शक्ति ही दोषमय है, परमात्मा की शक्ति। उसी शक्ति से हम गालियां दे रहे हैं, उसी शक्ति से हम ईर्ष्या कर रहे हैं, उसी शक्ति से हम प्रेम की बात विचार कर रहे हैं, उसी शक्ति से द्वेष की बात विचार कर रहे हैं। शक्ति एक है उसके प्रयोग अनेक-अनेक हैं तैसे आपकी प्रीति एक है प्रीति जिन आकारों में व्याप्त है वे

आकार अनेक हैं। ये इशारे किये जा रहे हैं कि मनुष्य कितना भटका हुआ है, कितना भूला हुआ है होश नहीं आता, क्यों? जहां से दर्शन होता है वह आंख नहीं खुली है। इन आंखों से दर्शन नहीं होता, आंख नहीं। लेकिन आप आ गये हो इस मंदिर में यह बड़ा विचित्र तीर्थ है। यहां भगवद् भाव से आप आते हो, यहां भगवान को साकार रूप में आपने प्रतिष्ठा कर रखी है, अन्तर्यामी प्रभु याद रखना- ऐसी कोई जगह नहीं है, ऐसा कोई क्षण नहीं जब परमात्मा न हो।

परमात्मा सर्वत्र उपस्थित है याद रहेगा- परमात्मा सर्वत्र उपस्थित है लेकिन हम परमात्मा के लिये उपस्थित नहीं हैं। तन के लिये हैं, धन के लिये हैं, परिवार के लिये हैं, संबंधियों के लिये हैं। परमात्मा के लिये हम उपस्थित नहीं हैं। परमात्मा के लिये हम उपस्थित (हो जायें)2 तो परमात्मा को न कहीं ढूंढ़ने जाना है, न कहीं खोया हुआ है लेकिन उपस्थित तो हों। उपस्थित होने के लिये करना क्या है? न चिल्लाना है, न शोर मचाना है, कुछ नहीं करना। अब ये साधना की बात थोड़ी आती है कुछ नहीं करना है। परमात्मा के लिये कुछ नहीं करना है। जो कुछ करना है, कुछ पाने के लिये करना है। परमात्मा को पाना नहीं है। पाना छोड़ना है, करना छोड़ना है। जब करना छूट जायेगा तब पता चलेगा कि जिनकी सत्ता से, जिसकी शक्ति से, जिस चेतना से जन्म-जन्मांतरों से और इतनी आयु में हम कुछ करते आ रहे हैं- उसको परमात्मा कहते हैं- परम आत्मा। गीता में इसीलिये इशारा किया गया है-

युञ्जनेवं सदात्मानं योगी विगतकल्मषः। (6/28)

आत्मा को परमात्मा में लगाते रहो कितनी सुंदर साधना है। अभी ये पता ही नहीं। जप करते है, जप कर रहे हैं, कीर्तन कर रहे हैं और लगे कहां हैं- धन में, तन में, परिवार में, संबंधियों में, सुख में, दुख में। भगवान कह रहे हैं- आत्मा को परमात्मा में लगाओ। ये साधना है कितनी छोटी साधना। तुम हो चेतन आत्मा और तुम जिसमें हो उसी का नाम है परमात्मा। अभी कहां लगे हैं- भूमि भवन में, तन में, धन में, परिवार में लगे हैं, बाहर लगे हैं। तुम कुछ न करो एक शर्त लगा दी है- **योगी विगतकल्मषः**, जिनकी कल्मष कालिमा नष्ट हो गई है वह आत्मा को परमात्मा में लगा सकेंगे वरना नहीं। आत्मा को परमात्मा में लगाने की साधना ये गुरूजनों से पूछो और नहीं तो जो करते हो, करते रहो, करते रहो, करते रहो। अभी तक करके देखा है और रहा सहा ये जीवन है, रही सही उमर है और करके देख लो। जरा देख लेना चुनौती दी जा रही है- अभी

तक जो कुछ किया है वह मिला है जो चाहते हो? कह दो हां मिला। हमें भगवान के दर्शन हुये। हम कहते हैं- तुम्हें दर्शन हुये, दर्शन हुये ठीक। तुम्हारा भय मिटा? तुम्हारी चिन्ता मिटी? तुम्हारी अशांति हटी? अब तो तुम्हें कुछ नहीं चाहिए? अगर कुछ चाहिये तो गड़बड़ हो गया। कुछ न चाहिये तो तुम ठीक। ऐसा तुम्हें क्या मिला कि जब तुम कह सको- अब हमें कुछ नहीं चाहिये। तो महागंवार गांव का गंवार भी कह देता है अब हमें कुछ नहीं चाहिये- हमारे है, हमारे लड़का हो गया, हमारा लड़का पढ़ गया अब नौकरी में करने लग गया अब हमें कुछ नहीं चाहिये। वह भी कह देगा जिसको देखा उसको देखो। बढ़िया साड़ी मिल गयी अब नहीं चाहिये, जेवर मिल गया अब नहीं चाहिये, मकान मिल गया नहीं चाहिये, भूमि मिल गयी नहीं चाहिये, कारखाना चल गया नहीं चाहिये। अनेकों लोग यही रटते रहते हैं। जो कहते हैं- कुछ नहीं चाहिये वह चाहते चाहते मरते हैं। चाह को लिये ही मरते हैं। बिरला ही कोई ऐसा व्यक्ति हो जो कह सके- हम तृप्त हैं जीवन में, हमें कुछ भी नहीं चाहिये। ऐसा कहते हुये जो शरीर छोड़ दे। क्यों? हमारी सब चाहें पूरी हो चुकी हैं। नाती-पोते भूमि-भवन सब कुछ हमारे आस-पास है अब हमें कुछ नहीं चाहिये। बताइये जा रहे हैं कहते हैं- हमें कुछ नहीं चाहिये। छोड़ रहे हैं और कहते हैं हमें कुछ नहीं चाहिये। अरे तुम्हें चाहिये भी तो करोगे क्या? तुम रखोगे क्या? रहोगे कैसे? और कह रहे हो हमें कुछ नहीं चाहिये, बड़ा धोखा है। इसलिये फिर उसी शब्द पर आ जाओ- जो करना चाहिये अभी तक नहीं किया; जो न करना चाहिये वह कर रहे हैं। करना क्या चाहिये? अब प्रश्न है- करना क्या चाहिये? तो आप इसका उत्तर तब खोज सकोगे जब पता लगा लोगे कि तुम चाहते क्या हो जिसके लिये तुम कुछ करते हो? अब ये प्रश्न है- तुम चाहते क्या हो? अगर तुम शांति चाहते हो तो तुम पूछोगे- क्या करना चाहिये? भगवान से पूछ लेना, इन्सान से न पूछना।

भगवान कहते हैं- तुम शांति चाहते हो, परम शांति चाहते हो। बहुत सुलभ है बहुत सरल। कैसे? एक काम कर डालो तुम जिन कामनाओं के कारण अशांत होते हो उन कामनाओं को छोड़ दो। (जिस सुख)2 की चाह के पीछे अशांत होते हो, उस सुख की चाह को (छोड़ो), देखो याद रखना- सुख न छोड़ो, सुख की चाह छोड़ दो। वस्तु न छोड़ो, भूमि भवन न छोड़ो, कामना छोड़ दो। दोनों चीजें अगर छोड़ना चाहते हो तो तीसरी चीज याद रखना- ममता

छोड़ो क्योंकि ममता न होगी वहां कामना न होगी। ममता न होगी- सुख की प्रतीति न होगी, ममता छोड़ दो। अब ममता छोड़ना चाहते हो तो जहां ममता छूटी आकार समाप्त हुये मेरा कहने के लिये कुछ रह ही न जायगा। मेरा कहोगे- आकार बन गये। मेरा नहीं कहोगे- आकार समाप्त हो गये, अहंकार समाप्त हो गया। अहं रह गया। अहं ज्ञान है। अहं ज्ञान परमात्मा में स्फुरित हो रहा है। वह अहं योगी होता है अहंकार भोगी है। तो आप लोग सुन तो रहे हो लेकिन भीतर झांक के देखो- क्या-क्या भरा है? कितने संबंध हैं, कितने संबंध हैं? कहां-कहां प्रीति में क्या-क्या जकड़ा हुआ है, भरा हुआ है, कैसे हटेगा? कभी जरूरत पड़ेगी तब के लिये सुन रहे हो। अगर कोई कह दे- हमें अभी परमात्मा की जरूरत है तो परमात्मा अभी है। कब? परमात्मा अभी तुम्हें सुलभ है। कहो- दिखायी तो नहीं पड़ता, बस गड़बड़ हो गया। परमात्मा को देखना चाहते हो तुम्हारी चाह हो गयी। परमात्मा अभी सुलभ है कुछ न चाहो, शांत हो जाओ, मौन हो जाओ, फिर जरा आप घड़ी रख के देख लेना- जितनी देर आप शांत हैं, जितनी देर आप मौन हैं, उतनी देर (आप)2 दुखी नहीं हैं, भयभीत नहीं हैं, चिन्तित नहीं हैं, किसी की याद नहीं आ रही है अभी-अभी परमात्मा है। फिर तुम कहोगे- दिखाई दे जाय तो तुम चाहने लग गये। चाह आ गयी तो आंखों में आ गये। कुछ दिखाई पड़े कुछ सुनाई दे तब तो तुम भोगी बनना चाहते हो। कुछ न चाहो तो परमात्मा, कुछ चाहो तो संसार- इतना छोटा सा फर्क है। कुछ चाहा तो संसार में आ गये, कुछ न चाहो तो अभी-अभी परमात्मा में ठहर गये। एक दिन भी बिताना, एक घंटा बिताना मुश्किल है कि हम कुछ न चाहेंगे। कभी-कभी आज इतवार का दिन है, छुट्टी है, आज हमें कहीं नहीं जाना है। जब आज कहीं नहीं जाना, कहीं नहीं घूमना है यहां तक कि सिनेमा भी नहीं जाना है मंदिर मूर्ति भी- बताओ आपको कौन सी अशांति है कहीं नहीं। आज कुछ नहीं चाहिये। भूख लगे तो खाना चाहिये। खाना में नमक नहीं पड़ा तब भी लड़ाई हो गयी मिठाई नहीं ये नहीं तब भी जाने कितनी चाहें आ गयीं एक दिन कोई बिता करके तो देख ले- आज के दिन हम कुछ न चाहेंगे। जरा कल ही करके देख लेना- कल अभी दिन आयेगा ना अभी कल तय कर लेना- आज हमें कुछ नहीं चाहिये। है हिम्मत किसी की। थोड़ा हाथ उठा दो- तुमसे नहीं तुम उठा दो कोई हो कल कहना- हमें कुछ नहीं चाहिये। डरते क्यों हो? कोई छीन न लेंगे। कल कोई कह सकते हो- ठीक यहां आओगे कि नहीं? पूछो- जरा

बताओ, आओगे कि नहीं। अरे वहीं से बता दो। कल आओगे कि नहीं। कल आओगे कि नहीं? (हां) तो ये चाह न हो गयी। अच्छा बैठ जाओ (हम तो भगवद भजन चाहते हैं) हां जी भगवद भजन, अरे सुन लिया है कहीं से पता नहीं है भगवान का न कुछ। यही तो गड़बड़ है। हमने पहले ही कहा था- हमने जो सुना है मान लिया है, बचपन से जो सुना है वह मान लिया है। इतनी उम्र बीत गयी बूढ़े हो गये और माने हुये को जानने की कोशिश नहीं की। ऐसे ही जीवन बीत गया और बीत जायेगा। याद रखना- जो होना चाहिये वह न होगा, जो न होना चाहिये वह हो रहा है रोज।

तुम भगवान को चाहते हो- भगवान तुम्हारे चाहने से न मिलेगा। तुम मुक्ति चाहते हो मुक्ति तुम्हारे चाहने से न मिलेगी। वस्तु मिलेगी, पत्नी पति धन व्यापार ये सब मिलेगा तुम्हारे चाहने से, परमात्मा तुम्हारे चाहने से न मिलेगा, मुक्ति तुम्हारे चाहने से नहीं मिलेगी। न समझ में आये तो कल हमसे अच्छी तरह से पूछ लेना।

मुक्ति चाहने से नहीं मिलेगी, परमात्मा चाहने से नहीं मिलेगा। क्यों न मिलेगा? क्योंकि मिला ही है। चाह ही बाधक है, अभी-अभी थोड़ी देर तुम कुछ न चाहो तो बताओ- क्या बचा? जो बचा उसी का नाम परमात्मा। तुम फिर शर्त लगा दो- दिखाई तो दे, देखने की चाह हो गयी। इतना बहुत है इतना पच जाये तो सारे जीवन के लिये आपने सुन लिया, मुक्ति की बात, भक्ति की बात, शांति की बात। इतना समझने के लिये अभी और सुनना पड़ेगा। अब थोड़ा सोचो, विचार करो। मानते हो थोड़ा मन से, अब जानो बुद्धि से वरना तुम हजार महात्माओं के दर्शन करो, तुम्हें अशांति तुम्हारी बनी ही रहेगी। अशांति बीच-बीच आती ही रहेगी, कितना ही पूजा-पाठ जप करो तुम्हारा भय चिन्ता बीच-बीच आता ही रहेगा। हम पुजारी जी को नहीं कहते रहे हैं- जीवन बीत रहा है इनका। पुजारी जी कभी डर तो नहीं लगता है? जीवन बीत जायेगा। इनको नहीं कह रहे हैं तुम्हें कह रहे हैं तुम रोज मंदिर में आओ तुम्हारा भय बीच में भय आ ही जायेगा, चिन्ता आ ही जायेगी, दुख आ ही जायेगा। वियोग कभी न कभी होगा ही, कभी-कभी प्रारब्ध में हानि होगी ही, कभी कोई अपमान होगा ही। जो मिला है छूटेगा ही तब क्या करोगे? वाह-वाह कि हाय-हाय? तो सोच लेना बिना किसी तरह आप बच नहीं सकते।

जब तक आप नित्य प्राप्त परमात्मा में अपनी बुद्धि को स्थिर करके अपने को नहीं देख लेते, अपना ज्ञान प्राप्त नहीं कर लेते तब तक आप भय से, चिन्ता से, अशांति से न छूटे हैं, न छूट पाओगे। इतना ही पर्याप्त है अब आगे की बात आप कल सुनेंगे।

मन न माने तो जो मन आवे सो करना लेकिन हमारे मत्थे न देना। हमें गुरू मान करके तुम मान लोगे गुरू, हम हो जायेंगे तुम्हारे गोरू। गोरू का मतलब पशु चाहे जैसे बांधो, चाहे जैसे नचाओ, चाहे जो कुछ करो, चाहे जितना तिलक लगाओ, बाल नुच जायें, नुच जायें, तुम माला पहिनाते जाओ और अजीर्ण हो जाये, पेट खराब हो जाये खिलाते जाओ। हे भगवान! गुरू बने हैं कि गोरू बने? ऐसी पूजायें तुम्हारी चल रही हैं विचार होता नहीं अब बताओ थोड़ा मान बैठे हो अंधी श्रद्धा मस्तिष्क में हृदय से शुरू होती है।

मस्तिष्क में जाते-जाते अंधी हो जाती है। इस तरह आपका काम बना नहीं। जो होना चाहिये वह हुआ नहीं, आगे भी नहीं होगा। सब लोग नारियल लाये थे माला लाये थे हमारे पास पैसे कम थे अच्छा हुआ।

फिर चाहने लग गये पंडित जी हमारे पुजारी जी बहुत बढ़िया। एक किताब दे देना। ज्ञान में देखो- असत् से मुक्ति नहीं सत्संग नित्य सुलभ। एक पुस्तक इस साल निकली है 'सत्संग नित्य सुलभ'। नित्य निरंतर सत्संग सुलभ है कहीं भागने जाने की जरूरत ही नहीं है। इसके पहले ज्ञान में देखो क्या-क्या हो रहा है? क्या-क्या तुम्हारे साथ है। 'सत्संग नित्य सुलभ' किताब निकालो। क्यों भाई कोई ला रहे हो? कितनी देर लगा दी?

मुश्किलें होती हैं आसान • शब्दों पर ध्यान देना।
(मुश्किलें होती हैं आसान बड़ी मुश्किल से।)2
(समझ में आता है अज्ञान बड़ी मुश्किल से।।)2

(दुनियावी ज्ञान में)2
दुनियावी ज्ञान में गरूर में सब भूले है....
• एक होता है परमात्मा ज्ञान स्वरूप और एक होता है दुनियावी ज्ञान
दुनियावी ज्ञान में
(दुनियावी ज्ञान में हम भूले हैं।)2
(कोई होता है निरभिमान बड़ी मुश्किल से।)2

(जहाँ)2 इन्सान में हैवानियत • मनुष्य में पशुता।
जहाँ इन्सान में हैवानियत छिपी रहती।
(देख पाते कोई विद्वान बड़ी मुश्किल से।।)2
समझ में आता है अज्ञान बड़ी मुश्किल से।।

(कभी)2 ईश्वरीय विधान गलत करता नहीं
• लेकिन हम ईश्वर को मानने वाले अभी तक होश में नहीं हैं
अपने आप जीवन जो आ जाता है ईश्वरीय विधान है। अगर होश रहे तो आदर करना इंकार मत करना क्यों का प्रश्न मत उठाना- ऐसा क्यों हो गया, डाका क्यों पड़ गया, लड़का क्यों मर गया, ये ऐसा गलत काम क्यों, अरे बाबा
(कभी ईश्वरीय विधान गलत करता नहीं।)2
(मगर होता है इत्मीनान बड़ी मुश्किल से।।)2
समझ में आता है अज्ञान बड़ी मुश्किल से।।
जो कि धनवान। जो कि बलवान रूपवान झूठावान बना।
• वान, कोचवान, गाड़ीवान, मोटरवान जाने कितने वान हैं
रूपवान, गुणवान, कुलवान। बहुत याद रखने की बात है
ये भगवान की बात दोहरायी जा रही है।
जो कि बलवान, रूपवान, झूठावान बना। उसे होना है
(उसे होना है आत्मवान बड़ी मुश्किल से।।)2
समझ में आता है अज्ञान बड़ी मुश्किल से।।

(किसी की आत्मा)2 परमात्मा से भिन्न नहीं।
• कैसी गुरूजनों की बातें हैं ये
परमात्मा से भिन्न नहीं।
(ज्ञानी कर पाते हैं पहिचान बड़ी मुश्किल से।।)2
समझ में आता है अज्ञान बड़ी मुश्किल से।।

सुलभ हो जाते हैं। सुलभ हो जाते हैं भगवान • किसको?
किसी की भावना से।
किसी भी साधना से चित्त शुद्ध होने पर

• बड़ी छोटी सी परिभाषा आती है लोग कहते हैं कौन साधन सरल है? कौन साधन अच्छा है? जप हो, कीर्तन हो, पाठ हो, पूजा हो, मौन हो, शांत हो, ध्यान हो, वही साधन उत्तम है जिससे हमारा मन चित्त बुद्धि अन्तःकरण शुद्ध हो जाय- वही साधन ठीक और अशुद्ध रहे- वही साधन गलत। कोई कसौटी नहीं कि साधन कौन अच्छा, जप कौन अच्छा, कीर्तन कौन अच्छा?

किसी भी साधना से चित्त शुद्ध होने पर।
(सुलभ हो जाते हैं भगवान बड़ी मुश्किल से।।)2
समझ में आता है अज्ञान बड़ी मुश्किल से।।

अपने ही। अपने अज्ञान अशांति • जितना कुछ हमारे जीवन में है।
सारे अज्ञान अशांति दुख अहंकार में हैं।
सारे बंधन अशांति • अरे भगवान नहीं देता,
भगवान हमें अशांत नहीं बनाता भगवान दुख नहीं देता।

सारे बंधन अशांति दुख अहंकार में हैं।
मुक्त होता कोई महान बड़ी मुश्किल से।।
समझ में आता है अज्ञान बड़ी मुश्किल से।।

गलत कर्मों ही से • बड़ी छोटी लाइनें हैं।
(गलत कर्मों से ही हम मुश्किलों में पड़ते हैं।)2
(सही कर्मों का होता ज्ञान बड़ी मुश्किल से।।)2

• अंतिम बात-
सत्य सर्वत्र सर्वमय • छोटे-छोटे वाक्य हैं
सत्य सर्वत्र सर्वमय उसी में है संसार।।
• कहीं खोजना नहीं दूरी है ही नहीं।
सत्य सर्वत्र सर्वमय उसी में है संसार।
(पथिक में रहता यही ध्यान)2 बड़ी मुश्किल से।।
समझ में आता है अज्ञान बड़ी मुश्किल से।
मुश्किलें होती हैं आसान बड़ी मुश्किल से।।

जिसकी सत्ता में, जिस चेतना में जिसकी मिली हुई बुद्धि में आप सुन रहे थे, उसी चेतना में, उसी चेतन स्वरूप में नित्य प्राप्त परमात्मा में थोड़ी

देर आप मन को लगा दें, मन को लगा दें बड़ी सुन्दर साधना गीता में बताई गई है।

आत्मसस्थं मनः कृत्वा न किंचिदपि चिन्तयेत। (6/25) किंचित भी अन्य का चिंतन मत करो। नित्य प्राप्त चेतन स्वरूप आत्मा में मन को लगा दो। बस ये साधना हुई। यहां न जप है, न कीर्तन है, न पाठ है, न पूजा है, न चिल्लाना है। यही चेतन है, यही मन है, अभी मन लगा है संसार के नाम रूपों में, अब मन को लगा दो चेतन स्वरूप में- ये साधना है। थोड़ी देर उसमें मन लगा दो जो तुम्हें नित्य प्राप्त है उसी को आत्मा कहते हैं, उसी को परमात्मा कहते हैं, उसी को सत्य कहते हैं। कुछ क्षण आप शांत हो करके, मौन हो करके, इस चेतन स्वरूप में ही बुद्धि को स्थिर करें। यह संतों की साधना है।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।

•

ॐ

जहाँ ज्ञान में देख न पाते

बहराइच

जहाँ ज्ञान में देख न पाते, आँखों से देखते हैं लेकिन ज्ञान में नहीं देखते। आँखों से तो गीध पक्षी पशु गधा कुत्ता सब जानवर ज्यादा देखते हैं मनुष्य से लेकिन ज्ञान दृष्टि उनके नहीं है। और तुम्हारे भगवान क्या कहते हैं-

पश्यन्ति ज्ञान चक्षुषा, विमूढ़ानानु पश्यन्ति- जिनकी बुद्धि, जिनका मन मूढ़ है और बुद्धि में मूर्खता है वह देख न पायेंगे। इतना छोटा सा वाक्य अंत में सुन रहे हो। किसी प्रकार तुम ज्ञान दृष्टि, किसी तरह ज्ञानदृष्टि तुम्हारी खुल जाये तो कितना कल्याण हो जाय**!** ज्ञान चक्षु खुल जायें। ज्ञान चक्षु भीतर हैं प्रज्ञा दृष्टि ज्ञान चक्षु हैं। इन आंखों से दर्शन नहीं होगा।

जहाँ ज्ञान में देख न पाते वहीं मोह में हम फँस जाते।। ज्ञान में न देखने के कारण हम मोह में फंस गये हैं कि नहीं। अब मोह की निवृत्ति हो सकती है विवेक ज्ञान से चाहो तो इसीलिये सत्संग सुलभ हुआ है। जब तुम चाहोगे तो होयेगा वरना कोई दूसरा नहीं करेगा।

वहीं मोह में हम फँस जाते। अंधकार में रत्न समझकर। समुद्र में कोई गोता लगावे और झोली भरता जाये, दिखाई पड़ता नहीं। ऊपर आता है तो देखता है- अरे इसमें ऊपर तो कंकड़ पत्थर झोली में भरे पड़े हैं मोती तो कहीं मिला ही नहीं। यह दशा जीव की है- इतनी उमर बीत गयी और जब ज्ञान में देखोगे तो पता चलेगा- बचपन से सुख भोगते-भोगते और इतनी उमर बिता दिया आज तक सुख मिला ही नहीं। आप कहोगे- सुख तो हमें रोज बहुत मिल रहा है। याद रखना बुद्धि साथ दे तो सोच लेना- सुख अभी तक तुमको प्रतीत होता है प्राप्त नहीं। प्राप्त हो जायेगा तो उसकी कामना न रह जायगी। सुख की कामना बताती है अभी मिला ही नहीं।

तो रोज-रोज सुख की कामना क्यों होती? मिल गया तो मिल गया जो नहीं मिला मतलब प्रतीति होती है प्राप्ति नहीं होती।

अंधकार में रत्न समझ कर कंकड़ पत्थर ही चुनते हैं। ये हमारी दशा है।
मूल्य न मिलता जब उनका कुछ तब हम अपना सिर धुनते हैं।।

काल कर्म को दोष लगाते- रामायण में इसीलिये लिखा है-

सो परत्र दुख पावइ सिर धुनि धुनि पछिताइ।
कालहिं कर्महिं ईश्वरहिं मिथ्या दोष लगाइ।।

तब हम दोष लगाते हैं- समय बड़ा खराब है, भगवान की कृपा नहीं है और ये ऐसा है वैसा है।

काल कर्म को दोष लगाते जब हम ज्ञान प्रकाश न पाते।। भूमि भवन तन धन जन मन को- थोड़ा देख लेना अभी-अभी तुम्हारी हमारी क्या दशा है।

भूमि भवन तन जन धन मन को (अपना मान सुखी होते हैं)2
जहाँ किसी का वियोग होता (तब अत्यंत दुखी होते हैं।)2

अनजाने ही लोभ बढ़ाते हम- लोभ क्या है, अब और मिले और मिले और बना रहे। **अनजाने ही लोभ बढ़ाते जहाँ ज्ञान में देख न पाते।। वहीं मोह हम फंस जाते।।**

अविनाशी हम देह विनाशी, रामायण कह रही है- **ईश्वर अंश जीव अविनाशी हम (देह विनाशी)2 यह जड़ है हम सत चेतन हैं।**

रोज मनन करो- देह जड़ है, देह विनाशी है, हम सत् चेतन हैं। हम ईश्वर के अंश अविनाशी हैं। कोई कठिनता है इसमें? रकम लगेगी कि कहीं भागना पड़ेगा? देह को देखो- ये विनाशी हम देखने वाले चेतन अविनाशी। एक बालिका अगर अभ्यास करे रोज तो साल भर में उसका यही अभ्यास हो जायगा। एक बुढ़िया अभ्यास न कर पायेगी क्योंकि उसकी आदत बहुत मजबूत हो गयी है। हमारी वृद्ध मातायें नाराज न हों। हारे को हरिनाम है। अरे राम नाम को पकड़ लो लेकिन अब भी घर की चिन्ता में क्या हुआ नाती-पोतों में फंसी डटी पड़ी हैं, भगवान का पता नहीं।

अविनाशी हम देह विनाशी यह जड़ है हम सत चेतन हैं।
परम आत्मा सर्वाश्रय है (यह है एक अनेकों मन हैं।)2
(ऐसा गुरुजन हैं समझाते)2 जहां ज्ञान में देख न पाते।।
वहीं मोह में हम फंस जाते।।

और एक इशारा है। **दुखी दशा में त्याग और तप-** क्या सुन्दर साधना हमें बताई है गुरूजनों ने। दुखी दशा में हम क्या करें? हाय-हाय नहीं, दुखी दशा में

त्याग करें। किसका? जो हमें दुख देता है। कौन? पति पत्नी माता पिता दुख देते हैं ना। उसका त्याग कर देना चाहिये कि नहीं? अब भी देखो ऐसी जड़ बुद्धि है कहती है हां। अरे माता-पिता परिवार ये कोई दुख नहीं देता। अभी सुन चुके हो- **काहू न कोउ सुख दुख कर दाता।** दुख कौन देता है- हमारी चाह, हमारी कामना, हमारी आसक्ति, हमारी ममता दुख देती है। अब याद रहेगा? अब दुखदाता कौन है- पड़ोसी कि परिवार?

हमारी ममता दुख दे रही है, हमारा मोह दुख दे रहा है, हमारी आसक्तियां दुख दे रही हैं- ये दुख दे रही हैं।

कोऊ न काहू सुख दुख कर दाता- याद रहे, **दुखी दशा में** (किसका त्याग)2 कामना का, हां कामना का त्याग, आसक्ति का त्याग, ममता का त्याग, लोभ- चप्पल खो गयी है- कौन दुख देता है चप्पल चुराने वाला कि लोभ (लोभ) याद रहेगा? धोती बंदर उठा ले गया तो कौन दुख देता है बंदर कि धोती का लोभ (धोती का लोभ दुख देता है) और पुरानी ले गया और नयी बच गयी तो बड़ी खुशी मानती हो बच गयी, बच गयी। नयी ले जाता अभी कल ही तो 100 रूपये की लाये हैं। **......**यानि लोभ दुख देता है- अब याद रहेगा? चप्पल चुरा ले जाये तो उसको मारोगी कि नहीं ऐं भूल जायेगा। हानि हो तो दुख, वियोग होतो दुख, अपमान हो तो दुख और ये भूल गये कि कौन दुख देता है- हमारा दोष, हमारी आसक्ति, हमारी ममता, हमारी कामना हमें दुख देती है। अगर इतना याद रह जाये तो आज का तुम्हारा आना सार्थक हो जाये।

बड़े-बड़े तीर्थों के नहाने से जो तुम्हारा दुख न मिटेगा वह इस ज्ञान से तुम्हारा दुख मिट सकता है तो क्या करो? **दुखी दशा में त्याग और तप-** त्याग तो कहते हैं उस कामना को छोड़ दो, उस ममता को छोड़ दो कैसे छोड़ दें परिवार न छोड़ो, मेरा-मेरा-मेरा जो रटे जा रहे हैं (मेरा नहीं)2 सब भगवान और तप का मतलब सह लो- जो कष्ट आवे, अब जो प्रतिकूलतायें आयें इनको सह लो, सहने का नाम तप है। सास गाली दे और सह लो, इसका नाम तप है। लड़ो तो एक ही हम चार सुनायेंगे क्या हम कमजोर हैं?

देवरानी जेठानी लड़ रही हैं ये कमजोर है हमें कहेगी। क्या हम कुछ कम हैं, अकड़ रहे हैं, लड़ रहे हैं अब कैसे काम चलेगा। तप का मतलब सह लो, उसका पाप उसके हिस्से में तुम सह लो तो तुम पाप से बच जाओगे।

क्यों भाई लड़ोगी कि सहोगी? अरे बोलो ना (सहेंगे) हां बालिकायें अच्छी हैं, कहती हैं सह लेंगे। हूँ बड़ी जेठानी क्या हम मजदूर के घर के हैं जो सहेंगे, क्या हम कुछ कम हैं, हमें एक कहेंगे तो हम दस खरी-खरी सुनायेंगे। ऐसा नहीं सह लो।

दुखी दशा में त्याग और तप सुखी दशा में सेवा कर लो। जब तक तुम्हें सुख है तब तक सेवा करो। मान का सुख है दूसरों को मान दो, प्यार दो, अधिकार दो। कर लो अभी मौका है आगे ऐसा मौका रहेगा नहीं। सुखी हो तो सेवा करो (दूसरे को)2 सुख पहुंचाओ। दुखी हो तो किसी को दुख न देना। दुखी हो तो सह लो और जो कामना, जो आसक्ति, जो ममता तुम्हें दुख दे रही है उसको छोड़ दो। ये तुम्हारे वश में है लेकिन कोई तुम्हें मान दे, प्यार दे, अधिकार देता ही रहे ये तुम्हारे वश में नहीं है।

आज जो सुन रहे हो आज मानो तो मानो और यदि ये न मानो तो 20 बरस सत्संग करते रहो पूजापाठ करते रहो। तुम्हारा दुख कोई भगवान मिटा न पायेंगे। कोई भगवान मिटा दे तो हमें बता देना, हम तुम्हारे चेला बन जायेंगे क्योंकि हमें पता है तुम मिटा न पाओगे। कोई मिटा न पायेगा। तो क्या करो? दुखी दशा में त्याग करो तप करो।

सेवा का मतलब पैर दाबे, ये नहीं। सेवा का मतलब जिससे उसकी चाह है मन की चाह है प्यार की चाह है अधिकार की चाह है तुम्हारा संबंधी है जो न्यायपूर्वक धर्मपूर्वक दे सकते हो उसे दे दो लेकिन इच्छा छोड़ दो तो सेवा है। **दुखी दशा में त्याग और तप सुखी दशा में सेवा कर ले** और **आत्मज्ञान से पूर्व तृप्त हो-** ये है गुरूमंत्र। हम धन से तृप्त होना चाहते हैं, संयोगी से बद्ध होना चाहते हैं, पति और पत्नी से, पुत्र और माता-पिता से तृप्त होना चाहते हैं। आज तक किसी को तृप्ति नहीं मिली। कैसे? आप अपनी आत्मा में गीता में अगर भगवान की बात मानते हैं-

यस्त्वात्मरतिरेव स्यादात्मतृप्तश्च मानवः (3/10), जो आत्मा में ही तृप्त है, आत्मा में ही संतुष्ट है, आत्मा में ही जिसकी प्रीति है **तस्य कार्यं न विद्यते,** उसको संसार में कुछ नहीं करना बाकी। कितना छोटा सा मंत्र सुन रहे हो। भगवान तुम्हारे कह रहे हैं।

तुम्हारी जिद क्या है? पता ही नहीं भगवान जो कहते हैं मानों नहीं। तुम भगवान को फुसलाओ मिठाई दिखा करके, फूल चढ़ा करके, स्तुति करके। कितना धोखा है भगवान कहते हैं क्यों भटक रहे हो? ये आत्मा **अहमात्मा गुडाकेश**, मैं आत्मा के रूप में प्रत्येक के हृदय में विद्यमान हूँ भगवान तो कहते हैं ये। तुम कहते हो- नहीं नहीं, तुम रखो अपना ज्ञान हम तुम्हें मंदिर में बैठायेंगे, जैसी चाहेंगे पूजा करेंगे। जैसा चाहेंगे वरदान मांगेंगे, है ना ऐसा समाज में। तुम लोग दौड़ रहे हो कि नहीं। महामूढ़ता है महामूर्खता है। करो दौड़ो तुम लेकिन परमात्म की भगवान की बात का अपमान करके यहां किसी को शांति नहीं मिलेगी, किसी के दुख नहीं मिटेंगे। यह सुन रहे हो अगर तुम इसको न भूलो तो। **आत्मज्ञान से पूर्ण तृप्त हो नित्य प्रेम में प्रभु को भर ले।** क्या सुना? अपने प्रेम में तुम किसको भरो? प्रभु को। अभी प्रेम में क्या भरा है? (मोह परिवार) मोह नहीं चप्पल, जूता, घड़ी, छाता, साड़ी, परिवार, नाती-पोता, घर, मकान, भूमि- ये सब प्रेम में भरा है। भगवान दब गये हैं कि उनको अगर तुम ढूंढ़ो तो बड़ी दूर चले गये हैं। उनकी आवाज भी नहीं सुनायी पड़ती तुम सुन न पाओगे, उनकी आवाज को क्योंकि ऊपर तमाम भर लिया है तुमने। कितना गजब किया है। कितना अंधेर किया है, दबा दिया है भगवान को जो नित्य प्राप्त है पदार्थों से, वस्तुओं से, व्यक्तियों से प्रीति में सब भर गये ओर यहां क्या इशारा है?

आत्मज्ञान से पूर्ण तृप्त हो नित्य प्रेम में प्रभु को भर लो, इसमें हम क्यों देर लगाते, इसमें बल की जरूरत नहीं है, धन की जरूरत नहीं है, कहीं जाने की जरूरत नहीं है, होश में आने की जरूरत है। होश में आ जाओ, देर मत लगाओ।

प्रेम परमात्मा के लिये सुन लेना प्रेम परमात्मा के लिये, ज्ञान संसार से छूटने के लिये और शक्ति संपत्ति सब सेवा के लिये। अगर आप इतना पकड़ लो तो कहीं भटकने की जरूरत नहीं। तुम गुरू हो तो गुरू के भक्त हो तो, गुरू के तुम शिष्य हो तो, परमात्मा के तुम प्रेमी हो तो केवल इतना कितना? प्रेम परमात्मा के लिये कि देह के लिये और ज्ञान प्राप्ति के लिये कि ज्ञान से सब निकालने के लिये? मुक्त होने के लिये ज्ञान, भक्ति के लिये प्रेम और पुण्य के

लिये सेवा, पाप से बचने के लिये सेवा। सब कुछ सेवा में लगा दो। कह दो धनी, धनी बन जाओ। धनी का मतलब पैसे से नहीं। कह दो- परमात्मा से हमें शक्ति मिली है, परमात्मा के द्वारा हमें शरीर मिला है ये जो कुछ परमात्मा के द्वारा मिला है- अब इसके द्वारा हम सेवा करेंगे। इसका नाम है धनी और दरिद्र कौन है? जो मिला है याद नहीं आता और ये बहू से मिले, सास से मिले, पति से मिले, पत्नी से मिले, माता-पिता से मिले, गुरू से मिले, भगवान से मिले- ये भिखारी दरिद्र हैं कि कोई भगवान के भक्त हैं? सब मांगते रहते हैं जिसको देखो। तुम तो न मांगोगे अब? जो मिला है उसे देखो बहुत मिला है कोई इंसान नहीं दे सकता। जो तुम्हें आंखें मिली हैं, जो तुम्हें कान मिले हैं, जो तुम्हें बुद्धि मिली है, जो तुम्हें सत्संग का सुयोग मिला है, कोई मनुष्य नहीं दे सकता- भगवद कृपा से मिला है उसको देखो क्या-क्या मिला है और जो मिला है वह दिखाई नहीं देता है जो नहीं मिला है कैसे मिले- इसी में सारी दुनियां पागल बन करके भाग रही है- क्या होगा?

इसमें क्यों हम देर लगाते जहां ज्ञान में (देख न पाते)2, वहीं मोह में हम फंस जाते, और एक इशारा है- **सत्चेतन को भूले रहकर-** रोज ये भूल चल रही है, रोज ये अपराध चल रहा है रोज ये पाप हम सब से बन रहा है। क्या? जो सत् है चेतन है परमात्मा का है उसे भूले हैं। भगवान कह चुके हैं, गीता में लिखा है रामायण में लिखा है- उसे जो भूलता है, अपराध कर रहा है कि नहीं? और किसको भूले हैं देह को भूले हैं कि सत् चेतन को? सत् चेतन को भूले हैं और देह याद आती है, पति की देह, पत्नी की देह, माता-पिता की देह, गुरू की देह याद आ रही है और सत् चेतन और सत् परमात्म तत्व भूला हुआ है। कितना अपराध हो रहा है। करो पूजा-पाठ देखें तुम्हें कौन मुक्त करता है। कोई न कर पायेगा। ये ज्ञान तुम्हें मुक्त करेगा।

सत् चेतन को भूले रहकर (मुग्ध हो रहे जड़ काया में।)2 ममता के वश हम मर्कटवत्, मर्कट कहते हैं बंदर को। ममता के कारण बंदर जैसे नाचता है इशारों में, तैसे ही जिसकी जहां ममता है उसके इशारों में नाच रहा है। जीवन नाचते बीत गया। पति नाच रहा है पत्नी के इशारों में पत्नी के पीछे, पत्नी नाच रही है पति के पीछे, माता पिता पुत्र के पीछे, पुत्र नाच रहे हैं धन के पीछे यानि

सब सुख के पीछे बंदर की तरह नाच रहे हैं। क्यों? अपने स्वरूप को भूले हुये हैं, ये अज्ञान है।

सत् चेतन को भूले रहकर मुग्ध हो रहे जड़ काया में।
ममता के वश हम मर्कटवत् (नाच रहे मन की माया में।।)2
(भोगी बनकर कष्ट उठाते)2 (जहां ज्ञान में देख न पाते।)2

अंत में- **जो अज्ञान विनाशक है,** जो हमारे अज्ञान को दूर कर ले वही हमारा गुरू है। हमारा अज्ञान बना रहे और करो हमारी पूजा वर्षों, क्या होगा? अज्ञान ही हमारे बंधनों का कारण है, दुख का कारण है। अज्ञान का मतलब क्या है- यह न भूल जाये। अज्ञान का मतलब हम गीता रामायण नहीं जानते ये अज्ञान नहीं है। अज्ञान का मतलब है- हम अपने को ही भूल जायें, अपने को बार-बार भूल जायें।

•

(संत पथिक जी के गुरूदेव)
(योगिराज श्री नागा निरंकारी जी महाराज)

आविर्भाव–गुरू नानकदेव के समकालीन सन्त
(विक्रम सम्वत–1526 से 1993)

''साधुवेश में एक पथिक''

आपके शरीर का जन्म कान्यकुब्ज ब्राह्मण कुल में भारद्वाज गोत्रीय त्रिवेदी परिवार में ग्राम बकेवर जिला फतेहपुर में हुआ था। आपके बचपन का नाम श्री गया प्रसाद त्रिवेदी था। बाल्यावस्था ननिहाल-साढ में व्यतीत हुई। वहीं पर कुछ शिक्षा प्राप्त की। आरम्भ से ही आपके हृदय में ग्रामीण देवी देवताओं के प्रति श्रद्धा जागृत थी। विश्वास था कि मंदिर में अथवा देवी देवताओं के दर्शन से विद्या प्राप्त होती है।

बाल्यावस्था से ही किसी उपदेश सुने बिना भगवान के नाम जप स्मरण में विश्वास था। आरम्भ से ही परमहंस अवधूत संत में श्रद्धा हो गई, जो नग्न ही घूमते थे। कोई वस्त्र थे। स्नान के पश्चात खाक लगा कर सुखाते थे, उसे विभूति कहते हैं।

पूर्व जन्म के संस्कारों से प्रेरित होकर भूमि भवन धन से वैराग्य हो गया और सब कुछ छोड़कर साधु वेश में विचरण करते हुए अनेकों कविताएं लिखी। एकान्त सेवी होने के कारण पद्य के साथ-साथ गद्य लिखना आरम्भ हुआ। चौंसठ पुस्तकें छपी, जिनमें **650** गीत हैं। व्याख्यान के प्रति और गीत गायन के प्रति श्रोताओं का आकर्षण बढ़ता ही गया।

मान प्रतिष्ठा तथा पूजा भेंट से सदा विरक्त रहकर विचरण करते हुए व्याख्यात्मिक विचारों का समाजव्यापी प्रसार बढ़ाया गया। विचारों की प्रधानतासे विचरक समुदाय की वृद्धि होती गई। परमहंस सद्गुरूदेव की आप पर बहुत कृपा थी। आरम्भ से आप ब्रह्मचारी नाम से प्रसिद्ध थे फिर पलक निधि नाम गुरुदेव द्वारा दिया गया। बाद में आपके लेख कल्याण में छपे तो लेखक 'साधु वेश में एक पथिक' नाम से प्रख्यात हुए। पथिकोद्गार गीतों का संग्रह है जो चार भागों में प्रकाशित है।

- : पुस्तक प्राप्ति स्थल : -

डॉ. जे. एल. सूरी, 28 विधान सभा मार्ग, लखनऊ

मोबाइल : 9415062640

प्रकाशक : श्रीमती नीलम अग्रवाल- राकेश अग्रवाल (आस्ट्रेलिया)

- : बैंक खाता विवरण : -

पथिक अखिल भारतीय दातव्य चिकित्सा सेवा समिति

पंजाब नैशनल बैंक, लखनऊ

खाता संख्या : 2405000100145152

IFSC : PUNB0185600

SCAN & PAY USING ANY BHIM UPI APP

जो श्रद्धालु जन वेबसाइट पर इस पुस्तक तथा अन्य साहित्य को देखना पढ़ना चाहते हैं तो कृपया

"Website : web.www.shri swami pathik ji maharaj.com"

का उपयोग कर सकते हैं।